



ललितपुर

कलाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना

उदयपुरा ग्राम पंचायत

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
उत्तर प्रदेश सरकार





कलाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना



उदयपुरा ग्राम पंचायत

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
उत्तर प्रदेश सरकार



प्रकाशन

पर्यावरण निदेशालय, उत्तर प्रदेश (डीओई) (DOE) एवं उत्तर प्रदेश जलवायु परिवर्तन प्राधिकरण
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार
Email: doeuplko@yahoo.com; Website: www.upenv.upsdc.gov.in

तकनीकी सहयोग

वसुधा फाउंडेशन
गोरखपुर एनवायर्नमेंटल एक्शन ग्रुप (GEAG)

मार्गदर्शन

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार
श्री मनोज सिंह, आईएएस, अपर मुख्य सचिव
श्री आशीष तिवारी, आईएफएस, सचिव

जिला प्रशासन

श्री अक्षय त्रिपाठी, आईएएस, जिलाधिकारी, ललितपुर
श्री कमला कान्त पाण्डेय, पीडीएस, मुख्य विकास अधिकारी (सीडीओ), ललितपुर

वसुधा फाउंडेशन

श्री श्रीनिवास कृष्णास्वामी, सीईओ
श्री रमन मेहता, कार्यक्रम निदेशक
डॉ. एस. सतपथी, विशेषज्ञ परामर्शदाता

गोरखपुर एनवायर्नमेंटल एक्शन ग्रुप (GEAG)

डॉ. शिराज वजीह, अध्यक्ष

लेखक

वसुधा फाउंडेशन

सुश्री कृति लूथरा, सुश्री वसुन्धरा सिंह, सुश्री शिविका सोलंकी, सुश्री रिनी दत्त

गोरखपुर एनवायर्नमेंटल एक्शन ग्रुप (GEAG)

श्री विजय कुमार पांडे एवं श्री के. के. सिंह

शोध समर्थन

वसुधा फाउंडेशन

डॉ. प्रीति सिंह, श्री नवीन कुमार, सुश्री मोनिका चक्रवर्ती, सुश्री फातिमा सैला

उदयपुरा ग्राम पंचायत

श्री रामरतन यादव, ग्राम प्रधान

क्षेत्रीय शोध समर्थन

साई ज्योति संस्थान

श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, श्री रवीन्द्र कुमार, श्री जोगिन्द्र सिंह, श्री भगवान सिंह

डिज़ाइन एवं लेआउट

वसुधा फाउंडेशन

श्री नरेश मेहरा, श्री संतोष कुमार सिंह, श्री रोहिन कुमार, सुश्री स्वाति बंसल, सुश्री प्रिया कालिया



श्री अक्षय त्रिपाठी
(आई.ए.एस.)



जिलाधिकारी, ललितपुर
उत्तर प्रदेश

दिनांक :- 13-07-2024

--:संदेश:-

ग्राम पंचायतों को जलवायु सजग ग्राम पंचायत बनाने हेतु समर्पित क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत- उदयपुरा, विकास खण्ड-बार, जनपद ललितपुर की कार्ययोजना हेतु संदेश लिखते हुए मुझे बहुत सम्मान अनुभव हो रहा है, जैसा कि हम जलवायु के परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों को देख रहे हैं, हमारे लिए जमीनी स्तर पर तत्काल और व्यापक कार्यवाही किये जाने की आवश्यकता है। हमारी ग्राम पंचायतें समुदाय के निकटतम शासन की एक आवश्यक इकाई होने के कारण जलवायु संबंधी चुनौतियों को कम करने और सतत् विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। हमारे समुदाय, हमारी परिस्थितिकी तंत्र और हमारी अर्थ व्यवस्था आपस में जुड़े हैं और हमारे लिए एक ऐसी रणनीतियों को अपनाना आवश्यक है जो जलवायु से जुड़े जोखिमों को कम करती हो।

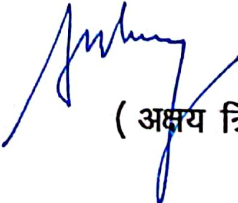
ग्राम पंचायतों हेतु तैयार यह कार्ययोजना जलवायु पर कार्य करने के लिए प्रतिबद्धता है जो पंचायतों को क्लाइमेट स्मार्ट पंचायत बनाने के लिए एक मार्ग दर्शक के रूप में कार्य करेगी।

ग्राम पंचायतों हेतु तैयार यह कार्ययोजना जलवायु पर कार्य करने के लिए प्रतिबद्धता है जो पंचायतों को क्लाइमेट स्मार्ट पंचायत बनाने के लिए एक मार्ग दर्शक के रूप में कार्य करेगी।

मैं इस क्लाइमेट स्मार्ट कार्ययोजना निर्माण के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तर प्रदेश तकनीकी सहयोगी वसुधा फाउंडेशन नई दिल्ली, स्थानीय सहयोगी संस्था गोरखपुर एनवायरमेंट एक्शन ग्रुप (जी.ई.ए.जी.) गोरखपुर को धन्यवाद करता हूँ और आशा करता हूँ कि निर्मित कार्ययोजना ग्राम पंचायत को क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत बनाने में सहयोगी होगी।

॥ शुभकामनाओं सहित ॥

भवदीय


(अक्षय त्रिपाठी)

श्री कमला कान्त पाण्डेय
(पी0डी0एस0)



मुख्य विकास अधिकारी
जनपद- ललितपुर,
उत्तर प्रदेश
दिनांक:- 13-07-2024

:: संदेश ::

मैं क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत- उदयपुरा, विकास खण्ड-बार, जनपद ललितपुर की कार्ययोजना विकसित करने में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तर प्रदेश, तकनीकी सहयोगी वसुधा फाउंडेशन नई दिल्ली स्थानीय सहयोगी संस्था गोरखपुर एनवायरमेंट एक्शन ग्रुप (जी.ई.ए.जी.) गोरखपुर उत्तर प्रदेश के समर्पित प्रयासों के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

जिस प्रकार हम और हमारी ग्राम पंचायतें जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर रही हैं उसमें यह कार्ययोजना सहयोगी होगी। स्मार्ट और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देकर हमारा लक्ष्य एक ऐसे मॉडल तैयार करना है जो न केवल हमारी पर्यावरण की रक्षा करे बल्कि समुदाय के समग्र कल्याण को भी बढ़ाये।

यह कार्ययोजना ग्राम पंचायतों में संवाद, सहयोग और क्रियान्वयन को प्रेरित करे। साथ मिलकर हम प्रभावी जलवायु नीतियों को लागू कर सकते हैं, स्थायी लक्ष्यों को अपना सकते हैं और एक ऐसे भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल पर्यावरणीय रूप से मजबूत हो बल्कि समाजिक रूप से भी न्याय संगत हो।

एक बार फिर क्लाइमेट कार्य योजना तैयार करने में अमूल्य योगदान के लिये आप सभी को धन्यवाद। हम योजना के सफल कार्यान्वयन और समुदाय एवं पर्यावरण पर इसके सकारात्मक प्रभाव की आशा करता हूँ।

॥ शुभकामनाओं सहित ॥

भवदीय

(कमला कान्त पाण्डेय)

॥ जय कामतानाथ ॥

कार्यालय ग्राम पंचायत उदयपुरा

विकास खण्ड बार, जिला-ललितपुर(उ.प्र.)

ग्राम प्रधान

रामरतन यादव

निवास-ग्राम-उदयपुरा
ब्लाक बार, (तहसील महरौनी)
जिला- ललितपुर(उ. प्र.)
मोबा.: -8127288114, 8127737469

पतांक

ग्राम प्रधान

ग्राम पंचायत उदयपुरा, विकास खण्ड- बार,
जनपद- ललितपुर

आभार



दिनांक..... 04/07/2024

सर्वप्रथम आप सभी को प्रधान ग्राम पंचायत उदयपुरा जनपद ललितपुर की ओर से सादर नमस्कार और अभिनंदन मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी स्वस्थ होंगे मैं अपनी ग्राम पंचायत को क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत बनाने की ओर बढ़ाये गये प्रथम कदम प्रयास को आपसे साझा करते हुए रोमांचित हूँ।

जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियां हर दिन अधिक स्पष्ट होती जा रही हैं और हमारे समुदाय और भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए उन पर कार्य करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। इस विषय की गम्भीरता को समझते हुए सभी ग्रामवासियों की सर्वसहमति से हमने अपनी ग्राम पंचायत को क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत बनाने की प्रक्रिया को प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम आवश्यक था ग्राम पंचायत में जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी समस्याओं और मुद्दों की पहचान करना जिसके लिए समुदायिक सहभागिता के साथ साथ ग्राम सभा की बैठक एवं समूह केन्द्रित चर्चा के आयोजन के अतिरिक्त व्यक्तिगत चर्चा की गयी और आंकड़ों को एकत्र किया गया। आंकड़े एकत्र करने की प्रक्रिया को पंचायत में कियान्वित करने के लिए मैं स्थानीय सहयोगी संस्था गोरखपुर इनवायरमेंट एक्शन ग्रुप (जी. ई. ए. जी.) गोरखपुर का तथा आंकड़े एकत्र करने में हमारे सभी ग्रामवासियों के समर्थन और सक्रिय भागीदारी के लिए हृदय से धन्यवाद। हम सभी साथ मिलकर हमारी पंचायत में एक पर्यावरण अनुकूल वातावरण बनाएंगे जो न केवल हमारे प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करेगा अपितु प्रत्येक ग्रामीण के जीवन की समस्त गुणवत्ता को भी बढ़ायेगा।

इसके साथ ही पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग उत्तर प्रदेश और तकनीकी सहयोगी पार्टनर वसुधा फाउंडेशन नई दिल्ली का भी आभारी हूँ। जिन्होंने एकत्र किये गए आंकड़ों को कार्ययोजना का स्वरूप दिया तथा मार्गदर्शन एवं तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

मैं सभी ग्रामवासियों से अपनी पंचायत को क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत बनाने के लिए हाथ मिलाकर आगे बढ़ने का आग्रह करता हूँ। आइए हम सभी एक सकारात्मक बदलाव की ओर आगे बढ़ें और दूसरों के लिए उदाहरण स्थापित करें।

धन्यवाद

प्रधान
ग्राम पंचायत उदयपुरा



विषय-वस्तु

1	कार्यकारी सारांश	1
2	ग्राम पंचायत प्रोफ़ाइल	4
	▪ उदयपुरा ग्राम पंचायत एक दृष्टि में	4
	▪ जलवायु परिवर्तनशीलता प्रोफ़ाइल	5
	▪ प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ	6
	▪ कार्यरत महिलाएं	7
	▪ कृषि	7
	▪ प्राकृतिक संसाधन	8
	▪ उदयपुरा में सुविधाएं	9
3	कार्बन फुटप्रिंट	10
4	व्यापक मुद्दे	11
5	प्रस्तावित मुद्दाव	12
	1. जल निकायों का प्रबंधन और कायाकल्प	13
	2. सतत कृषि	18
	3. हरित स्थानों और जैवविविधता को बढ़ाना	24
	4. सतत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन	28
	5. स्वच्छ, सतत, किफ़ायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुँच	33
	6. सतत और उन्नत गतिशीलता	43
	7. आजीविका और हरित उद्यमशीलता को बढ़ाना	47
6	विचारार्थ अतिरिक्त संस्तुतियों की सूची	51
7	अनुकूलन, सह-लाभ और सतत विकास लक्ष्यों से जुड़ाव	57
8	आगे की राह	64
9	अनुलग्नक	65

चित्र

चित्र 1	: उदयपुरा ग्राम पंचायत, ललितपुर ज़िले का भूमि-उपयोग मानचित्र	5
चित्र 2	: उदयपुरा में वार्षिक औसत अधिकतम और न्यूनतम तापमान, 1990-2019	6
चित्र 3	: उदयपुरा में वार्षिक वर्षा (मिमी), 1990- 2019	6
चित्र 4	: उदयपुरा में परिवारों की आय के स्रोत	6
चित्र 5	: उदयपुरा में वार्षिक आय के आधार पर परिवारों का वितरण	6
चित्र 6	: उदयपुरा में राशन कार्ड वाले परिवार	6
चित्र 7	: उदयपुरा में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं की संख्या	7
चित्र 8	: उदयपुरा में केवल कृषि पर निर्भर परिवार	7
चित्र 9	: उदयपुरा में सकल फ़सल क्षेत्र का फ़सलवार वितरण	7
चित्र 10	: 2022 में उदयपुरा में विभिन्न गतिविधियों का कार्बन फ़ुटप्रिंट	10
चित्र 11	: 2022 में उदयपुरा के कार्बन फ़ुटप्रिंट में क्षेत्रों की हिस्सेदारी	10



कार्यकारी सारांश

ललितपुर जिले की उदयपुरा ग्राम पंचायत उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड कृषि-जलवायु क्षेत्र में स्थित है। उदयपुरा की जलवायु स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना, ग्राम पंचायत (GP) स्तर पर जलवायु संबंधी कार्यवाही को मजबूत करने और 2035 तक इसे जलवायु स्मार्ट/लचीला बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है। कार्ययोजना ग्राम पंचायत को एक दिशा प्रदान करती है जो लचीला बनाने, अनुकूलन क्षमता बढ़ाने, कमजोरियों और संबंधित जोखिमों को कम करने के साथ-साथ ग्रीनहाउस गैस के उत्सर्जन को कम करने में सहायता करती है, साथ ही, अतिरिक्त राजस्व सृजन, समग्र सामाजिक-आर्थिक विकास, बेहतर स्वास्थ्य और प्राकृतिक संसाधन के प्रबंधन जैसे अन्य सह-लाभ भी प्राप्त होते हैं।

यह कार्ययोजना, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजनाओं के विकास के लिए तैयार किए गए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) के मसौदे को अपनाकर तैयार की गई है। उदयपुरा के लिए क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना (CSGPAP) को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि इसे उदयपुरा ग्राम पंचायत की मौजूदा ग्राम पंचायत विकास योजना (GPD) के साथ आसानी से और प्रभावी रूप से जोड़ा जा सके।

कार्ययोजना प्रमुख जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक पहलुओं, बुंदेलखंड कृषि-जलवायु क्षेत्र से संबंधित प्रमुख मुद्दों, जलवायु परिवर्तनशीलता, ग्राम पंचायत के कार्बन फुटप्रिंट विश्लेषण और प्राकृतिक संसाधनों की वर्तमान स्थिति से संबंधित प्रमुख मुद्दों को शामिल करती है। कार्ययोजना में क्षेत्रीय सर्वेक्षणों, समूह केन्द्रित चर्चाओं और संबंधित सरकारी विभागों और एजेंसियों के माध्यम से एकत्र किए गए उदयपुरा ग्राम पंचायत के समुदाय के सदस्यों के सुझावों को भी शामिल किया गया है। इससे आधार बनाने और उदयपुरा के प्रमुख मुद्दों की पहचान करने में मदद मिली।

जैसा कि क्षेत्रीय सर्वेक्षणों के दौरान बताया गया है, ग्राम पंचायत में दो राजस्व गांव और दो मजरे और 712 घर हैं जिनकी कुल जनसंख्या

दृष्टिकोण

प्राथमिक सर्वेक्षण टूल तैयार करना

सर्वेक्षण और प्राथमिक डेटा संग्रह: ग्राम प्रधान और समुदाय के सदस्यों के सहयोग तथा ग्रामीण सहभागी आंकलन (PRA) तकनीक, जिसमें समूह केन्द्रित चर्चा (FGD), गाँव का भ्रमण, सामाजिक एवं संसाधन मानचित्रण आदि सम्मिलित है, द्वारा सर्वेक्षण का कार्य किया गया।

डेटा विश्लेषण एवं योजना विकास

- जीपी प्रोफ़ाइल का विकास: सर्वेक्षण प्रश्नावली पर प्राप्त प्रतिक्रियाओं के आधार पर एक विस्तृत जीपी प्रोफ़ाइल विकसित की गई थी। इस प्रोफ़ाइल में उदयपुरा की जनसांख्यिकी, जलवायु परिवर्तनशीलता, प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ, प्राकृतिक संसाधन और सुविधाएं शामिल हैं।
- प्रमुख मुद्दों की पहचान: सर्वेक्षण प्रश्नावली और एचआरवीसीए में प्राप्त प्रतिक्रियाओं के माध्यम से प्रमुख विकाससात्मक और पर्यावरणीय मुद्दों की एक विस्तृत सूची की पहचान की गई।
- कार्बन फुटप्रिंट का अनुमान: उदयपुरा में प्रमुख गतिविधियों* के लिए कार्बन फुटप्रिंट का अनुमान लगाया गया।
- प्रस्तावित सुझाव/संस्तुतियाँ चिन्हित पर्यावरणीय और जलवायु मुद्दों के आधार पर उदयपुरा के लिए सुझाव तैयार किए गए। इन सुझावों में बुन्देलखण्ड क्षेत्र की मौजूदा कृषि-जलवायु विशेषताओं को भी ध्यान में रखा गया है। इसके अतिरिक्त, उदयपुरा की क्षेत्र-वार अनुकूलन आवश्यकताओं और शमन क्षमता का निर्धारण किया गया है।

कार्ययोजना के विकास के दौरान सहभागी दृष्टिकोण अपनाया गया। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय स्तर पर स्वामित्व और जवाबदेही की भावना को बढ़ावा देने के साथ-साथ जलवायु नेतृत्व के लिए समुदाय की क्षमता में वृद्धि होगी।

* गतिविधियाँ में शामिल हैं- बिजली की खपत, आवासीय खाना पकाना, डीजल पंप के इस्तेमाल से उत्पन्न उत्सर्जन, परिवहन, फसलों के अवशेष को जलाना, पशुधन उत्सर्जन, उर्वरक उत्सर्जन, धान की खेती और घरेलू अपशिष्ट जल।

1 ग्राम पंचायत कार्ययोजना में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, शमन और गंभीर जोखिम भेद्यता और क्षमता मूल्यांकन (HRVCA) के पहलू शामिल हैं।

2 कुल जनसंख्या: 5,628, सर्वेक्षण (DoEFCC, उत्तर प्रदेश)

6,256 है। मुख्य आर्थिक गतिविधियों में कृषि और पशुपालन शामिल हैं। एक आधारभूत आकलन से पता चलता है कि उदयपुरा ग्राम पंचायत में ~2,365 tCO₂e कार्बन फुटप्रिंट है।³

उदयपुरा ग्राम पंचायत में तत्काल कार्यवाही के लिए पहचाने गए कुछ प्राथमिक क्षेत्र इस प्रकार हैं:

- वृक्षारोपण गतिविधियों के माध्यम से जल निकायों का कायाकल्प और मरम्मत और पाइप जलापूर्ति के कवरेज को बढ़ाना
- फसलों की सूक्ष्म सिंचाई और सूखा प्रतिरोध किस्मों को बढ़ावा देकर टिकाऊ और सूखा प्रतिरोधी खेती प्रथाओं को मजबूत करना
- घर में खाना पकाने के क्षेत्र में पारंपरिक ईंधन पर निर्भरता कम करना और रसोई गैस (LPG) कवरेज बढ़ाने के साथ-साथ खाना पकाने के स्वच्छ ऊर्जा विकल्प प्रस्तुत करना
- नवीकरणीय ऊर्जा (RE) और ऊर्जा दक्षता समाधानों का उपयोग करना, जैसे कि सोलर रूफटॉप स्थापित करना, सौर-संचालित पंप, तथा घरों और सार्वजनिक उपयोगिताओं में ऊर्जा कुशल फिक्चर्स आदि।

संवेदनशील क्षेत्रों, समूह केंद्रित चर्चाओं, क्षेत्र सर्वेक्षणों और ग्राम पंचायत में चल रही गतिविधियों से उभरकर आने वाले मुद्दों को ध्यान में रखते हुए, अनुशंसाएं प्रस्तावित की गई हैं। अनुशंसाओं में कृषि, जल, स्वच्छ ऊर्जा, हरित स्थानों को बढ़ाना, टिकाऊ अपशिष्ट प्रबंधन, सतत गतिशीलता और उन्नत आजीविका और हरित उद्यमिता के विषयगत क्षेत्रों को शामिल किया गया है।

इन अनुशंसाओं के अंतर्गत गतिविधियों को 3 चरणों में विभाजित किया गया है - पहला चरण (2024-2027), दूसरा चरण (2027-2030) और तीसरा चरण (2030-2035)। चरण-वार लक्ष्यों को ग्राम पंचायतों के विवेक के अनुसार आगे वार्षिक लक्ष्यों में विभाजित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, चरण-वार लक्ष्य, संभावित लागत, केंद्रीय और राज्य योजनाओं का समर्थन करने के साथ-साथ सुझाई गई गतिविधियों के लिए वित्तपोषण के रास्ते भी बताए गए हैं।

उदयपुरा के लिए क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना (सीएसजीपीएपी) को इस तरीके से तैयार किया गया है कि इसे उदयपुरा ग्राम पंचायत की मौजूदा ग्राम पंचायत विकास योजना (जीपीडीपी) के साथ आसानी से और प्रभावी रूप से जोड़ा जा सके।

क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना सीएसजीपीएपी निम्नलिखित द्वारा उदयपुरा जीपीडीपी को पूरक और संपूरित करेगी:

- a. जलवायु परिप्रेक्ष्य के साथ मौजूदा विकास पहलों और गतिविधियों को व्यापक आधार देना।
- b. जीपीडीपी में प्रस्तावित विकास गतिविधियों के साथ जलवायु परिवर्तन पर चल रहे राष्ट्रीय और राज्य कार्यक्रमों का समन्वय करना।

इस कार्य योजना में हस्तक्षेप और वार्षिक लक्ष्यों को उदयपुरा जीपीडीपी की योजनाबद्ध गतिविधियों के साथ जोड़ते हुए लागू किया जा सकता है। जीपीडीपी के अंतर्गत कुछ कार्यक्रमों के लिए निर्धारित मौजूदा आवंटित बजट का उपयोग इस योजना में प्रस्तावित जलवायु अनुकूलन और शमन गतिविधियों के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) जैसी योजनाओं के माध्यम से किए गए जल निकाय कायाकल्प से जलवायु परिवर्तन अनुकूलन के लाभ भी होंगे। इसी प्रकार, ग्यारहवीं अनुसूची (जीपीडीपी के आधार) के 'गैर-पारंपरिक ऊर्जा' विषय के अंतर्गत निर्धारित धनराशि का इस्तेमाल नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

इस योजना के कार्यान्वयन के माध्यम से कम होने वाले कुल उत्सर्जन की मात्रा प्रति वर्ष 3,354 टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य (tCO₂e प्रति वर्ष) से अधिक होने का अनुमान है, तथा अगले 20-25 वर्षों में पृथक्करण क्षमता 5,83,000 tCO₂ तक बढ़ सकती है। तीन चरणों में इस योजना के कार्यान्वयन के लिए अनुमानित कुल लागत लगभग 55 करोड़ (11 वर्षों में) है जिसमें सामुदायिक निवेश, सार्वजनिक वित्त, निजी वित्त और संभावित सीएसआर फंडिंग शामिल हैं। इसमें से, 30-35 प्रतिशत (लगभग ~19 करोड़) आवश्यक धन केंद्र और राज्य योजनाओं/मिशन/कार्यक्रमों से प्राप्त किया जा सकता है, जबकि शेष लागत सीएसआर और निजी निधियों से प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, उदयपुरा ग्राम पंचायत, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग और बजाज फाउंडेशन के बीच पंचायत-निजी-भागीदारी (पीपीपी) समझौता ग्राम पंचायत में सीएसआर समर्थन का मार्ग प्रशस्त करता है।

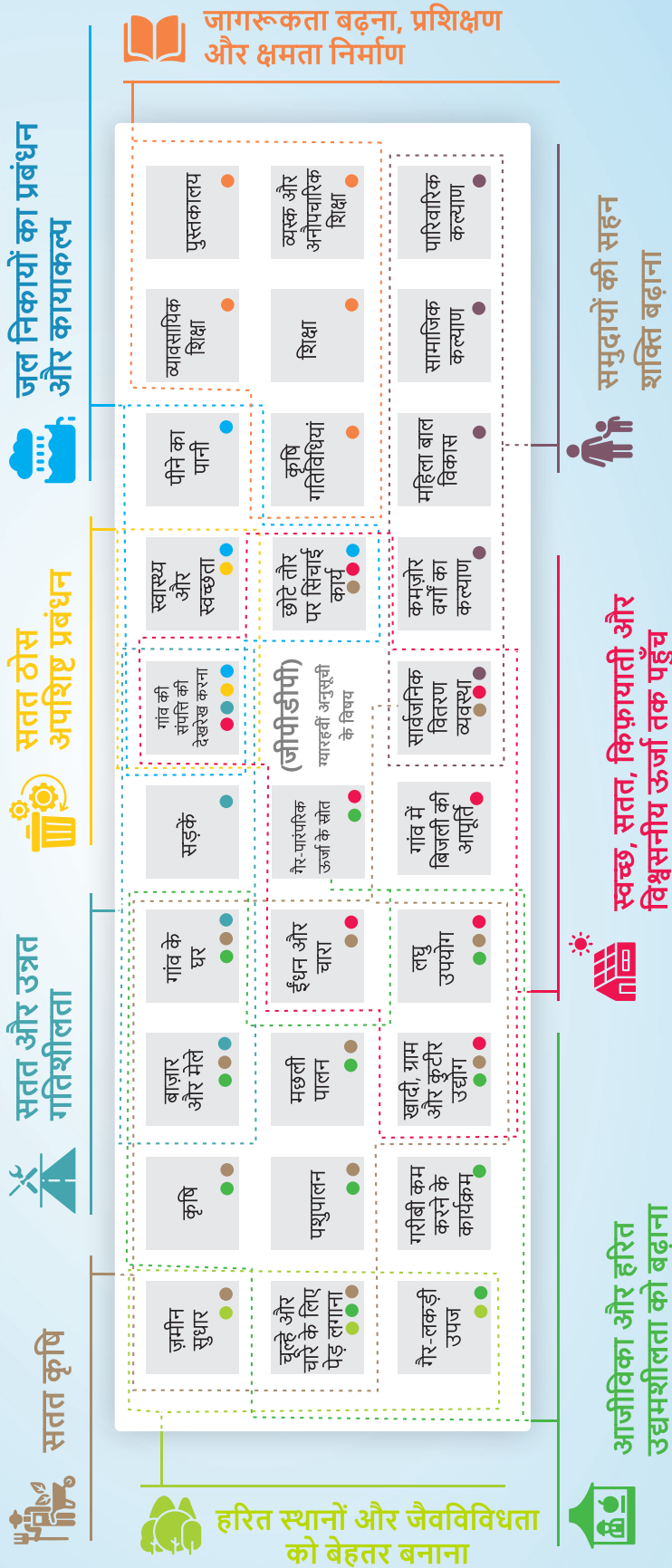
3 इसमें ग्राम पंचायत के भीतर बिजली की खपत के कारण होने वाले उत्सर्जन का दायरा (स्कोप) 2 शामिल है (UPPCL से प्राप्त आंकड़े और CEA से ग्रिड उत्सर्जन के कारक)

वर्ष 2035 तक क्लाइमेट स्मार्ट और सतत ग्राम पंचायत

जलवायु संबंधी गतिविधियों को विकास कार्यों में शामिल करना













क्लाइमेट स्मार्ट गतिविधियाँ



उदयपुरा

उदयपुरा ग्राम पंचायत एक दृष्टि में*

	स्थान	बार ब्लॉक, ललितपुर जिला
	कुल क्षेत्रफल⁴	1,495 हेक्टेयर
	संघटन	2 राजस्व गांव और 2 मजरे
	कुल जनसंख्या⁵	6,256
	पुरुषों की संख्या	3,412
	महिलाओं की संख्या	2,844
	कुल परिवार	712
	पंचायत अवसंरचना	5 - (पंचायत भवन, 3 प्राथमिक विद्यालय, जूनियर हाई स्कूल)
	प्राथमिक आर्थिक गतिविधि	कृषि
	जल संसाधन:	6 तालाब, 250 कुएं, उटारी नदी

भूमि उपयोग⁶

कृषि भूमि 1,410 हेक्टेयर

वन भूमि 11 हेक्टेयर



सार्वजनिक भूमि 47 हेक्टेयर

शेष भूमि 27 हेक्टेयर शेष भूमि (बस्तियां, जल निकाय आदि।)

कृषि-जलवायु क्षेत्र⁷

- बुंदेलखंड परिक्षेत्र
- जलवायु की स्थिति: कम वर्षा और उच्च तापमान के साथ अर्ध-शुष्क
- अधिकतम तापमान: 47.8 °C
- न्यूनतम तापमान: 3.0 °C
- औसत वार्षिक वर्षा-867 मिमी
- मिट्टी- चट्टानी और कम उपजाऊ मिट्टी, जो दलहन, तिलहन, मोटे अनाज और जौ और ज्वार जैसी सूखा प्रतिरोधी फसलों के लिए उपयुक्त है।
- भेद्यता: सूखे की संभावना



जिले का समग्र भेद्यता

बहुत अधिक

जिले की क्षेत्रीय भेद्यता⁸

- वन भेद्यता: बहुत अधिक
- ऊर्जा भेद्यता: अधिक
- कृषि भेद्यता: अधिक
- आपदा प्रबंधन भेद्यता: मध्यम
- स्वास्थ्य भेद्यता: मध्यम
- ग्रामीण भेद्यता-मध्यम
- जल भेद्यता: बहुत कम



* योजना को तैयार करने के लिए किए गए फ़ील्ड सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़े (फरवरी, 2023)

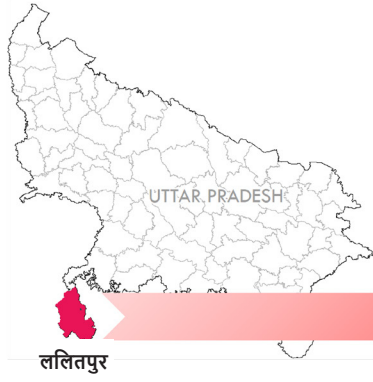
4 जैसा कि फ़ील्ड सर्वे में बताया गया है; भुवन के आंकड़े बताते हैं कि ग्राम पंचायत का क्षेत्रफल 1476 हेक्टेयर है। यहां पर उपलब्ध है: <https://bhuvanpanchayat.nrsc.gov.in/index.html>

5 जैसा कि फ़ील्ड सर्वेक्षण में बताया गया है; कुल जनसंख्या: 5,628, सर्वेक्षण (DoEFCC, जीओयूपी)

6 जैसा कि फ़ील्ड सर्वेक्षण में बताया गया है

7 उत्तर प्रदेश कृषि विभाग

8 उत्तर प्रदेश एसएपीसीसी 2.0



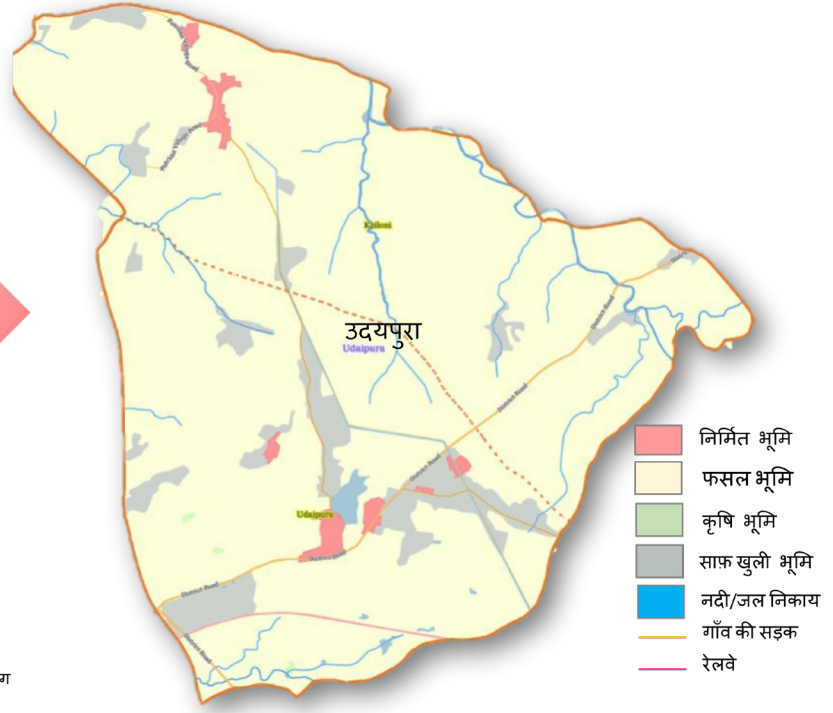
उदयपुरा ग्राम पंचायत

बार ब्लॉक

ललितपुर जिला

उत्तर प्रदेश राज्य

स्रोत: स्पेस बेस्ड इनफार्मेशन सपोर्ट फॉर डिसेंट्रलाइज्ड प्लानिंग
<https://bhuvan-panchayat3.nrsc.gov.in/>



चित्र 1: उदयपुरा ग्राम पंचायत, ललितपुर ज़िले का भूमि-उपयोग मानचित्र

जलवायु परिवर्तनशीलता प्रोफाइल

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी)⁹ से प्राप्त जलवायु परिवर्तनशीलता आंकड़ों (तापमान और वर्षा) से पता चलता है कि 2019 में वार्षिक औसत न्यूनतम तापमान 1990 की तुलना में 0.7°C अधिक था (चित्र 2 देखें)। उसी समय-सीमा के दौरान, वार्षिक वर्षा में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है, जिसका अर्थ है कि कम दिनों में अधिक तीव्र वर्षा (चित्र 3 देखें)। हालाँकि, आईएमडी आंकड़ें पंचायत स्तर पर तापमान परिवर्तनशीलता को सम्मिलित नहीं करते हैं और इसके अतिरिक्त, ऐसे दिन भी हैं जिनके लिए आंकड़ें उपलब्ध नहीं थे।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन की एक हालिया रिपोर्ट बताती है कि 1991 से 2023 के बीच एशिया समग्र रूप से, संपूर्ण विश्व की भूमि और महासागर औसत से अधिक तेजी से गर्म हुआ है और 2010-2020 के दशक में दक्षिण एशिया के बड़े हिस्से में गर्म दिनों में स्पष्ट वृद्धि हुई है।¹⁰ इसी प्रकार के निष्कर्षों की पुष्टि अंतः-सरकारी पैनल (IPCC)¹¹ और भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा भी की गई है।¹²

इसके अतिरिक्त, क्षेत्र सर्वेक्षण और समूह केंद्रित चर्चा से प्राप्त मौसम परिवर्तन पर समुदायों की धारणा से संज्ञान है कि 2010-2020 के दशक में, ग्राम पंचायत में गर्मियों के दिनों की संख्या में औसतन 25 दिनों की वृद्धि और सर्दियों के दिनों की संख्या में 20 दिनों की कमी देखी गई है। इसके अतिरिक्त, उनसे यह भी पता चला कि बारिश के दिनों की संख्या में भी लगभग 20 दिनों की कमी आई है।¹³

ग्राम पंचायत के लिए किए गए जलवायु परिवर्तनशीलता के विश्लेषण में जलवायु परिवर्तनशीलता के संतुलित दृष्टिकोण को सामने लाने के लिए भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के आंकड़ों एवं ए सामुदायिक धारणा दोनों को ध्यान में रखा गया।

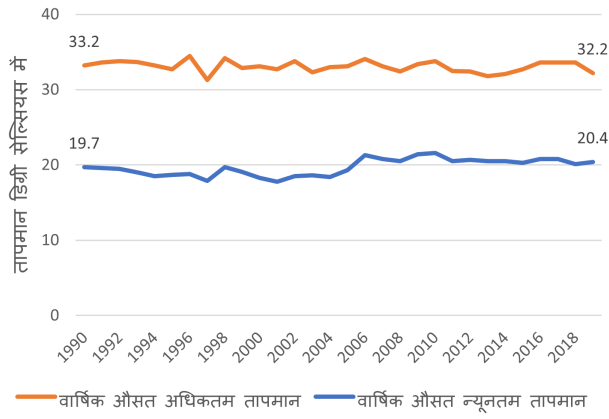
9 झांसी स्थित आईएमडी मौसम केंद्र से उदयपुरा के लिए दैनिक तापमान (अधिकतम और न्यूनतम) आंकड़ें और दैनिक वर्षा आंकड़ें लिए गए

10 एशिया में जलवायु की स्थिति 2023 (wmo.int)

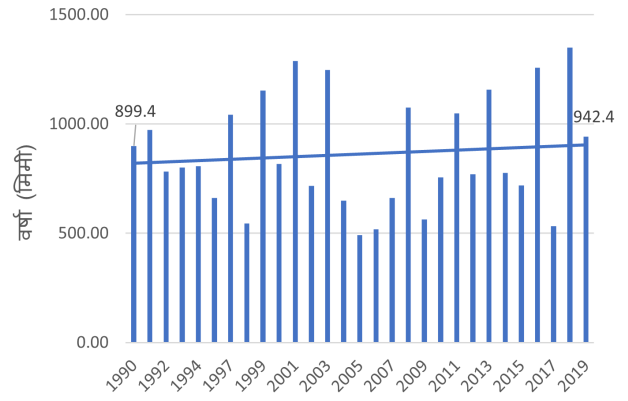
11 AR6 संश्लेषण रिपोर्ट: जलवायु परिवर्तन 2023 (ipcc.ch)

12 भारतीय क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन का आकलन: पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES), भारत सरकार की एक रिपोर्ट | SpringerLink

13 योजना को तैयार करने के लिए किए गए क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़े



चित्र 2: उदयपुरा में वार्षिक औसत अधिकतम और न्यूनतम तापमान, 1990-2019

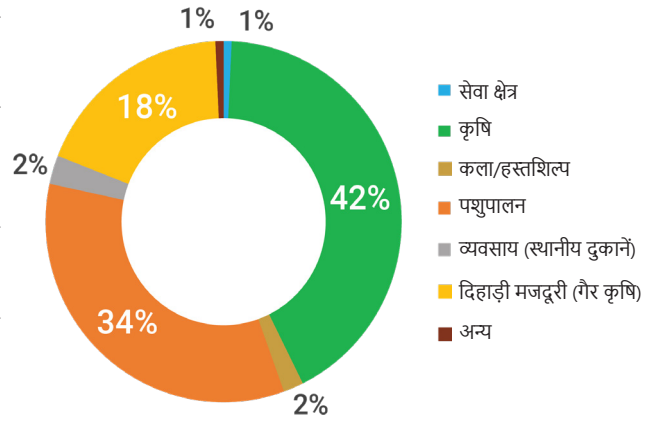


चित्र 3: उदयपुरा में वार्षिक वर्षा (मिमी), 1990- 2019

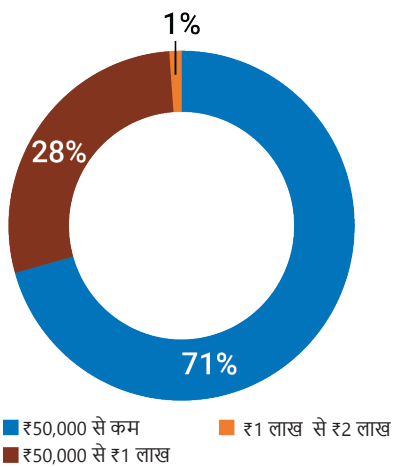
प्रमुख आर्थिक गतिविधियाँ

ग्राम पंचायत में अधिकांश परिवार अपनी आजीविका के लिए कृषि (42 प्रतिशत) पर निर्भर हैं। इसके बाद पशुपालन (34 प्रतिशत), मजदूरी (18 प्रतिशत) और स्थानीय व्यापार (2 प्रतिशत) आय के स्रोत हैं, जैसा कि चित्र 4 में दर्शाया गया है।

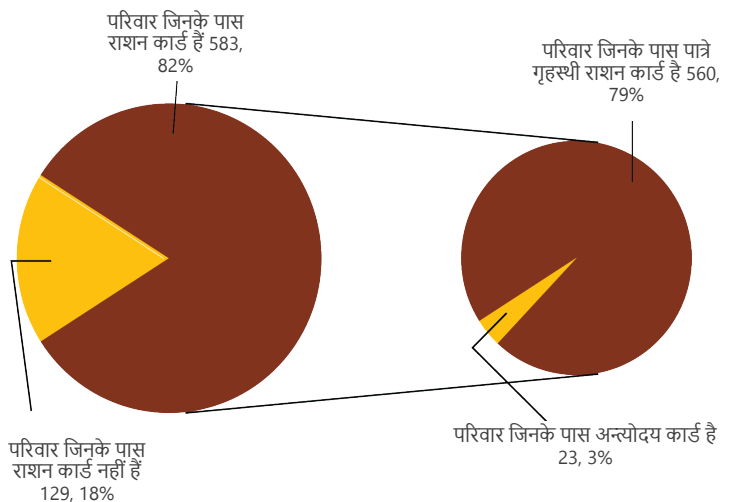
समूह केन्द्रित चर्चा से प्राप्त जानकारी से और घरेलू स्तर की आय के अनुमान से पता चलता है कि 71 प्रतिशत परिवार प्रति वर्ष ₹50,000 से कम कमाते हैं और 28 प्रतिशत परिवार ₹50,000 से ₹1 लाख के बीच कमाते हैं। केवल एक छोटा सा हिस्सा (1 प्रतिशत) परिवार ₹1 लाख से ₹2 लाख के बीच कमाते हैं (चित्र 5 देखें)। सर्वेक्षण के समय, 562 परिवार गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) थे यानी कुल परिवारों का ~ 79 प्रतिशत। राशन कार्ड के आंकड़ों से पता चलता है कि लगभग 82 प्रतिशत परिवार सार्वजनिक वितरण योजना का लाभ उठा रहे हैं और उनके पास राशन कार्ड हैं, इनमें से 23 परिवारों के पास अंत्योदय कार्ड हैं¹⁴ (चित्र 6 देखें)।



चित्र 4: उदयपुरा में परिवारों की आय के स्रोत



चित्र 5: उदयपुरा में वार्षिक आय के आधार पर परिवारों का वितरण

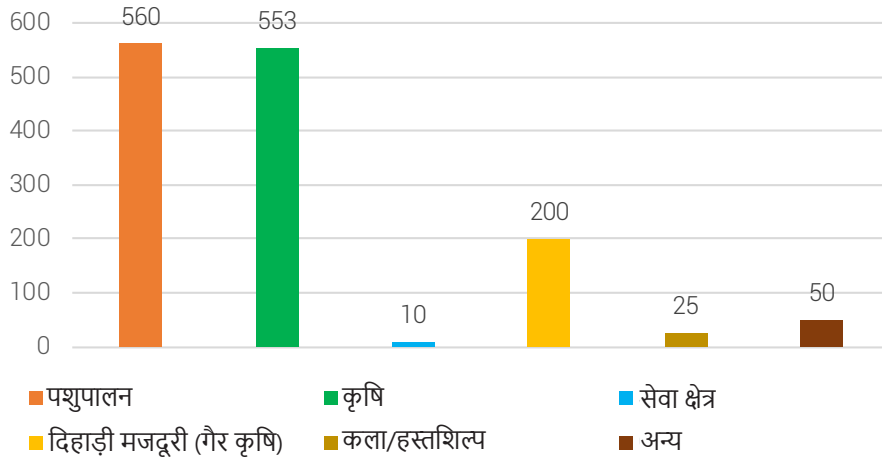


चित्र 6: उदयपुरा में राशन कार्ड वाले परिवार

14 राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा पोर्टल (https://nfsa.gov.in/portal/Ration_Card_State_Portals_AA)

कार्यरत महिलाएं

उदयपुरा में 1,398 कामकाजी महिलाएं हैं। वे ज्यादातर पशुपालन और उसके बाद कृषि में शामिल हैं (चित्र 7 देखें)। कुछ महिलाएं कला/हस्तशिल्प और सिलाई जैसी अन्य गतिविधियों में भी लगी हुई हैं। 53 महिला प्रधान परिवार¹⁵ हैं जो ग्राम पंचायत में कुल घरों का ~7 प्रतिशत हिस्सा हैं। इसके अतिरिक्त, 3 स्वयं सहायता समूह (SHG) हैं जो विभिन्न गतिविधियों जैसे सिलाई, मुर्गी पालन और सामुदायिक शौचालयों के रखरखाव में सम्मिलित हैं।

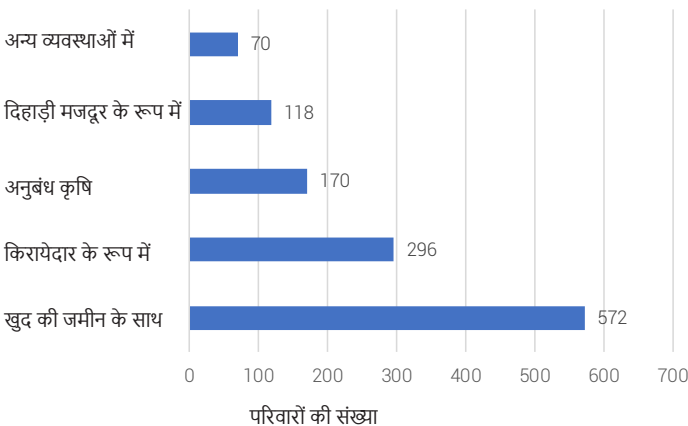


चित्र 7: उदयपुरा में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में संलग्न महिलाओं की संख्या

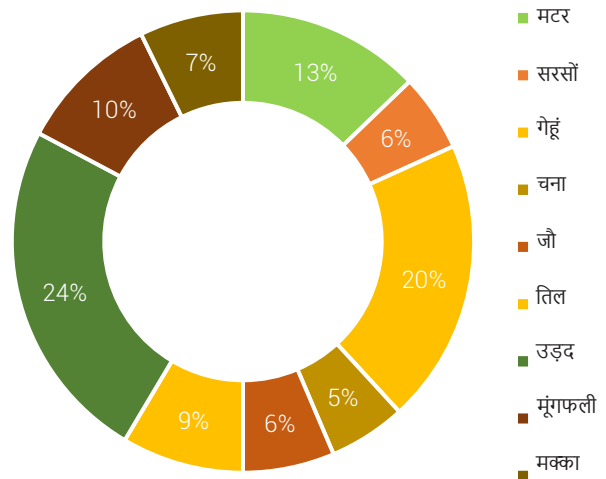
कृषि

ग्राम पंचायत में, 42 प्रतिशत परिवार अपनी आय के लिए कृषि पर निर्भर हैं जैसा कि चित्र 4 में देखा गया है। ये परिवार विभिन्न तरीकों से कृषि में लगे हुए हैं¹⁶ (चित्र 8 देखें)।

उदयपुरा में शुद्ध बुवाई क्षेत्रफल 1,410 हेक्टेयर है जबकि कुल फसली क्षेत्रफल 2,840 हेक्टेयर है। चित्र 9 ग्राम पंचायत में कुल फसली क्षेत्रफल का फसल-वार वितरण प्रदर्शित करता है। खरीफ की प्रमुख फसल उड़द (~3,400 किंटल), मूंगफली (~4,200 किंटल), मक्का (~2,295 किंटल) और तिल (~1,500 किंटल) है। रबी की प्रमुख फसलें गेहूं (~16,080 किंटल), सरसों (~560 किंटल), जौ (~4,950 किंटल), चना (~1,900 किंटल) और मटर (~4,500 किंटल) हैं।



चित्र 8: उदयपुरा में केवल कृषि पर निर्भर परिवार



चित्र 9: उदयपुरा में सकल फसल क्षेत्र का फसलवार वितरण

15 महिला-प्रधान परिवार वे परिवार होते हैं जहां महिलाएं एकमात्र/मुख्य कमाने वाली होती हैं।

16 ध्यान देने योग्य बात यह है कि कई परिवार एक से अधिक तरीकों से कृषि संबंधी कार्यों में लगे हुए हैं। उदाहरण के लिए, छोटी जमीन के मालिक भी बड़े खेतों पर दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, बड़ी भूमि के स्वामित्व वाले किसान भी अनुबंध खेती कर सकते हैं।

सिंचाई के मुख्य स्रोतों में नहरें, वर्षा जल और भूजल शामिल हैं। उटारी नहर ग्राम पंचायत के भीतर 3 किमी की दूरी तय करती है, जिससे 159 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई की सुविधा मिलती है। इसके अतिरिक्त, सिंचाई के लिए 300 डीजल पंप, 100 इलेक्ट्रिक पंप और एक सोलर पंप का उपयोग किया जाता है।

ग्राम पंचायत की लगभग 34 प्रतिशत आबादी पशुपालन में लगी हुई है। कुल पशुधन आबादी 1,400 (300 गाय, 800 भैंस, 300 बकरियां) के साथ-साथ 25 पोल्ट्री पक्षी हैं। ग्राम पंचायत में मत्स्य पालन का भी कार्य किया जाता है।

प्राकृतिक संसाधन

उटारी नदी उदयपुरा के पश्चिम से होकर बहती है जो उटारी नहर से जुड़ी है। 3 तालाब और 250 कुएं हैं¹⁷। ग्राम पंचायत के पास 47 बीघा सार्वजनिक जमीन भी है। इस ग्राम पंचायत में पाए जाने वाले सामान्य पेड़ आम, सागौन और बरगद हैं। उदयपुरा में कृषि वानिकी के रूप में वृक्षारोपण गतिविधियां आमतौर पर जुलाई के महीने में की जाती हैं, मौजूदा समय में, ये वृक्षारोपण कुल 2.8 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह वृक्षारोपण महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA) के माध्यम से किया गया है, जिसकी जीवित रहने की दर 15 प्रतिशत बताई गई है। इन बागानों में मुख्य रूप से सागौन, शीशम, नींबू करंज की खेती की जाती है। फ्रील्ड सर्वेक्षण के अनुसार, ग्राम पंचायत की सीमा में 11 हेक्टेयर वन भूमि है।

17 जैसा कि HRVCA में बताया गया है

उदयपुरा में सुविधाएं

बिजली और एलपीजी

- बिजली तक पहुंच: 100% घर
- एलपीजी कवरेज- 56% घर



पेयजल

- घरेलू उपयोग और ग्राम पंचायत स्तर की आपूर्ति हेतु पानी का मुख्य स्रोत: भूजल है
- घरों में पाइप से जलापूर्ति¹⁸: 100%
- 82 इंडिया मार्क हैड पंप



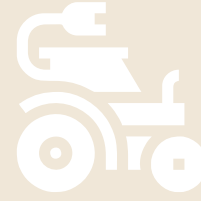
अपशिष्ट पदार्थ

- खुले में शौच से मुक्त (ODF) का दर्जा प्राप्त हुआ।
- घरेलू शौचालय का कवरेज: 93%



गतिशीलता और बाज़ार तक पहुंच

- राष्ट्रीय राजमार्ग (NH 44) - 30 किमी
- ग्राम पंचायत सीमा के भीतर निकटतम रेलवे स्टेशन
- निकटतम बस स्टेशन, बानपुर-15 किमी
- निकटतम डाकघर-0.3 किमी
- ब्लॉक विकास कार्यालय - 15 किमी
- निकटतम बैंक-7 किमी
- करीबी किसान मंडी: 15 किमी
- सरकारी राशन की दुकान-0.3 किमी



शिक्षा

- 3 प्राइमरी स्कूल - 0.3 किमी
- 1 जूनियर हाई स्कूल - 0.2 किमी
- डिग्री कॉलेज - 30 किमी

स्वास्थ्य

- स्वास्थ्य उप केंद्र-15 किमी
- जिला अस्पताल - 30 किमी

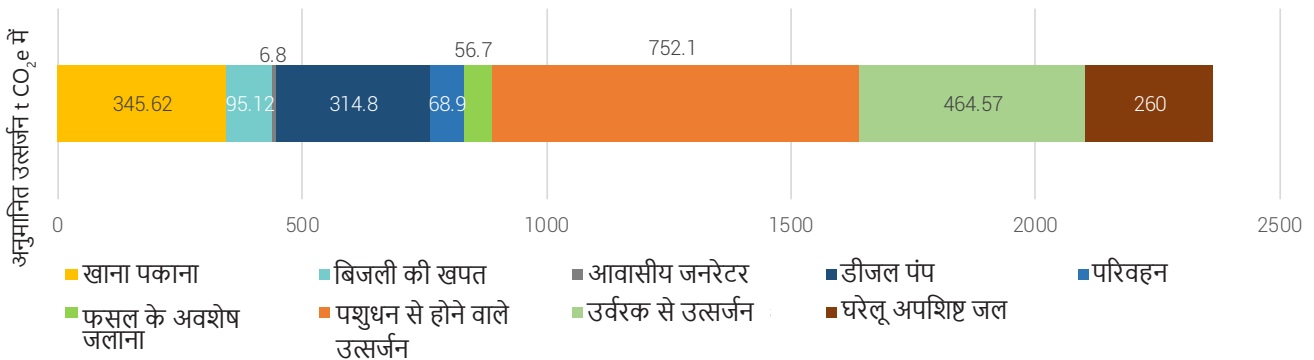


18 ग्राम प्रधान से प्राप्त जानकारी के अनुसार, पाइप जलापूर्ति का कार्य प्रगति पर है और 712 घरों को कनेक्शन मिल चुके हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों से कार्बन फुटप्रिंट (अर्थात, ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन) महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन इस अभ्यास का उद्देश्य ग्राम पंचायत की पूरी आधारभूत रेखा विकसित करना था। इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि इस योजना का उद्देश्य एक कार्बन शून्य ग्राम पंचायत नहीं, अपितु एक क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत विकसित करना है। हालांकि, प्रस्तावित गतिविधियों से उत्सर्जन में कमी के भी लाभ होंगे जो शायद ग्राम पंचायत को कार्बन न्यूट्रल या कार्बन नेगेटिव बना सकते हैं। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, इस अभ्यास में जीएचजी पूर्वानुमान सम्मिलित नहीं हैं।

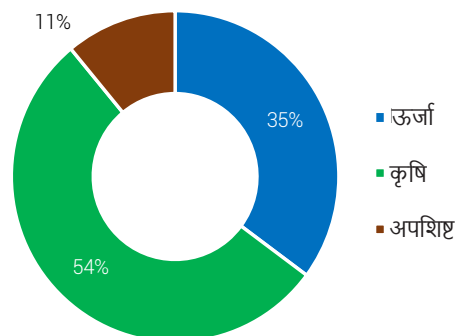
इसके अतिरिक्त, कार्बन फुटप्रिंट, LiFE मिशन के सिद्धांतों के अनुरूप सतत विकास को सुनिश्चित करने हेतु अनुशासित प्रदान करने में भी सहायता करता है। कुल मिलाकर, 2022 में, उदयपुरा ग्राम पंचायत ने विभिन्न गतिविधियों से 2,364.6 टन कार्बन डाइऑक्साइड समकक्ष (tCO₂e) उत्सर्जित किया (चित्र 10 देखें)।

कृषि, ऊर्जा और अपशिष्ट क्षेत्रों की गतिविधियों ने उदयपुरा के कार्बन फुटप्रिंट में योगदान दिया। कृषि क्षेत्र के उत्सर्जन में कृषि क्षेत्रों में उर्वरक का प्रयोग, पशुधन और खाद प्रबंधन से उत्सर्जन, तथा फसल अवशेष जलाने से होने वाले उत्सर्जन शामिल हैं। ऊर्जा क्षेत्र से होने वाला उत्सर्जन बिजली की खपत¹⁹, खाना पकाने के लिए ईंधन की लकड़ी और रसोई गैस (LPG) का उपयोग, सिंचाई के लिए डीजल पंपों का उपयोग, पावर बैकअप के लिए जनरेटर का उपयोग और परिवहन के विभिन्न साधनों में जीवाश्म ईंधन (पेट्रोल/डीजल) के उपयोग के कारण होता है। घरेलू अपशिष्ट जल से होने वाले उत्सर्जन को अपशिष्ट क्षेत्र में संलग्न किया गया है।



चित्र 10: 2022 में उदयपुरा में विभिन्न गतिविधियों का कार्बन फुटप्रिंट

कुल उत्सर्जन में कृषि क्षेत्र का योगदान लगभग 54 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में, पशुधन प्रमुख उत्सर्जक (752.1 tCO₂e) है, इसके बाद उर्वरक उत्सर्जन (464.57 tCO₂e) और फसल अवशेष को जलाना (56.7 tCO₂e) है। उदयपुरा के कुल उत्सर्जन में ऊर्जा क्षेत्र का योगदान लगभग 35 प्रतिशत है। ऊर्जा क्षेत्र में, घर में खाना पकाना प्रमुख उत्सर्जक (345.6 tCO₂e) है, इसके बाद डीजल पंप (314.8 tCO₂e) और बिजली की खपत (95.12 tCO₂e) का स्थान है। अपशिष्ट क्षेत्र कुल उत्सर्जन का 11 प्रतिशत है (चित्र 11 देखें)।



चित्र 11: 2022 में उदयपुरा के कार्बन फुटप्रिंट में क्षेत्रों की हिस्सेदारी

19 बिजली की खपत के कारण होने वाले उत्सर्जन को स्कोप 2 उत्सर्जन के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, क्योंकि बिजली उत्पादन के लिए ईंधन (कोयला) का दहन ग्राम पंचायत की सीमा के बाहर होता है

ग्राम पंचायत के व्यापक मुद्दों की पहचान ग्राम पंचायत के एकत्र किए आंकड़ों और पंचायत की एक बेसलाइन तैयार करने के लिए आंकड़ों के किए गए विश्लेषण, कृषि-जलवायु क्षेत्र की अंतर्निहित विशेषताओं, जिसमें ग्राम पंचायत स्थित है, के साथ-साथ क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान समुदाय के सदस्यों से प्राप्त जानकारी और समूह केन्द्रित चर्चा के आधार पर की गयी है। जहां भी संभव हो सका है, इस जानकारी की पुष्टि उपलब्ध सरकारी आंकड़ों/स्रोतों से की गई है। हालाँकि, कुछ मुद्दे पूरी तरह से समुदाय से प्राप्त जानकारी पर आधारित हैं क्योंकि इनके लिए ग्राम पंचायत स्तर के आंकड़ें पुष्टि के लिए उपलब्ध नहीं थे। ग्राम पंचायत में पहचाने गए मुद्दों को नीचे संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त, विस्तृत मुद्दों को संस्तुतियों अनुभाग के संबंधित विषयों में सूचीबद्ध किया गया है।

व्यापक मुद्दे:

- मौसम की अवधि में परिवर्तन और अनियमित वर्षा के कारण ग्राम पंचायत में अन्य प्रभावों के साथ-साथ फसलों की बुवाई का समय, कटाई का समय और सिंचाई की जरूरतें प्रभावित हो रही हैं
- ग्राम पंचायत में मई से अगस्त के महीनों में सूखे जैसी स्थिति रहती है, जिससे कृषि, पशुधन, जल उपलब्धता सहित अन्य पहलुओं पर असर पड़ता है
- खराब जल निकासी के कारण मानसून के मौसम में भी जलजमाव की समस्या का सामना करना पड़ता है
- अस्थायी कृषि और पशुपालन की पद्धतियाँ
- सीमित स्वच्छता एवं अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाएं
- जल निकायों का खराब रखरखाव
- आवासीय उपयोग, कृषि और परिवहन की आवश्यकताओं के लिए जीवाश्म ईंधन (पेट्रोल/डीजल) और पारंपरिक ईंधन पर निर्भरता
- जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के बारे में जानकारी का अभाव
- स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन पर केंद्र और राज्य सरकारों की विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता का अभाव

प्रत्येक विषयगत मुद्दे में कई सुझाव/संस्तुतियों को शामिल किया गया है, जिसमें शमन और अनुकूलन दोनों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो पिछले अनुभाग में पहचाने गए प्रमुख मुद्दों को संबोधित करता है। सुझावों/संस्तुतियों का वर्णन चरणबद्ध लक्ष्यों और लागत अनुमानों²⁰ (जहाँ तक संभव हो) के साथ किया गया है। लक्ष्यों को तीन चरणों में बांटा गया है: चरण-I (2024-25 से 2026-27); चरण-II (2027-28 से 2029-30); और चरण-III (2030-31 से 2034-35)।

प्रत्येक चरण के अंतर्गत लक्ष्यों को प्रभावी और निगरानीपूर्ण कार्यान्वयन सुनिश्चित करते हुए आगे वार्षिक लक्ष्यों (वर्ष-दर-वर्ष लक्ष्य) में विभाजित किया जा सकता है। साल-दर-साल लक्ष्य विकसित करने के प्रारूप को 'क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना के विकास के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP)' दस्तावेज़ से संदर्भ लेते हुए तैयार किया जा सकता है। मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) एक चरण-दर-चरण दृष्टिकोण है जिसका उपयोग ग्राम प्रधानों, समुदाय के सदस्यों या अन्य हितधारक द्वारा अपने संबंधित ग्राम पंचायतों हेतु जलवायु स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्य योजना विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

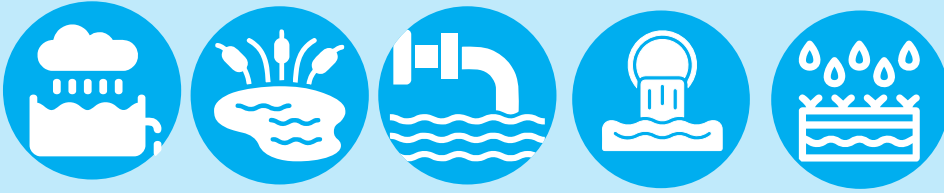
पहचाने गए वित्तपोषण के विकल्पों/तरीकों में केंद्रीय या राज्य योजनाएं, ग्राम पंचायत की विभिन्न टाइड और अनटाइड निधि या कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) हस्तक्षेप के माध्यम से निजी वित्त की पहचान की गई है। विस्तृत सुझाव/संस्तुतियाँ निम्नलिखित अनुभाग में हैं।

कार्ययोजना में सुझाव निम्नलिखित विषयों पर आधारित हैं:

1. जल निकायों का प्रबंधन और कायाकल्प
2. सतत कृषि
3. हरित स्थानों और जैवविविधता को बढ़ाना
4. सतत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन
5. स्वच्छ, सतत, किफ़ायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुँच
6. सतत और उन्नत गतिशीलता
7. आजीविका और हरित उद्यमशीलता को बढ़ाना

इसके अतिरिक्त, सुझावों का हिस्सा न बनाते हुए, पंचायतों द्वारा विचार के लिए संभावित प्रयासों की एक सूची बनाई गई है जो भारत के कुछ हिस्सों में सफलतापूर्वक कार्यान्वित की गई हैं और ग्राम पंचायत में भी दोहराई जा सकती हैं। हालांकि, इन प्रयासों को प्रदेश कि किसी योजनाओं या कार्यक्रमों में सम्मिलित नहीं किया गया है। इस कारण इन सुझावों के हेतु वित्त कि उपलब्धता समुदायों द्वारा अथवा सीएसआर व निजी स्रोतों के द्वारा की जा सकती है। इस कारण इन्हें मुख्य अनुशंसाओं में सम्मिलित नहीं किया गया है

20 लागत का अनुमान विभिन्न तरीकों के आधार पर लगाया गया है जैसे: ग्राम पंचायत के प्रमुख सदस्यों से प्राप्त जानकारी, या प्रासंगिक योजनाओं और नीतियों के अनुसार लागत का अनुमान, अथवा आवश्यक इनपुट की प्रति इकाई अनुमानित लागत अथवा विभिन्न विभागों की दरों की अनुसूचियाँ।



1. जल निकायों का प्रबंधन और कायाकल्प

संदर्भ एवं मुद्दे²¹

- उदयपुरा ग्राम पंचायत में कृषि और घरेलू दोनों जरूरतों के लिए पानी के प्राथमिक स्रोत भूजल पर निर्भर है। 2018 से 2022 के बीच जून से अक्टूबर के महीनों में लगातार सूखे की घटनाएं हुई हैं।
- ग्राम पंचायत में 250 कुएं हैं, जिनका उपयोग सिंचाई के लिए किया जा रहा है, लेकिन उनमें से अधिकांश गर्मी के मौसम में सूख जाते हैं। इसके अतिरिक्त, फ्रील्ड सर्वेक्षणों से पता चला है कि कुओं का खराब तरीके से रखरखाव किया जाता है और गाद, मलबे और कचरे से भरा जाता है। इसलिए, ग्राम पंचायत में स्थानीय जल संसाधनों को मजबूत करने की आवश्यकता है।
- उदयपुरा में जलजमाव एक और चिंता का विषय है, खराब जल निकासी नेटवर्क के कारण विशेष रूप से मानसून के मौसम में।
- ग्राम पंचायत के लगभग सभी घरों में पाइप से पानी के कनेक्शन हैं।

पिछले वर्षों में भूजल पर निर्भरता और सूखे की लगातार घटनाएं जल संरक्षण और भूजल संसाधनों की पुनःपूर्ति करने के लिए जल संसाधन प्रबंधन की तत्काल आवश्यकता को दर्शाती है। उदयपुरा में भेद्यता को कम करने, लचीलापन बनाने और जल सुरक्षा को बेहतर करने के लिए निम्नलिखित गतिविधियां प्रस्तावित हैं।

वर्षा जल संचयन (आरडब्ल्यूएच)

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	सभी सरकारी भवनों में आरडब्ल्यूएच संरचनाओं की स्थापना	<ol style="list-style-type: none"> 1,500 वर्ग फीट से अधिक के भूखंड वाले आवासीय भवनों में आरडब्ल्यूएच संरचना की स्थापना। सभी नए भवनों में आरडब्ल्यूएच के बुनियादी ढांचे का अनिवार्य रूप से निर्माण 	<ol style="list-style-type: none"> 1,000 वर्ग फीट से अधिक के भूखंड वाले पक्के आवासीय भवनों में आरडब्ल्यूएच संरचना की स्थापना। सभी नए भवनों में आरडब्ल्यूएच के बुनियादी ढांचे का अनिवार्य रूप से निर्माण

21 जैसा कि क्षेत्र के सर्वेक्षणों और FGD के दौरान समुदाय से समझा गया और संबंधित स्रोतों द्वारा इसकी पुष्टि की गई

लक्ष्य

सभी (100 प्रतिशत) सरकारी / सार्वजनिक भवनों (पंचायत भवन, 3 प्राथमिक विद्यालय, 1 जूनियर हाई स्कूल) में आरडब्ल्यूएच संरचना

1. 80 पक्के घरों में 10 m³ की औसत भंडारण क्षमता के साथ वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित करना
2. चरण II के दौरान निर्मित 100% नई इमारतों में आरडब्ल्यूएच संरचनाओं को सुनिश्चित करना

1. 159 पक्के घरों में 10 m³ की औसत भंडारण क्षमता वाली वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित की जाएगी
2. चरण III के दौरान निर्मित 100% नई इमारतों में आरडब्ल्यूएच संरचनाओं को सुनिश्चित करना

अनुमानित लागत

आरडब्ल्यूएच (10m³ क्षमता वाली 6 आरडब्ल्यूएच संरचनाएं): ₹2,10,000

कुल लागत : ₹2.1 लाख

आरडब्ल्यूएच: 80 यूनिट के लिए ₹28,00,000

कुल लागत: ₹28 लाख

आरडब्ल्यूएच:159 यूनिट के लिए ₹55,65,000

कुल लागत: ₹55.65 लाख रुपये



जल निकायों का रखरखाव

चरण



2024-25 से 2026-27

1. कुओं की सफाई और मरम्मत
2. हैंडपंप की रीबोरिंग
3. तालाबों का जीर्णोद्धार



2027-28 से 2029-30

जल निकायों का नियमित रखरखाव और सफाई



2030-31 से 2034-35

जल निकायों का समय-समय पर रखरखाव

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियां

1. 105 कुओं की सफाई और मरम्मत
2. ग्राम पंचायत में 15 हैंडपंपों की रीबोरिंग
3. 2 तालाबों की सफाई और डिसिल्टिंग (गाद निकालना)
4. 1000 आम और लुप्तप्राय पेड़ों के पौधे लगाए जाएंगे और कम से कम 65 प्रतिशत जीवित रहने की दर (ट्री गार्ड का उपयोग करके) सुनिश्चित करना जिसे 'हरित स्थानों और जैवविविधता को बढ़ाना अनुभाग में वर्णित किया गया है

लक्ष्य

1. जल निकायों का नियमित रखरखाव और सफाई
2. जल निकायों के आसपास अतिरिक्त 1000 पौधों का रोपण करना तथा कम से कम 65% जीवित रहने की दर (ट्री गार्ड का इस्तेमाल करके) सुनिश्चित करना

जल निकायों का समय-समय पर रखरखाव

अनुमानित लागत²²

1. 105 कुओं की सफाई: ₹90,00,000
 2. 15 हैंडपंपों को रीबोर करना: ₹10,00,000
 3. विशिष्ट स्थानों पर 2 तालाबों की सफाई और डिसिल्टिंग: ₹40,00,000
- कुल लागत: ₹ 1.4 करोड़



जल निकासी के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना²³

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> 1. चेक डैम का निर्माण 2. नई नालियों का निर्माण 3. नालियों की सफाई और खुदाई 4. नालियों के ऊपर चैंबर निर्माण 	मौजूदा चेक डैम और नालियों की नियमित सफाई और रखरखाव	मौजूदा चेक डैम और नालियों का रखरखाव
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> 1. रणनीतिक स्थानों पर 2 चेक डैम का निर्माण 2. ~3 किमी नई नालियों का निर्माण 3. मौजूदा नालों की 300 मीटर की सफाई 4. रणनीतिक स्थान पर नालियों के ऊपर चैंबर का निर्माण 	मौजूदा बुनियादी ढांचे का रखरखाव	मौजूदा बुनियादी ढांचे का रखरखाव
अनुमानित लागत	<ol style="list-style-type: none"> 1. 2 चेक बांधों का निर्माण : ₹65,00,000 2. ~3 किमी नई नालियों का निर्माण: ₹60,00,000 3. मौजूदा नालियों में 300 मीटर की सफाई और खुदाई: ₹2,00,000 4. नालियों के ऊपर चैंबर निर्माण: ₹3,00,000 <p>कुल लागत: ₹1.3 करोड़</p>	आवश्यकतानुसार	आवश्यकतानुसार

22 HRVCA में उल्लिखित लागत

23 अधिक जानकारी के लिए HRVCA देखें



अपशिष्ट जल प्रबंधन

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
मुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> विकेंद्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली (DEWATS) की स्थापना सोक पिट का निर्माण 	<ol style="list-style-type: none"> अतिरिक्त विकेंद्रीकृत अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली (DEWATS) की स्थापना और मौजूदा DEWATS का रखरखाव सोक पिट का निर्माण 	<ol style="list-style-type: none"> भविष्य की जनसंख्या वृद्धि के आधार पर अपशिष्ट जल उपचार इकाई को बढ़ाना सोक पिट का निर्माण
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> 1 MLD की क्षमता वाले 1 DEWATS की स्थापना आवश्यकता के अनुसार सोक पिट का निर्माण (घरों के लिए जो DEWATS से जुड़े नहीं हैं) 	<ol style="list-style-type: none"> अपशिष्ट जल उपचार बुनियादी ढांचे का रखरखाव यदि आवश्यक हो तो सोक पिट और अतिरिक्त सोक पिट का नियमित रखरखाव 	<ol style="list-style-type: none"> अपशिष्ट जल उपचार बुनियादी ढांचे का रखरखाव सोक पिट का नियमित रखरखाव
अनुमानित लागत	DEWATS की लागत: ₹50,00,000 कुल लागत: ₹50 लाख		



भूजल पुनर्भरण और जल संरक्षण

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
मुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> पुनर्भरण गड्ढों का निर्माण छात्रों, युवाओं और स्थानीय समुदायों के लिए निम्न पर जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र <ul style="list-style-type: none"> जल संरक्षण की जरूरत मौजूदा जल संसाधनों का प्रबंधन जल संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए ग्राम जल और स्वच्छता समिति (VWSC), निर्माण कार्य समिति (CWC) और SHG का क्षमता निर्माण 	<ol style="list-style-type: none"> अतिरिक्त पुनर्भरण गड्ढों का निर्माण छात्रों, युवाओं और स्थानीय समुदायों के लिए निम्न पर जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र VWSC और SHGs जल निकायों और पुनर्भरण गड्ढों का रखरखाव सुनिश्चित करना 	<ol style="list-style-type: none"> आवश्यकता के अनुसार पुनर्भरण गड्ढे का निर्माण छात्रों, युवाओं और स्थानीय समुदायों के लिए निम्न पर जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र VWSC और SHGs द्वारा जल निकायों और पुनर्भरण गड्ढों का निरंतर रखरखाव

लक्ष्य	35 पुनर्भरण गड्डों का निर्माण	35 पुनर्भरण गड्डों का निर्माण	
	35 पुनर्भरण गड्डे: ₹12,25,000 कुल लागत: ₹12.25 लाख	35 पुनर्भरण गड्डे: ₹12,25,000 कुल लागत: ₹12.25 लाख	
अनुमानित लागत			

मौजूदा योजनाएँ और कार्यक्रम

- जल शक्ति अभियान: 'कैच द रेन' अभियान द्वारा उपलब्ध प्रावधानों और संसाधनों के माध्यम से वर्षा जल संचयन प्रणालियों का विकास किया जा सकता है।
- सिंचाई विभाग के अंतर्गत उ०प्र० राज्य का वार्षिक बजट को ग्राम पंचायत स्तर के जल निकाय संरक्षण और जीर्णोद्धार गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है।
- PMKSY के अंतर्गत मनरेगा और वाटरशेड विकास घटक के वार्षिक बजट का उपयोग वाटरशेड विकास गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।
- ग्राम पंचायत स्तर की स्वच्छता गतिविधियों के लिए स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) का लाभ उठाया जा सकता है।
- अभियान सुजलाम 2.0: जल शक्ति अभियान के माध्यम से अपशिष्ट जल प्रबंधन हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर सोखता गड्डों के निर्माण के कार्य को क्रियान्वित किया जा सकता है।

वित्त के अन्य स्रोत

- जल निकायों और कुओं के अनुरक्षण और रख-रखाव में योगदान देने के लिए कॉर्पोरेट/सीएसआर को 'जल निकाय को अपनाने' के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (नाबार्ड) द्वारा वाटरशेड डेवलपमेंट फंड के माध्यम से वाटरशेड विकास संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा सकता है।

प्रमुख विभाग

- ग्राम्य विकास विभाग
- सिंचाई और जल संसाधन विभाग
- उत्तर प्रदेश भूमि संसाधन विभाग



2. सतत कृषि

संदर्भ एवं मुद्दे

- उदयपुरा में कृषि क्षेत्र के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल ~1,410 हेक्टेयर है और कुल सकल फसल क्षेत्रफल लगभग 2,840 हेक्टेयर है।
- ग्राम पंचायत में 42% परिवार अपनी आजीविका के लिए कृषि पर और 34% परिवार पशुपालन पर निर्भर हैं।
- खरीफ और रबी सीजन में गेहूं (~ 567 हेक्टेयर), उड़द (~688 हेक्टेयर), जौ (~182 हेक्टेयर), सरसों (~154 हेक्टेयर), चना (~154 हेक्टेयर), तिल (~243 हेक्टेयर), मूंगफली (~283 हेक्टेयर), मक्का (~206 हेक्टेयर) और मटर (~364 हेक्टेयर) प्रमुख फसलें उगाई जाती हैं।
- ग्राम पंचायत में 2018 और 2022 में जुलाई से अक्टूबर के दौरान 5 बार सूखा पड़ा, जिससे फसल बर्बाद हो गई।
- कम बारिश के कारण उड़द की बुवाई का समय जुलाई (मानसून) से नवंबर (शरद ऋतु) में बदल गया है। गेहूं के मामले में, बारिश में देरी के कारण बुआई का समय अक्टूबर से नवंबर-दिसंबर तक बदल गया है।²⁴
- वर्ष 2019 में सूखे के कारण मक्का, मूंगफली और उड़द की फसल को नुकसान हुआ है। लगभग 1,700 क्विंटल उपज या लगभग ₹44,46,000 का नुकसान हुआ (संबंधित वर्ष के प्रचलित एमएसपी द्वारा इसकी पुष्टि की जाती है)।
- किसान प्रति वर्ष ~410 टन यूरिया और अन्य नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों का उपयोग करते हैं जिससे प्रति वर्ष ~464 टन CO₂e का GHG उत्सर्जन होता है। किसान कीटनाशकों और खरपतवारनाशी जैसे अन्य रासायनिक आदानों पर भी निर्भर हैं। इसके अलावा गेहूं की खेती के तहत 1.6 हेक्टेयर भूमि पर और उड़द की खेती के तहत 3 हेक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक खेती की जा रही है।
- जैसा कि क्षेत्रीय सर्वेक्षणों से पता चला कि कृषि में जल की मांग में वृद्धि हुई है, जिसके कारण जल संरक्षण और बेहतर सिंचाई तकनीकों के इस्तेमाल पर जोर दिये जाने की आवश्यकता है।
- जैसा कि फ्रील्ड सर्वेक्षण में बताया गया है, ग्राम पंचायत में किसान उत्पादक संगठन या बीज बैंक नहीं हैं, जिसके परिणामस्वरूप किसान बेहद खराब मौसम की घटनाओं के दौरान जोखिम का प्रबंधन करने में विफल रहते हैं।

उपरोक्त बिन्दु अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने के लिए सतत और सूखा प्रतिरोधी कृषि पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

24 जैसा कि फ्रील्ड सर्वेक्षण के दौरान ग्राम पंचायत द्वारा बताया गया



कृषि के लिए सूखा प्रबंधन

चरण

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
	<ol style="list-style-type: none"> ड्रिप सिंचाई और स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली जैसी सूक्ष्म सिंचाई प्रथाओं को बढ़ावा देना और अपनाना खेतों के चारों ओर पेड़ों से मेड़बंधी का निर्माण खेत में कृषि तालाब बनाना गेहूं की सूखे के प्रति सहनशील किस्मों को अपनाना कृषि क्षेत्र निगरानी स्टेशन में रणनीतिक स्थानों पर स्वचालित/मिनी मौसम स्टेशनों की स्थापना किसानों को फसल के नुकसान से बचाने के लिए विभिन्न बीमा कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता बढ़ाना 	<ol style="list-style-type: none"> सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियों का विस्तार मेड़बंधी का विस्तार अतिरिक्त कृषि तालाबों का निर्माण गेहूं की सूखे के प्रति सहनशील किस्म को अपनाना बाजरा और फलियां जैसे सूखा प्रतिरोध फसलों को अपनाने का दायरा बढ़ाना किसानों को फसल के नुकसान से बचाने के लिए विभिन्न बीमा कार्यक्रमों का लाभ उठाने के लिए जागरूकता पैदा करने और किसानों को सहायता प्रदान करने की पहल 	<ol style="list-style-type: none"> सूक्ष्म सिंचाई की पद्धतियों का विस्तार करना मेड़बंधी का रखरखाव आवश्यकता के आधार पर अधिक कृषि तालाबों का निर्माण करना गेहूं की सूखा सहनशील किस्मों को अपनाने का दायरा बढ़ाना जागरूकता गतिविधियों को बढ़ाना
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> लगभग 240 हेक्टेयर पर सूक्ष्म सिंचाई (सरसों, मटर और मूंगफली के अंतर्गत कृषि भूमि का 30%) 705 हेक्टेयर कृषि भूमि पर वृक्षों से बाँध बना है (कुल कृषि भूमि का 50%) 300 m³ प्रति क्षमता वाले 10 कृषि तालाब बनाना ग्राम पंचायत में उपयुक्त स्थान पर 1 मिनी मौसम निगरानी स्टेशन स्थापित करना 	<ol style="list-style-type: none"> लगभग 320 हेक्टेयर (सरसों, मटर और कृषि के अंतर्गत कुल 70% कृषि भूमि) पर सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियां प्रारम्भ करना सभी कृषि भूमि 705 हेक्टेयर पर वृक्षों सहित मेड़ बनाए जाएंगे (कृषि भूमि का 100%) 300 m³ क्षमता वाले 15 कृषि तालाब बनाना। मौसम निगरानी स्टेशनों का समय-समय पर रखरखाव 	<ol style="list-style-type: none"> लगभग 800 हेक्टेयर (सरसों, मटर और मूंगफली के अंतर्गत 100% कृषि भूमि) पर सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियां शुरू की गईं मेड़बंधी और कृषि तालाबों का रखरखाव मौसम निगरानी स्टेशनों का समय-समय पर रखरखाव

अनुमानित लागत

<ol style="list-style-type: none"> 1. सूक्ष्म सिंचाई: ₹2,40,00,000 2. मेढबन्धी का निर्माण: ~₹2,81,624 3. कृषि तालाब: ₹ 9,00,000 4. 1 मिनी मौसम स्टेशन की लागत: ₹1,50,000 <p>कुल लागत: ₹2.53 करोड़</p>	<ol style="list-style-type: none"> 1. सूक्ष्म सिंचाई: ₹3,20,00,000 2. मेढबन्धी का निर्माण: ~₹2,81,624 3. कृषि तालाब: ₹13,50,000 <p>कुल लागत: ₹3.36 करोड़</p>	<p>सूक्ष्म सिंचाई: ₹2,40,00,000</p> <p>कुल लागत: ₹2.4 करोड़</p>
---	---	---



प्राकृतिक खेती को अपनाना

चरण

	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> 1. जैव-उर्वरकों/प्राकृतिक खाद, जैव-कीटनाशकों के उपयोग जैसे टिकाऊ कृषि पद्धतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा देना <ul style="list-style-type: none"> » प्रशिक्षण और प्रदर्शन » जैविक खेती प्रमाणीकरण शुरू किया गया » बाजार तक पहुंच और संपर्कों का पता लगाया गया 2. वाष्पीकरण को कम करके और नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ाकर मृदा स्वास्थ्य को बढ़ाने के लिए फसल चक्रण, कवर फसल, मल्लिंग, जीरो टिलेज जैसी प्रथाओं को बढ़ावा देना 	<ol style="list-style-type: none"> 1. कृषि भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करना जारी रखना (नर्सरी, बीज बैंक, प्रमाणीकरण तंत्र और बाजार संपर्क स्थापित करना) 2. चरण I में क्रियान्वित प्रथाओं को बढ़ावा देना 	<ol style="list-style-type: none"> 1. कृषि भूमि को प्राकृतिक खेती में बदलने का 100% विस्तार 2. चरण I और II में क्रियान्वित प्रथाओं को बढ़ावा देना

लक्ष्य

82 हेक्टेयर (15 प्रतिशत) भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करना ²⁵	137 हेक्टेयर (40 प्रतिशत) भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करना	329 हेक्टेयर (100 प्रतिशत) भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित करना
--	---	--

25 क्षेत्रीय सर्वेक्षण के अनुसार, ग्राम पंचायत में गेहूं की खेती के अंतर्गत 7 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक खेती की जाती है

अनुमानित लागत

अनुमानित लागत:

1. प्रशिक्षण की लागत (एक बार): ₹60,000
 2. भूमि का प्राकृतिक खेती में परिवर्तन: ~ ₹2,02,62,200
- कुल लागत: ₹2.03 करोड़

अनुमानित लागत:

1. प्रशिक्षण की लागत (एक बार): ₹60,000
 2. भूमि का प्राकृतिक खेती में परिवर्तन: ₹3,38,52,700
- कुल लागत: ₹3.39 करोड़

अनुमानित लागत:

1. प्रशिक्षण की लागत (एक बार): ₹60,000
 2. प्राकृतिक खेती के लिए भूमि का परिवर्तन: ₹8,12,95,900
- कुल लागत: ₹8.13 करोड़



सतत पशुधन प्रबंधन

चरण

	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> 1. पशुधन प्रबंधन के लिए पशुपालन में लगे परिवारों की जागरूकता बढ़ाना और क्षमता निर्माण करना 2. पशुधन स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में सुधार के लिए समुदाय के सदस्यों को पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता/पैरा-पशु चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षित करना <p>पशुधन से मीथेन उत्सर्जन को कम करने पर हस्तक्षेप के लिए अनुभाग "विचारार्थ अतिरिक्त संस्तुतियों की सूची" देखें।</p>	<ol style="list-style-type: none"> 1. प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण गतिविधियों का विस्तार 2. आवश्यकता के अनुसार पैरा-वेट प्रशिक्षण को बढ़ाना 	<ol style="list-style-type: none"> 1. प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण गतिविधियों का विस्तार 2. आवश्यकता के अनुसार पैरा-वेट प्रशिक्षण को बढ़ाना
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> 1. पशुपालन में लगे परिवारों के लिए स्थायी/सतत पालन क्रियाएँ/प्रथाओं, बीमारी की रोकथाम और पशुधन स्वास्थ्य के प्रबंधन पर कार्यशालाएँ आयोजित करना 2. पैरा-वेट का प्रशिक्षण²⁶ 	<ol style="list-style-type: none"> 1. रोग की रोकथाम और स्थायी/सतत पशुपालन क्रियाएँ/प्रथाओं पर अतिरिक्त कार्यशालाएँ आयोजित करना 2. पशुधन प्रबंधन के लिए समुदाय का निरन्तर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण 	<ol style="list-style-type: none"> 1. रोग की रोकथाम और स्थायी/सतत पशुपालन क्रियाएँ/प्रथाओं पर अतिरिक्त कार्यशालाएँ आयोजित करना 2. पशुधन प्रबंधन के लिए समुदाय का निरन्तर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण
अनुमानित लागत	कार्यशाला और पैरा-पशु चिकित्सक प्रशिक्षण की लागत: आवश्यकतानुसार	आवश्यकतानुसार	आवश्यकतानुसार

26 ग्राम पंचायत की आवश्यकता के आधार पर प्रशिक्षित समुदाय-आधारित पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की संख्या

मौजूदा योजनाएं और कार्यक्रम

- प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई), UPO बाजरा पुनरुद्धार कार्यक्रम, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना, मौसम आधारित फसल बीमा योजना, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा योजना से धन और सब्सिडी के माध्यम से सूखा प्रबंधन और पूर्ण प्रक्रियाओं का समर्थन किया जा सकता है।
- फसल योजना और आपदा प्रबंधन को बढ़ाने के लिए मौसम सूचना नेटवर्क और डेटा सिस्टम (विंड्स) कार्यक्रम के तहत स्वचालित मौसम स्टेशन स्थापित किए जा सकते हैं।
 - » उत्तर प्रदेश सरकार ने विंड्स के कार्यक्रम को लागू करने की घोषणा की है, जिसके तहत प्रत्येक तहसील मुख्यालय पर एक स्वचालित मौसम स्टेशन स्थापित किया जाएगा और प्रत्येक ब्लॉक में कम से कम दो स्वचालित रेन गेज स्थापित किए जाएंगे।
- सूखारोधी गतिविधियों, नर्सरी और बीज बैंकों के निर्माण को मनरेगा के माध्यम से सुव्यवस्थित किया जा सकता है
- जैविक खेती पद्धतियों को विभिन्न योजनाओं जैसे: परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन योजना के अंतर्गत प्रदान की गई धनराशि और सब्सिडी के माध्यम से समर्थन दिया जा सकता है।
- किसानों के लिए तकनीकी और ज्ञान सहायता के साथ-साथ जैविक खेती प्रदर्शनों को राष्ट्रीय और क्षेत्रीय जैविक खेती केंद्रों (एनसीओएफ और आरसीओएफ), कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), कृषि, सहकारिता और किसान कल्याण विभाग के निकटतम जैविक खेती सेल के माध्यम से सक्षम किया जा सकता है।
- प्रौद्योगिकी उन्नयन और सतत खेती के लिए किसानों और एफपीओ के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहायता के लिए कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (एटीएमए) का उपयोग किया जा सकता है।
- कृषि रक्षा योजना विभिन्न पारिस्थितिक संसाधनों के माध्यम से कीट नियंत्रण और जैव-रसायनों के उपयोग को बढ़ावा देने में किसानों को सहायता करती है।
- राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, उत्तर प्रदेश पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण योजना और राष्ट्रीय गोकुल मिशन जैसी राज्य योजनाओं के माध्यम से पैरा-पशुचिकित्सक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण का लाभ उठाया जा सकता है।²⁷

वित्त के अन्य स्रोत

- कटाई के बाद के नुकसान को कम करने में मदद करने के लिए कोल्ड-स्टोरेज सुविधा की स्थापना और संचालन ("स्वच्छ, सतत, सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुंच" अनुभाग में उल्लिखित योजनाओं के अनुरूप) करना।
 - » फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए कोल्ड स्टोरेज की सुविधा
- जागरूकता बढ़ाना: जैविक खेती के तरीकों और लाभों, आवश्यक सुझाव, प्रदर्शन, सूचना और मार्गदर्शन के प्रासंगिक स्रोत, पंजीकरण प्रक्रिया, सत्यापन और प्रमाणन प्रक्रिया, बाजार लिकेज और मौसम-आधारित सूचना सेवाओं आदि पर जानकारी।
- किसानों, एफपीओ, स्वयं सहायता समूहों और अन्य समुदाय के सदस्यों को बीमा, विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने के साथ-साथ जलवायु स्मार्ट कृषि प्रथाओं को लागू करने के तकनीकी पहलुओं के लिए मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रदान करना, जिसमें जैविक उर्वरकों को अपनाना, अंततः जैविक खेती में बदलाव, सूखे से बचाव वाली कृषि और टिकाऊ पशुधन प्रबंधन शामिल हैं।
- इसके अतिरिक्त, उदयपुरा में सतत कृषि में लगे किसानों, एफपीओ, स्वयं सहायता समूहों, और अन्य समुदाय के सदस्यों की क्षमता निर्माण क्षेत्र के तकनीकी विशेषज्ञों और संस्थानों, स्थानीय गैर सरकारी संगठनों, सीएसओ और कॉरपोरेट्स के सहयोग से किया जा सकता है।
- नाबार्ड के साथ वाटरशेड विकास निधि (WDF) कार्यक्रम के माध्यम से वाटरशेड विकास गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रमुख विभाग

- कृषि विभाग
- एकीकृत कीट प्रबंधन केंद्र (सीआईपीएम)
- उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग
- भूमि संसाधन विभाग
- जल शक्ति विभाग
- पशुपालन विभाग
- उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी (यूपीनेडा)
- जैविक खेती के लिए क्षेत्रीय केंद्र
- कृषि विज्ञान केन्द्र, ललितपुर



3. हरित स्थानों और जैवविविधता को बढ़ाना

संदर्भ एवं मुद्दे

- ग्राम पंचायत में वृक्षारोपण में 3 हेक्टेयर कृषि-वानिकी वृक्षारोपण शामिल हैं। प्रमुख प्रजातियों में सागौन, शीशम, नींबू, करंज शामिल हैं।
- इसके अतिरिक्त, मनरेगा के अंतर्गत जुलाई महीने में वृक्षारोपण गतिविधियों को 15% जीवित रहने की दर के साथ किया जाता है
- ग्राम पंचायत की सीमा में 11 हेक्टेयर वन भूमि है।²⁸

उदयपुरा ग्राम पंचायत में हरित क्षेत्रों की जगह बढ़ाने की क्षमता है, क्योंकि यह न केवल बढ़ते तापमान में सुधार करेगा और छाया प्रदान करेगा अपितु ग्राम पंचायत में कार्बन सिंक को बढ़ाने के अलावा, लंबी अवधि में मिट्टी के स्वास्थ्य और जल स्तर में भी सुधार करेगा।

मौजूदा हरित आवरण में सुधार

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> विभिन्न पहलों के माध्यम से वार्षिक समुदाय-आधारित²⁹ वृक्षारोपण संबंधी गतिविधियाँ : <ul style="list-style-type: none"> छात्रों के लिए ग्रीन स्टीवर्डशिप कार्यक्रम³⁰ (5 छात्रों का चयन) देशी फल वाले पेड़ों को लगाकर खाद्य वन का निर्माण 	<ol style="list-style-type: none"> मौजूदा वृक्षारोपण और नर्सरी का रखरखाव बाल वन³¹ के सृजन के साथ अतिरिक्त पौधरोपण किसानों को कृषि वानिकी अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना 	<ol style="list-style-type: none"> वृक्षारोपण की गतिविधियों का विस्तार और रखरखाव - बाल वन और अन्य वृक्षारोपण कृषि-वानिकी पहल के अंतर्गत क्षेत्र का विस्तार आरोग्य वन का रखरखाव किया गया तथा प्राकृतिक औषधियों और पूरकों के उत्पादन के लिए यूनिट स्थापित करना

²⁸ ग्राम प्रधान से प्राप्त जानकारी के आधार पर

²⁹ अनुलग्नक VI में सूचीबद्ध वृक्षों की प्रजातियाँ

³⁰ स्कूल के छात्रों को पेड़ लगाने के कार्यों में शामिल किया जाएगा और प्रत्येक कक्षा से छात्र नेता चुने जाएंगे जो अपने साथियों के साथ-साथ ग्राम पंचायत समुदाय को भी पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करेंगे।

³¹ नए माता-पिता को उनके बच्चे को जन्म देने के उपलक्ष्य में देशी सदाबहार पेड़ों के पौधे उपहार में दिए जाएंगे तथा उन्हें उनके बच्चों की देखभाल के साथ-साथ इन पौधों की देखभाल करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाएगा।

2. **आरोग्य वन** तैयार करना -
भूमि की खरीद और तैयारी,
प्रजातियों का चयन और विभिन्न
औषधीय जड़ी-बूटियों, झाड़ियों
और पेड़ों का रोपण
3. नर्सरी का निर्माण
4. छात्रों, युवाओं और स्थानीय
समुदायों के लिए निम्न पर
जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र
 - » वन एवं हरित आवरण का महत्व
 - » पेड़ कैसे लगाएं और उनकी देखभाल कैसे करें

4. आरोग्य वन की स्थापना
5. छात्रों, युवाओं और स्थानीय
समुदायों के लिए निम्न पर
जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र

4. छात्रों, युवाओं और स्थानीय
समुदायों के लिए निम्न पर
जागरूकता और प्रशिक्षण सत्र

1. आम और लुप्त हो रहे पेड़ों के
2,000 पौधों का रोपण और
कम से कम 65% पौधों को
जीवित रखना सुनिश्चित करना
(ट्री गार्ड द्वारा)
पृथक्करण क्षमता³²: 15-20
सालों में 11,200 tCO₂ to
20,000 tCO₂
2. आरोग्य वन की स्थापना के
लिए लगभग 0.1 हेक्टेयर भूमि
आवंटित/चिह्नित करना
3. 1 नर्सरी का निर्माण

1. अतिरिक्त 2,000 से 2,500 पौधे
लगाना
पृथक्करण क्षमता: 15-20 सालों
में 14,000 tCO₂ से 25,000
tCO₂
2. आरोग्य वन की स्थापना एवं
रखरखाव
3. ~203 हेक्टेयर भूमि पर कृषि
वानिकी अपनाना, 20,300 पेड़
लगाना³³
पृथक्करण क्षमता: 20 वर्षों में
1,13,680 tCO₂ से 2,03,000
tCO₂

1. सड़कों, रास्तों और जल निकायों
के आसपास अतिरिक्त 2,500 से
3,000 पौधे लगाना
पृथक्करण क्षमता 15-20 सालों
में 16,800 tCO₂ से 30,000
tCO₂
2. शेष 305 हेक्टेयर भूमि पर कृषि
वानिकी अपनाना, 30,500 पेड़
लगाना
पृथक्करण क्षमता: 20 वर्षों में
1,71,800 tCO₂ से 3,05,000
tCO₂
3. आरोग्य वन का रखरखाव किया
गया तथा प्राकृतिक औषधियों
और पूरकों का उत्पादन जारी
रखना
(जैसा कि 'आजीविका और हरित
उद्यमिता को बढ़ाना अनुभाग में
दिया गया है)

32 सागौन की प्रजातियों के आधार पर पृथक्करण क्षमता का अनुमान

33 उपयुक्त भूमि पर कृषि वानिकी अपनाई जाना। यहां कुल 511 हेक्टेयर (गेहूँ) पर विचार किया गया है

अनुमानित लागत

<ol style="list-style-type: none"> वृक्षारोपण की गतिविधियां: ₹25,40,000 1 नर्सरी बनाना: ₹4,00,000 <p>कुल लागत: ₹29.4 लाख</p>	<ol style="list-style-type: none"> वृक्षारोपण की कुल लागत: ₹25,40,000- ₹31,75,000 कृषि वानिकी की लागत: ₹81,20,000 <p>कुल लागत : ₹1.09 करोड़</p>	<ol style="list-style-type: none"> वृक्षारोपण की कुल लागत : ₹31,75,000-₹38,10,000 कृषि वानिकी की लागत: ₹1,22,00,000 <p>कुल लागत: ₹1.56 करोड़ रुपये</p>
--	---	--



जन जैवविविधता रजिस्टर

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> जन जैवविविधता रजिस्टर का सहभागी अद्यतनीकरण समुदाय और सभी हितधारकों के बीच जागरूकता बढ़ाना 	<ol style="list-style-type: none"> जन जैवविविधता रजिस्टर का नियमित अद्यतनीकरण सभी हितधारकों के बीच जागरूकता को बढ़ाना 	<ol style="list-style-type: none"> जन जैवविविधता रजिस्टर का नियमित अद्यतनीकरण सभी हितधारकों के बीच जागरूकता को बढ़ाना
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> जैवविविधता प्रबंधन समिति का गठन और क्षमता विकास जन जैवविविधता रजिस्टर का सहभागी अद्यतन 	जन जैवविविधता रजिस्टर का सहभागी अद्यतन जारी रखना	जन जैवविविधता रजिस्टर का सहभागी अद्यतन जारी रखना
अनुमानित लागत	जैवविविधता प्रबंधन समितियों (BMC) के गठन, पंजीकरण और प्रशिक्षण पर लगभग ₹25,000 का व्यय ³⁴		

34 जैवविविधता प्रबंधन समितियों (BMC) के संचालन के लिए दिशानिर्देश, 2013, राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण। <http://nbaindia.org/uploaded/pdf/Guidelines%20for%20BMC.pdf>

मौजूदा योजनाएं और कार्यक्रम

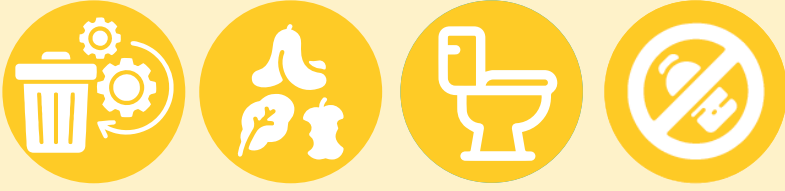
- पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, मंत्रालय, भारत सरकार, ग्रीन इंडिया मिशन, जल जीवन मिशन और उप्र राज्य वृक्षारोपण लक्ष्यों द्वारा 'भारत में वनों के बाहर पेड़' पहल के अंतर्गत प्रावधानों के माध्यम से वृक्षारोपण गतिविधियों को जोड़ा और संचालित किया जा सकता है।
- उप्र राज्य प्रतिकरात्मक वनरोपण निधि प्रबंधन और योजना प्राधिकरण निधि (राज्य कैम्पा निधि) के अंतर्गत वार्षिक बजटिंग के लिए निम्न गतिविधि हेतु निर्देशित किया जा सकता है:
 - » ग्राम पंचायत में वनरोपण, जैवविविधता का संवर्धन, वन्यजीव आवास में सुधार, और मिट्टी एवं जल संरक्षण गतिविधियाँ।
- वृक्षारोपण गतिविधियों को मनरेगा के साथ जोड़ा जा सकता है और स्थानीय समुदाय को 'श्रमदान' करने में भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- सतत कृषि पर राष्ट्रीय मिशन के अंतर्गत कृषि वानिकी संबंधी उप-मिशन का लाभ उठाया जा सकता है:
 - » कृषि वानिकी वृक्षारोपण के लिए प्रति हेक्टेयर ₹28,000 का लाभ उठाएं।
 - » वृक्षारोपण हेतु सहायता चार वर्षों के लिए 40:20:20:20 के वर्ष-वार अनुपात में प्राप्त की जा सकती है।
- केंद्रीय औषधीय एवं सुगंध पौधा संस्थान, लखनऊ के कौशल विकास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम पंचायत में आरोग्य वन स्थापित करने में सहायक हो सकता है
- BMC के प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के लिए राष्ट्रीय जैवविविधता प्राधिकरण और उत्तर प्रदेश राज्य जैवविविधता बोर्ड के कार्यक्रमों का उपयोग किया जा सकता है।

वित्त के अन्य स्रोत

- 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत ग्राम पंचायत को आवंटित संसाधन तथा पंचायत के स्वयं की आय (OSR) से एकत्र राजस्व
- पौधों की खरीद, वृक्षारोपण अभियान का आयोजन, पौधों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ट्री गार्ड के निर्माण के लिए कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) फंड का लाभ उठाया जा सकता है। CSR समर्थन का उपयोग आरोग्य वन के निर्माण और हर्बल उत्पादों के लिए उत्पादन इकाइयों की स्थापना के लिए भी किया जा सकता है, जैसा कि 'आजीविका बढ़ाने और हरित उद्यमिता को बढ़ावा देने' की संस्तुतियों में वर्णित है।

प्रमुख विभाग

- पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
- राज्य जैवविविधता बोर्ड
- पंचायती राज विभाग
- ग्राम्य विकास विभाग
- केंद्रीय औषधीय एवं सुगंध पौध संस्थान, लखनऊ
- अवसंरचना एवं औद्योगिक विकास विभाग



4. सतत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

संदर्भ एवं मुद्दे

- ग्राम पंचायत में सभी घरेलू गतिविधियों (घरेलू, सार्वजनिक और अर्ध-सार्वजनिक स्थान, तथा वाणिज्यिक क्षेत्र) से उत्पन्न कुल अपशिष्ट लगभग 500 किलोग्राम प्रतिदिन है। इसमें से, 290 किलोग्राम बायोडिग्रेडेबल / जैविक अपशिष्ट है और 210 किलोग्राम गैर-बायोडिग्रेडेबल/अजैविक अपशिष्ट है। (आकलन पद्धति के लिए अनुबंध चतुर्थ देखें)
- फ्रील्ड सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के अनुसार, उदयपुर में अपशिष्ट संग्रह, पृथक्करण और प्रभावी अपशिष्ट उपचार प्रणाली की कमी है, जिसके परिणामस्वरूप ग्राम पंचायत के अंदर और बाहर जल निकायों और सड़कों पर अपशिष्ट फेंका जाता है। इसके परिणामस्वरूप जल निकाय प्रदूषित होते हैं, मानसून के दौरान बंद नालियों के कारण जलभराव होता है जिसके कारण स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है।
- कृषि और पशु अपशिष्ट की बढ़ी मात्रा भी ग्राम पंचायत में अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याओं को बढ़ा रही है। ग्राम पंचायत में कुल पशुधन की संख्या 1,400 है (जिसमें गाय, भैंस और बकरी शामिल हैं) और अनुमानित गोबर उत्पादन लगभग 15 टन प्रतिदिन है जिसे उदयपुरा में कम्पोस्ट, वर्मिकम्पोस्ट, प्राकृतिक उर्वरक उत्पादन और बायोगैस उत्पादन जैसे उपायों के माध्यम से स्थायी रूप से प्रबंधित किया जा सकता है।³⁵

इस पृष्ठभूमि में, ग्राम पंचायत में 100% ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सुनिश्चित करने के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए निम्नलिखित समाधान प्रस्तावित हैं, जो इस प्रकार हैं।

अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली स्थापित करना

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरे के लिए ग्राम पंचायत-स्तरीय पृथक्करण और भंडारण सुविधा की स्थापना कचरे के संग्रहण और परिवहन के लिए इलैक्ट्रिक कचरा संग्रहण वाहन का क्रय और कर्मचारी की नियुक्ति : 	<ol style="list-style-type: none"> पृथक्करण और भंडारण सुविधा का रखरखाव ग्राम पंचायत-स्तरीय प्लास्टिक श्रेडर यूनिट की स्थापना 	<ol style="list-style-type: none"> निम्न का रखरखाव <ul style="list-style-type: none"> » पृथक्करण और भंडारण सुविधाएं » इलैक्ट्रिक कचरा संग्रहण वाहन » स्थापित किये गए कूड़ेदान

35 मान लीजिए गायें प्रतिदिन 10 किलोग्राम गोबर, भैंसें प्रतिदिन 15 किलोग्राम गोबर तथा बकरियां प्रतिदिन 150 ग्राम गोबर पैदा करती हैं

- » घरों और सार्वजनिक सुविधाओं से अलग कचरे का डोर-टू-डोर संग्रह
 - » घरों से लेकर ग्राम पंचायत-स्तरीय पृथक्करण सुविधा तक
2. चयनित स्थानों (बाजार, दुकान, चाय की दुकान आदि) पर कचरा संग्रहण हेतु कूड़ेदान की स्थापना
 3. पंचायत, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी), अनौपचारिक कचरा बीनने वालों, स्थानीय स्क्रेप डीलरों, स्थानीय व्यवसायों और MSME के बीच साझेदारी स्थापित करना

3. मौजूदा कूड़ेदानों का रखरखाव और आवश्यकता के अनुसार नए चयनित स्थानों पर कूड़ेदानों की अतिरिक्त स्थापना
4. ग्राम पंचायत से आगे अन्य गांवों/जिलों तक साझेदारी को बढ़ाना

2. ग्राम पंचायत से आगे अन्य गांवों/जिलों तक साझेदारी को बढ़ाना

1. ग्राम पंचायत की अपशिष्ट प्रबंधन सुविधा के अंतर्गत 712 घर (100 प्रतिशत) कवर किए गए
2. प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले लगभग 500 किलोग्राम कचरे को एकत्रित करने के लिए 2 इलैक्ट्रिक कचरा संग्रहण वैन (क्षमता 310 किलोग्राम) के प्रावधान की व्यवस्था
3. चयनित स्थानों पर 40 कूड़ेदान लगाना
4. पंचायत और स्थानीय व्यवसायों, और MSME, SHG, अनौपचारिक रैगपिकर्स और स्थानीय स्क्रेप डीलरों के बीच कचरे के संग्रह/परिवहन के लिए साझेदारी का निर्माण

1. अतिरिक्त 40 कूड़ेदान की स्थापना
2. मौजूदा सुविधाओं और अपशिष्ट प्रबंधन सुविधा का रखरखाव
3. भागीदारी बढ़ाना

1. आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त कूड़ेदान
2. मौजूदा सुविधाओं और अपशिष्ट प्रबंधन सुविधा का रखरखाव
3. भागीदारी बढ़ाना

अनुमानित लागत

1. 2 इलैक्ट्रिक कचरा संग्रहण वाहन: ₹2,00,000
 2. 40 कूड़ेदान/ कंटेनर: ₹1,50,000
- कुल लागत: ₹3,50,000

40 कूड़ेदान/ कंटेनर: ₹1,50,000

कुल लागत: ₹1,50,000

आवश्यकतानुसार लाग



जैविक अपशिष्ट का प्रबंधन

चरण



2024-25 से 2026-27



2027-28 से 2029-30



2030-31 से 2034-35

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. वर्मीकम्पोस्टिंग और नाडेप कम्पोस्ट पिट की स्थापना
2. जैविक उर्वरकों के उत्पादन के लिए उद्यम स्थापित करना (इसके बारे में "आजीविका एवं हरित उद्यमिता को बढ़ावा देना" अनुभाग में विस्तार से बताया गया है)

वर्मीकम्पोस्टिंग और नाडेप कम्पोस्ट पिट का नियमित रखरखाव

वर्मीकम्पोस्टिंग और नाडेप कम्पोस्ट पिट का नियमित रखरखाव

लक्ष्य

1. 20 वर्मीकम्पोस्ट और 70 नाडेप कम्पोस्ट पिट की स्थापना
2. घरेलू कचरे (जैविक) से उत्पन्न कम्पोस्ट/खाद: 145 किग्रा प्रतिदिन; 4,350 किग्रा प्रति माह

1. आवश्यकता के अनुसार क्षमता बढ़ाना/ नए कम्पोस्ट पिट स्थापित करना
2. 100 प्रतिशत बायोडिग्रेडेबल / जैविक कचरे उपचार किया गया

1. आवश्यकता के अनुसार पुनर्भरण गड्ढे का निर्माण
2. खाद गड्ढों का रखरखाव

अनुमानित लागत

20 वर्मीकम्पोस्ट और 70 नाडेप कम्पोस्ट पिट की लागत: ₹ 4,00,000³⁶

कुल लागत: ₹4,00,000

आवश्यकतानुसार लागत

आवश्यकतानुसार लागत

36 अधिक जानकारी के लिए HRVCA देखें



स्वच्छता बुनियादी ढांचे को बढ़ाना

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	सामुदायिक शौचालयों की मरम्मत	मौजूदा बुनियादी ढांचे का रखरखाव	मौजूदा बुनियादी ढांचे का रखरखाव
लक्ष्य	मौजूदा स्कूल शौचालयों की मरम्मत (प्राथमिक विद्यालय, मुरली)	सभी सामुदायिक शौचालयों का नियमित रखरखाव और मरम्मत	मौजूदा बुनियादी ढांचे का रखरखाव
अनुमानित लागत	मरम्मत की लागत: ₹1,00,000 ³⁷ कुल लागत: ₹1,00,000		



एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> निम्न हेतु जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन: <ul style="list-style-type: none"> ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति (VWSC) छात्र एवं युवा समूह समुदाय के सदस्य और व्यावसायिक प्रतिष्ठान भागीदारी मॉडल: "आजीविका और हरित उद्यमिता को बढ़ाना" अनुभाग में विस्तार से बताया गया है 	जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता विकास कार्यक्रम जारी है	<ol style="list-style-type: none"> निम्न हेतु जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता विकास कार्यक्रम का आयोजन: पिछले चरणों की सफलता का इस्तेमाल इस पहल को निकटवर्ती ग्राम पंचायतों तक बढ़ाने हेतु मॉडल के रूप में किया जा सकता है

37 लागत एचआरवीसीए के अनुसार

1. एकल इस्तेमाल प्लास्टिक (SUP) पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध
2. प्लास्टिक वैकल्पिक उत्पादों के निर्माण में 100 महिलाओं की भागीदारी

1. एकल इस्तेमाल प्लास्टिक (SUP) पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध
2. इस ग्राम पंचायत और आसपास के गांवों से ज्यादा सहभागिता:
 - » अतिरिक्त 200 महिलाएं
 - » अतिरिक्त SHG, MSME और व्यक्तिगत उद्यमी

1. एकल इस्तेमाल प्लास्टिक (SUP) पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध
2. इस ग्राम पंचायत और आसपास के गांवों से ज्यादा सहभागिता:
 - » अतिरिक्त 300 महिलाएं
 - » अतिरिक्त SHG, MSME और व्यक्तिगत उद्यमी

मौजूदा योजनाएं और कार्यक्रम

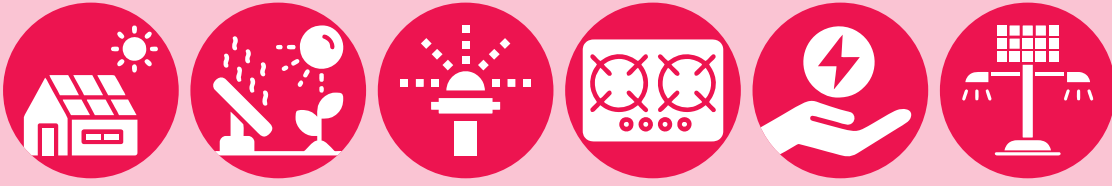
- समुदाय आधारित खाद सुविधाओं के निर्माण के लिए मनरेगा का उपयोग किया जा सकता है
- बुनियादी ढांचे के विकास और प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण को स्वच्छ भारत (ग्रामीण) मिशन के अंतर्गत प्रयासों द्वारा समर्थित किया जा सकता है।

वित्त के अन्य स्रोत

- प्लास्टिक के वैकल्पिक उत्पादों के लिए उत्पादन, खाद प्रक्रियाओं में सम्मिलित सभी हितधारकों की जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण करने और व्यक्तिगत स्तर पर टिकाऊ/सतत उपभोग व्यवहार को बढ़ावा देने में CSR समर्थन महत्वपूर्ण होगा।
- इसके अलावा, प्लास्टिक के लिए प्लास्टिक-वैकल्पिक उत्पादों के उत्पादन, खाद बनाने की प्रक्रिया में शामिल सभी हितधारकों की जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण बढ़ाने और व्यक्तिगत स्तर पर टिकाऊ उपभोग व्यवहार को बढ़ावा देने में CSR समर्थन महत्वपूर्ण होगा।
- स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण (SBM-G) दिशानिर्देशों के अनुसार अपशिष्ट प्रबंधन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे को विकसित करने के लिए टाइड और अनटाइड बजट सहित ग्राम पंचायत की स्वयं की आय से एकत्र राजस्व का उपयोग किया जा सकता है

प्रमुख विभाग

- पंचायती राज विभाग
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
- ग्राम्य विकास विभाग
- कृषि विभाग
- उत्तर प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड



5. स्वच्छ, सतत, किफ़ायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुँच

संदर्भ एवं मुद्दे

- उदयपुरा ग्राम पंचायत ने 2022-23 में लगभग 1,15,996 यूनिट (kWh) बिजली की खपत की है। खपत के सापेक्ष ग्राम पंचायत में ~100% घरों में बिजली कनेक्शन है, जैसा कि समुदाय के सदस्यों द्वारा जानकारी दी गयी है। पंचायत में बिजली की आपूर्ति 24*7 नहीं है। औसतन, ग्राम पंचायत को प्रतिदिन ~12 घंटे बिजली कटौती का सामना करना पड़ता है।³⁸
- सिंचाई के लिए 300 डीजल पंपों का उपयोग किया जाता है³⁹ जो प्रतिवर्ष लगभग ~117 किलोलीटर ईंधन की खपत करते हैं।
- कई घरों और सार्वजनिक उपयोगिताओं में CFL (कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट) बल्ब और अन्य कम दक्षता वाले इलेक्ट्रिकल फिक्चर्स और उपकरण इस्तेमाल में हैं। इसके अतिरिक्त, ग्राम पंचायत ने 100 सोलर स्ट्रीट लाइट की आवश्यकता बतायी है।⁴⁰
- उदयपुरा में ~56% परिवार खाना पकाने के लिए रसोई गैस (LPG) का उपयोग करते हैं, जबकि ~510 घरों में खाना पकाने के लिए गोबर और लकड़ी का उपयोग किया जाता है⁴¹ इसके अतिरिक्त, 2022-2023 में घर के अंदर और बाहर वायु प्रदूषण के कारण लगभग 35 व्यक्ति सांस की बीमारियों से प्रभावित हुए। इसलिए स्वच्छ खाना पकाने के समाधानों में बदलाव की आवश्यकता है जिससे न केवल उत्सर्जन में कमी आएगी बल्कि घरों के भीतर की वायु की गुणवत्ता में सुधार जैसे सह-लाभ भी मिलेंगे।
- बढ़ते तापमान के साथ, घरों में थर्मल आराम का स्तर कम हो रहा है और स्थायी स्थान शीतलन की आवश्यकता है।

ग्राम पंचायत की ऊर्जा संबंधी समस्याओं/चिंताओं के आधार पर, केंद्र और राज्य सरकार के हाल ही में प्रारम्भ किए गए और साथ ही पूर्व से चल रहे कार्यक्रमों, जैसे कि अन्य के साथ पीएम सूर्य घर बिजली मुफ्त योजना, पीएम कुसुम योजना, यूपी राज्य सौर नीति 2022 को संयुक्त रूप से जोड़ते हुए, उदयपुरा में कार्यान्वयन के लिए निम्नलिखित समाधान/गतिविधियां प्रस्तावित हैं। प्रस्तावित गतिविधियों का उद्देश्य ग्राम पंचायत में समुदायों के लिए स्वच्छ, स्थाई, सस्ती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुँच सुनिश्चित करना है। इससे न केवल उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधारा होगा बल्कि ऊर्जा के उत्पादक उपयोग के माध्यम से आय बढ़ाने में भी मदद मिलेगी।

38 जैसा कि फ्रीलड सर्वेक्षण में समुदाय द्वारा साझा किया गया है

39 फ्रीलड सर्वेक्षण के दौरान समुदाय से प्राप्त जानकारी के आधार पर

40 ग्राम प्रधान से प्राप्त जानकारी के आधार पर

41 जैसा कि फ्रीलड सर्वेक्षणों के दौरान बताया गया



सोलररूफ टॉप की संस्थापना

चरण
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
	<p>पंचायती राज संस्थाओं/सरकारी (पंचायत भवन, प्राथमिक विद्यालय, जूनियर हाई स्कूल, स्वास्थ्य उप-केंद्र) की छतों पर सोलर रूफटॉप लगाना⁴²</p>	<ol style="list-style-type: none"> पक्के घरों पर सोलर रूफटॉप पैनलों की स्थापना सभी नई इमारतों (चरण II के दौरान निर्मित) पर सोलर रूफटॉप पैनलों की स्थापना सोलर रूफटॉप का नियमित रखरखाव 	<ol style="list-style-type: none"> पक्के घरों में सोलर रूफटॉप पैनलों की स्थापना को बढ़ाना सभी नई इमारतों (चरण III के दौरान निर्मित) पर सोलर रूफटॉप पैनलों की स्थापना सोलर रूफटॉप का नियमित रखरखाव
लक्ष्य	<ul style="list-style-type: none"> पंचायत भवन: 1,400 वर्गमीटर छत का क्षेत्रफल; 5 kWp प्राथमिक विद्यालय उदयपुरा: 700 वर्गमीटर, छत का क्षेत्रफल; 5 kWp प्राथमिक विद्यालय मुरली: 630 वर्ग मीटर; 5 kWp प्राथमिक शाला कालोनी : 525 वर्गमीटर; 5 kWp जूनियर हाई स्कूल: 4,200 वर्ग मीटर; 5 kWp स्वास्थ्य उप-केंद्र: 77 वर्गमीटर; 5 kWp <p>इस चरण में स्थापित कुल सोलर रूफटॉप क्षमता: 30 kWp पैदा हुई बिजली: प्रति वर्ष 40,176 kWh (प्रति दिन 110 यूनिट)</p> <p>कम किया गया GHG उत्सर्जन: प्रति वर्ष 32 tCO₂e</p> <p>हाल ही में शुरू की गई प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना के अति आवश्यक और महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, कुछ परिवार भी छतों पर सौर पीवी स्थापना के इस चरण का हिस्सा बन सकते हैं।</p>	<ol style="list-style-type: none"> 225 पक्के मकानों की छतों पर सोलर पैनलों की स्थापना (मौजूदा पक्के मकानों का 40%) स्थापित सोलर रूफटॉप क्षमता: 3 kWp इस चरण में स्थापित की गई सोलर रूफटॉप क्षमता: 675 kWp बिजली उत्पादन क्षमता: 9,03,960 kWh प्रति वर्ष⁴³ (24,767 यूनिट प्रतिदिन) <p>कम किया गया GHG उत्सर्जन: 741 tCO₂e प्रतिवर्ष</p> <ol style="list-style-type: none"> सोलर रूफटॉप का रखरखाव 	<ol style="list-style-type: none"> शेष 337 पक्के घरों की छतों पर सोलर पैनलों की स्थापना (मौजूदा पक्के घरों का 100%) इस चरण में स्थापित सौर छत क्षमता: 1,011 kWp बिजली उत्पादन क्षमता: प्रति वर्ष 13,53,931 kWh⁴⁴ (प्रति दिन 3,709 यूनिट) कम किया गया GHG उत्सर्जन: प्रति वर्ष : 1,110 tCO₂e⁴⁵ सोलर रूफटॉप का रखरखाव

42 घरों का औसत क्षेत्रफल 130 वर्ग मीटर माना जाता है, जिसमें 70% छत क्षेत्रफल

43 यह उत्पादन ग्राम पंचायत में विभिन्न प्रयोजनों के लिए मौजूदा बिजली खपत का 8 गुना से अधिक है।

44 यह उत्पादन ग्राम पंचायत में विभिन्न प्रयोजनों के लिए मौजूदा बिजली खपत का 12 गुना से अधिक है।

45 उत्सर्जन में कमी से ग्राम पंचायत को कार्बन स्यूटल बनने में मदद मिलेगी।

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
अनुमानित लागत	लागत: ₹15,00,000	लागत: ₹3,37,50,000 सांकेतिक सब्सिडी ⁴⁶ : ~40% (राज्य + CFA) प्रभावी लागत: ₹2.02 करोड़	लागत: ₹5,05,50,000 सांकेतिक सब्सिडी: ~40% (राज्य + CFA) प्रभावी लागत: ₹3.03 करोड़



एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	किसान समूहों आदि के मध्य एग्रो-फोटोवोल्टिक संबंधी जागरूकता बढ़ाने का कार्य।	बागवानी वाले क्षेत्र (जैसे सब्जियाँ) में एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना	बागवानी वाले क्षेत्र (जैसे सब्जियाँ) में एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना को बढ़ाना
लक्ष्य	किसानों के मध्य एग्रो-फोटोवोल्टिक पहल को प्रोत्साहित करने हेतु जागरूकता अभियान और उन्मुखीकरण सत्रों का आयोजन करना	2 हेक्टेयर बागवानी पर एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना स्थापित क्षमता: 500 kWp (250 किलोवाट प्रति हेक्टेयर) उत्पन्न बिजली: 6,69,600 kWh प्रति वर्ष ⁴⁷ ; प्रति दिन 1,835 यूनिट कम किया गया GHG उत्सर्जन: 549 tCO ₂ e प्रति वर्ष	2 हेक्टेयर बागवानी पर एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना स्थापित क्षमता: 500 kWp उत्पन्न बिजली : प्रति वर्ष 6,69,600 kWh कम किया गया GHG उत्सर्जन: प्रति वर्ष 549 tCO ₂ e
अनुमानित लागत		कुल लागत ⁴⁸ : ₹5 करोड़	कुल लागत: ₹5 करोड़

46 सब्सिडी परिवर्तनशील होती हैं और समय-समय पर राज्य और केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित विभिन्न मापदंडों के अनुसार परिवर्तन के अधीन हैं, इसलिए अनुमानित सब्सिडी राशि पिछले रुझानों और औसत पर आधारित है और वर्तमान समय में सटीक नहीं हो सकती है

47 यह उत्पादन ग्राम पंचायत में विभिन्न प्रयोजनों के लिए मौजूदा बिजली खपत का 6 गुना से अधिक है।

48 प्रौद्योगिकी के विकास के साथ कृषि PV की लागत कम हो रही है। हालाँकि, इसकी लागत का एक रूढ़िवादी अनुमान उच्चतर स्तर पर लगाया गया है। इसके अलावा, यह माना गया है कि किसान बागवानी और अन्य समान फसलों के लिए निर्धारित भूमि क्षेत्रों में भी फसल चक्रण अपनाते हैं। इसलिए, बागवानी में उपलब्ध भूमि का केवल एक प्रतिशत ही एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना के लिए ध्यान में रखा गया है।



सोलर पंप

चरण

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

I	II	III
2024-25 to 2026-27	2027-28 to 2029-30	2030-31 to 2034-35
<p>ग्राम पंचायत में मौजूदा डीजल पंप सेट को सोलर पंप से बदलना*</p> <p>* यदि सोलर पंप व्यवहार्य नहीं हैं, तो ऊर्जा कुशल पंप (EESL द्वारा किसान ऊर्जा डाक पंप) पर विचार किया जा सकता है</p>	<ol style="list-style-type: none"> ग्राम पंचायत में और अधिक डीजल पम्प सेटों को सोलर पम्पों से बदलना सभी नए पंप सेटों को सौर ऊर्जा से संचालित करने के लिए उनकी खरीद/उपयोग को प्रोत्साहित करना 	<ol style="list-style-type: none"> ग्राम पंचायत में और अधिक डीजल पम्प सेटों को सोलर पम्पों से बदलना सभी नए पंप सेटों को सौर ऊर्जा से संचालित करने के लिए उनकी खरीद/उपयोग को प्रोत्साहित करना

लक्ष्य

<p>60 मौजूदा डीजल पंप सेटों को सोलर पंप से बदलना</p> <p>स्थापित क्षमता: 330 kW</p> <p>उत्पन्न बिजली: प्रति वर्ष 44,19,36 kWh</p> <p>रोका गया डीजल का उपयोग: 23,400 लीटर/वर्ष</p> <p>कम गया GHG उत्सर्जन: प्रति वर्ष 63 tCO₂e</p>	<p>90 से अधिक डीजल पंपों को सोलर पंपों से बदलना (अर्थात चरण I और II में बदला गया मौजूदा डीजल पंपों का 50%)</p> <p>स्थापित क्षमता: 495 kW</p> <p>उत्पन्न बिजली: प्रति वर्ष 6,62,904 kWh</p> <p>कम किया गया डीजल का उपयोग: 35,100 लीटर/वर्ष</p> <p>कम किया गया GHG उत्सर्जन: प्रति वर्ष 94.5 tCO₂e</p>	<p>शेष 150 डीजल पंपों को सोलर पंपों से बदलना (अर्थात चरण I, II और III में 100% मौजूदा डीजल पंपों को बदलना)</p> <p>स्थापित क्षमता: 825 kW</p> <p>उत्पन्न बिजली: प्रति वर्ष 1,104,840 kWh</p> <p>कम की गई डीजल की खपत: 58,500 लीटर/वर्ष</p> <p>कम किया गया GHG उत्सर्जन: प्रति वर्ष 157.5 tCO₂e</p>
---	---	--

अनुमानित लागत

<p>कुल लागत: ₹1,80,00,000 - ₹3,00,00,000</p> <p>सब्सिडी: ~60% (राज्य + CFA)</p> <p>प्रभावी लागत: ₹72 लाख - ₹1.2 करोड़</p>	<p>कुल लागत: ₹2,70,00,000 - ₹4,50,00,000</p> <p>सब्सिडी: ~60% (राज्य + CFA)</p> <p>प्रभावी लागत: ₹1.08 करोड़ - ₹1.80 करोड़</p>	<p>कुल लागत: ₹4,50,00,000 - ₹7,50,00,000</p> <p>सब्सिडी: ~60% (राज्य + CFA)</p> <p>प्रभावी लागत: ₹1.8 करोड़ - ₹3 करोड़</p>
---	--	--



रसोई में स्वच्छ ईंधन का उपयोग

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> बायोगैस संयंत्रों का उपयोग करने के लिए पशुधन वाले परिवार उन्नत चूल्हों का प्रावधान (वर्तमान में बायोमास का उपयोग करने वाले सबसे कम आय वाले परिवार) 	<ol style="list-style-type: none"> बायोगैस संयंत्रों का उपयोग करने के लिए पशुधन वाले परिवार उन्नत चूल्हों का प्रावधान (वर्तमान में बायोमास का उपयोग करने वाले सबसे कम आय वाले परिवार) 	बायोगैस कवरेज का विस्तार
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> 116 परिवार बायोगैस संयंत्रों का उपयोग (25% परिवार जिनके पास मवेशी हैं) 255 परिवार उन्नत चुल्हे का उपयोग (50% परिवार जो वर्तमान में बायोमास का उपयोग करते हैं) <p>* आवश्यकता के अनुसार रसोई गैस (LPG) कवरेज का विस्तार</p>	<ol style="list-style-type: none"> 116 अधिक परिवार बायोगैस संयंत्रों का उपयोग (संचयी 50% परिवार) 255 परिवार उन्नत चूल्हे का उपयोग (50% परिवार जो वर्तमान में बायोमास का उपयोग करते हैं) 	अतिरिक्त 230 परिवार बायोगैस संयंत्रों का उपयोग 25% परिवार जिनके पास मवेशी हैं)
अनुमानित लागत	<ol style="list-style-type: none"> बायोगैस संयंत्र: ₹58,00,000 उन्नत चूल्हे: ₹7,65,000 <p>कुल लागत: ₹65.65 लाख</p>	<ol style="list-style-type: none"> बायोगैस संयंत्र: ₹58,00,000 उन्नत चूल्हे: ₹7,65,000 <p>कुल लागत: ₹65.65 लाख</p>	बायोगैस संयंत्र: ₹1,15,00,000 कुल लागत: ₹1.15 करोड़



चरण सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
	<ol style="list-style-type: none"> सभी PRI भवनों में सभी लाइट फिक्स्चर और पंखों को ऊर्जा कुशल फिक्स्चर से बदला जाना ग्राम पंचायत के प्रत्येक घर में कम से कम एक CFL बल्ब को एलईडी बल्ब और/या एलईडी ट्यूब लाइट से बदलना ग्रामवासियों को अन्य घरेलू उपकरणों को ऊर्जा कुशल उपकरणों (बीईई द्वारा 4-5 स्टार रेटिंग) के साथ बदलने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना। 	<ol style="list-style-type: none"> CFL बल्बों के स्थान पर एलईडी बल्बों और/या एलईडी ट्यूब लाइटों का उपयोग बढ़ाना घरों में 1 पारंपरिक पंखे को ऊर्जा कुशल पंखे से बदलना ग्रामवासियों को अन्य घरेलू उपकरणों को ऊर्जा कुशल उपकरणों (बीईई द्वारा 4-5 स्टार रेटिंग) के साथ बदलने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना। 	घरों में पारंपरिक पंखे की जगह ऊर्जा कुशल पंखों का उपयोग बढ़ाना
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> सभी पंचायती राज संस्थाओं/सरकारी भवनों में मौजूदा उपकरणों के स्थान पर 100% एलईडी ट्यूब लाइट और ऊर्जा कुशल पंखे लगाना 712 एलईडी बल्ब और 712 एलईडी ट्यूब लाइट स्थापित की गई (प्रति घर 1 ऊर्जा कुशल बल्ब और ट्यूब लाइट लगाई गई) 	<ol style="list-style-type: none"> सभी घरों में 2,136 एलईडी बल्ब और 1,424 ट्यूब लाइटें लगाना (प्रत्येक घर में 3 बल्ब और 2 ट्यूब लाइटें बदली गई) 712 ऊर्जा कुशल पंखे (प्रति परिवार 1) बदलना 	अतिरिक्त 1,424 ऊर्जा कुशल पंखे लगाना (प्रति घर 2)
अनुमानित लागत	<ol style="list-style-type: none"> एलईडी बल्ब की कीमत: ₹49,840 एलईडी ट्यूब लाइट की लागत: ₹1,56,640 <p>कुल लागत: ₹ 20.6 लाख</p>	<ol style="list-style-type: none"> एलईडी बल्ब की लागत: ₹1,49,520 एलईडी ट्यूब लाइट की लागत: ₹3,13,280 ऊर्जा कुशल पंखे की लागत: ₹7,90,320 <p>कुल लागत: ₹12.53 लाख</p>	<p>ऊर्जा कुशल पंखे की लागत: ₹15,80,640</p> <p>कुल लागत: ₹ 15.8 लाख</p>

49 कई दौर की चर्चाओं से प्राप्त मौजूदा फिक्स्चर की संख्या पर विवरण



मोलर स्ट्रीट लाइट

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
मुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> सड़कों, सार्वजनिक स्थानों और अन्य प्रमुख स्थानों पर सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइटों लगाना⁵⁰ सड़कों, फुटपाथों, सरकारी भवनों, सार्वजनिक स्थानों, जलाशयों के आसपास और अन्य प्रमुख स्थानों पर हाई मास्ट सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट्स लगाना 	<ol style="list-style-type: none"> अतिरिक्त सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट्स लगाना हाई मास्ट सोलर एलईडी लगाना मौजूदा स्ट्रीट लाइटों का रखरखाव और मरम्मत 	<ol style="list-style-type: none"> आवश्यकतानुसार अतिरिक्त सोलर एलईडी हाई मास्ट स्ट्रीट लाइटों की स्थापना मौजूदा स्ट्रीटलाइट्स का रखरखाव और मरम्मत
लक्ष्य	<ol style="list-style-type: none"> 50 सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट लगाना 5 हाई-मास्ट सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट्स लगाना⁵¹ 	<ol style="list-style-type: none"> 50 सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट लगाना 5 हाई-मास्ट सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट्स लगाना 	<ol style="list-style-type: none"> आवश्यकतानुसार अतिरिक्त सोलर एलईडी स्ट्रीटलाइटों की स्थापना आवश्यकतानुसार अतिरिक्त सोलर एलईडी हाई मास्ट स्ट्रीट लाइटों की स्थापना
अनुमानित लागत	<ol style="list-style-type: none"> 50 सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइटों की स्थापना: ₹5,00,000 5 हाई-मास्ट सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट्स: ₹2,50,000 <p>कुल लागत: ₹ 7,50,000</p>	<ol style="list-style-type: none"> 50 सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट की स्थापना: ₹5,00,000 5 हाई-मास्ट सोलर एलईडी स्ट्रीट लाइट्स: ₹2,50,000 <p>कुल लागत: ₹7,50,000</p>	

50 फ्रील्ड सर्वेक्षण के दौरान ग्राम पंचायत से प्राप्त सुझाव और ग्राम प्रधान के साथ आगे की चर्चा के आधार पर

51 ग्राम प्रधान से प्राप्त सुझाव

मौजूदा योजनाएं और कार्यक्रम

- उत्तर प्रदेश सौर ऊर्जा नीति, 2022⁵² निम्नलिखित प्रदान करती है:
 - » आवासीय क्षेत्र में सौर ऊर्जा की स्थापना पर सब्सिडी: एमएनआरई (MNRE) द्वारा केंद्रीय वित्तीय सहायता के अतिरिक्त ₹ 15,000/ किलोवाट से अधिकतम सीमा ₹ 30,000/- प्रति उपभोक्ता तक
 - » स्वयं के द्वारा रेस्को⁵³ मोड में संस्थानों में या यूपीनेडा (UPNEDA) के परामर्श के साथ संयंत्र की 3 प्रतिशत लागत के परामर्श शुल्क के साथ सौर ऊर्जा की स्थापना के प्रावधान
- ग्रिड कनेक्टेड सोलर रूफटॉप प्रोग्राम के माध्यम से एमएनआरई (MNRE) द्वारा केंद्रीय वित्तीय सहायता
 - » 3 किलोवाट क्षमता तक के आरटीएस सिस्टम के लिए 40 प्रतिशत तक सीएफए (CFA) दिया जाएगा। 3 किलोवाट से अधिक और 10 किलोवाट तक की क्षमता वाले आरटीएस सिस्टम के लिए, 40 प्रतिशत का सीएफए केवल पहले 3 किलोवाट की क्षमता के लिए लागू होगा और 3 किलोवाट से अधिक (10 किलोवाट तक) की क्षमता के लिए सीएफए (CFA) 20 प्रतिशत तक ही होगा।
 - » ग्रुप हाउसिंग सोसायटी/आवासीय कल्याण संघों (जीएचएस/आरडब्ल्यू (GHS/RWA)) के लिए सीएफए (CFA) आम सुविधाओं को बिजली की आपूर्ति के लिए आरटीएस संयंत्र की स्थापना के लिए 20 प्रतिशत तक सीमित है। जीएचएस/आरडब्ल्यू (GHS/RWA) के लिए सीएफए (CFA) के लिए पात्र क्षमता प्रति घर 10 kWp तक सीमित है और कुल 500 kWp से अधिक नहीं है
 - » गरीब परिवारों के लिए सोलर रूफटॉप की स्थापना पीएम-सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना⁵⁴ के अंतर्गत की जा सकती है। यह योजना 2 किलोवाट सिस्टम के लिए सिस्टम लागत का 60% केन्द्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) और 2 से 3 किलोवाट क्षमता के सिस्टम के लिए 40% अतिरिक्त सिस्टम लागत प्रदान करती है। केन्द्रीय वित्तीय सहायता (सीएफए) को 3 किलोवाट पर सीमित किया जाएगा। मौजूदा बेंचमार्क कीमतों पर, 1 किलोवाट सिस्टम के लिए 30,000 रुपये, 2 किलोवाट सिस्टम के लिए 60,000 रुपये और 3 किलोवाट सिस्टम या उससे अधिक के लिए 78,000 रुपये की सब्सिडी होगी।
- प्रधानमंत्री कुसुम योजना निम्नलिखित प्रदान करती है:
 - » प्रधानमंत्री कुसुम योजना का घटक ए, कृषि भूमि पर 500 kW और बड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों को स्थापित करने को बढ़ावा देती है।
 - » प्रधानमंत्री कुसुम योजना के घटक बी और सी के अंतर्गत, केंद्र और राज्य सरकार प्रति पंप के आधार पर 30 प्रतिशत की सब्सिडी प्रदान करेगी। किसानों को केवल 10 प्रतिशत की अग्रिम लागत का भुगतान करना होगा और बाकी का भुगतान बैंक को किशतों में किया जा सकता है।
- प्रधानमंत्री कुसुम योजना में उत्तर प्रदेश सरकार का योगदान:
 - » घटक सी -1 के तहत: किसानों को 60 प्रतिशत सब्सिडी के साथ स्थापित ऑन-ग्रिड पंपों का सौरीकरण (अनुसूचित जनजाति, वनटांगिया और मुसहर जाति के किसानों को 70 प्रतिशत सब्सिडी); यह एमएनआरई की प्रधानमंत्री कुसुम योजना के माध्यम से केंद्र सरकार से उपलब्ध सब्सिडी के अतिरिक्त है
 - » घटक सी -2 के तहत: एमएनआरई की प्रधानमंत्री कुसुम योजना के माध्यम से केंद्र सरकार द्वारा प्रदान की जा रही सब्सिडी के अलावा राज्य सरकार द्वारा ₹ 50 लाख प्रति मेगावाट की वार्डिबिलिटी गैप फंडिंग (वीजीएफ (VGF)) प्रदान करके अलग-अलग कृषि फीडरों का सोलरइजेशन
- ग्राम पंचायतों⁵⁵ में एलईडी स्ट्रीट लाइटिंग की योजनाएं:
 - » EESL पारंपरिक स्ट्रीट लाइटों को अपनी स्वयं की लागत पर एलईडी स्ट्रीट लाइटों से बदलता है और 7 वर्षों तक एलईडी बल्बों को मुफ्त बदलता है और रखरखाव करता है।
 - » अटल ज्योति योजना और MNRE सौर ऊर्जा स्ट्रीटलाइट प्रोग्राम 12 वाट की एलईडी और 3 दिनों की बैटरी बैक-अप के साथ सौर ऊर्जा वाली स्ट्रीट लाइट की स्थापना हेतु सब्सिडी प्रदान करते हैं।

52 https://invest.up.gov.in/wp-content/uploads/2023/02/Uttar_Pradesh_Solar_Energy_Policy_2022.pdf

53 तृतीय पक्ष (RESCO मोड) (नवीकरणीय ऊर्जा आपूर्ति कंपनी)

54 <https://pmsuryaghar.gov.in/>

55 ईईएसएल (EESL) द्वारा स्ट्रीट लाइटिंग राष्ट्रीय कार्यक्रम।

- ग्राम उजाला योजना⁵⁶ :
 - » ₹ 10 प्रति बल्ब की सस्ती कीमत पर एलईडी बल्ब उपलब्ध हैं
 - » ग्रामीण ग्राहकों को काम कर रहे इन्कन्डेसन्ट बल्बों के बदले में तीन साल की वारंटी के साथ 7-वाट और 12-वाट के एलईडी बल्ब दिए जाएंगे
- कोल्ड स्टोरेज सेट-अप के लिए सब्सिडी
 - » परियोजना लागत का 35 प्रतिशत क्रेडिट लिंक्ड बैंक एंडेड सब्सिडी के रूप में सरकारी सहायता 2 योजनाओं के माध्यम से उपलब्ध है
 - कृषि सहयोग और किसान कल्याण विभाग (DAC&FW) एकीकृत बागवानी के लिए विकास मिशन (MIDH) कार्यान्वित कर रहा है।
 - राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड (NHB) बागवानी के उत्पादों के लिए कोल्ड स्टोरेज और स्टोरेज के निर्माण/विस्तार/आधुनिकीकरण के लिए पूंजीगत निवेश सब्सिडी "नामक योजना कार्यान्वित कर रहा है
 - » प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना के अंतर्गत, एकीकृत कोल्ड चेन, मूल्य संवर्धन और संरक्षण अवसंरचना पर घटक 35 प्रतिशत की दर से अनुदान-सहायता के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करता है जिसे गैर-बागवानी, बागवानी, डेयरी, मांस और पोल्ट्री के वितरण की सुविधा के लिए संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला⁵⁷ के साथ बुनियादी ढांचे की सुविधा के निर्माण हेतु प्राप्त किया जा सकता है। यह योजना खेत स्तर पर कोल्ड चेन के बुनियादी ढांचे के निर्माण पर विशेष जोर देने के साथ-साथ परियोजना नियोजन में लचीलेपन की अनुमति देती है।
- EESL कार्बन फाइनेंसिंग का लाभ उठाकर सौर ऊर्जा आधारित इंडकेशन कुकिंग सलूशन के लिए बाजार आधारित हस्तक्षेपों को शुरू करने की योजना बना रहा है
- 15वें वित्त आयोग और स्वच्छ भारत मिशन - ग्रामीण (SBM-G) के अंतर्गत गोबरधन (गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सिज धन) योजना जैसी योजनाओं के माध्यम से धन का लाभ उठाना।
 - » SBM-G के अंतर्गत गोबरधन योजना 2020-21 से 2024-25 की अवधि के लिए क्लस्टर/सामुदायिक स्तर के बायोगैस संयंत्रों की स्थापना हेतु प्रति जिला ₹ 50.00 लाख तक की वित्तीय सहायता प्रदान करती है।⁵⁸
- उत्तर प्रदेश जैव-ऊर्जा नीति 2022⁵⁹ गोबरधन योजना के अंतर्गत भारत सरकार से उपलब्ध प्रोत्साहन के अतिरिक्त CBG संयंत्रों को स्थापित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है:
 - » कंप्रेसड बायोगैस (CBG) उत्पादन संयंत्र की स्थापना पर ₹75 लाख प्रति टन से अधिकतम ₹20 करोड़ तक का प्रोत्साहन
 - » विकास प्राधिकरणों द्वारा प्रभारित विकास शुल्क पर छूट
 - » स्टॉप ड्यूटी और इलेक्ट्रिसिटी ड्यूटी पर 100 प्रतिशत की छूट
- MNRE ने राष्ट्रीय जैव-ऊर्जा कार्यक्रम के अम्ब्रेला के अंतर्गत अपशिष्ट से ऊर्जा (WTE) कार्यक्रम लागू किया है:
 - » यह कार्यक्रम शहरी, औद्योगिक और कृषि अपशिष्ट से बायोगैस के उत्पादन के लिए संयंत्रों की स्थापना का समर्थन करता है
 - » बायोगैस उत्पादन के लिए उपलब्ध वित्तीय सहायता ₹0.25 करोड़ प्रति 12000 m³/दिन है⁶⁰
- पीएम-सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना एक केंद्रीय योजना है जिसका उद्देश्य भारत में उन घरों को मुफ्त बिजली प्रदान करना है, जो सोलर रूफटॉप स्थापित करने का विकल्प चुनते हैं⁶¹.

56 ग्राम उजाला योजना ग्रामीण क्षेत्रों में एक करोड़ एलईडी बल्ब वितरित करती है (फरवरी 2023), PIB)

57 यानी फार्म स्तर पर प्री-कूलिंग, वजन करना, छंटाई, ग्रेडिंग, वैक्सिंग सुविधाएं, बहु उत्पाद/बहु तापमान वाला कोल्ड स्टोरेज, CA स्टोरेज, पैकिंग सुविधा, IQF, वितरण केंद्र और रीफर वैन में ब्लास्ट फ्रीजिंग, मोबाइल कूलिंग यूनिट्स

58 <https://pib.gov.in/PressReleaseSelfframePage.aspx?PRID=1883926>

59 <https://invest.up.gov.in/bio-energy-enterprises-promotion-programme-2022/>

60 <https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1896067>

61 <https://pmsuryaghar.gov.in/>

वित्त के अन्य स्रोत

- सोलर रूफटॉप, सोलर पंप आदि की खरीद हेतु ऋण के लिए स्थानीय बैंकों, सूक्ष्म वित्त संस्थानों और सहकारी बैंकों के साथ संबंध का पता लगाना
- एग्रो-फोटोवोल्टिक के लिए सोलर डेवलपर्स के साथ साझेदारों का पता लगाना
- CSR निधियों का इस्तेमाल निम्नलिखित के लिया जा सकता है:
 - » सूक्ष्म-वित्त संस्थानों द्वारा दिए गए परिक्रामी निधि मॉडल के माध्यम से योजना/कार्यक्रम हेतु सब्सिडी के अतिरिक्त सोलर रूफटॉप/एग्रो-फोटोवोल्टिक्स/सोलर पंप की स्थापना हेतु पूंजीगत लागत सुरक्षित करना
 - » ग्राम पंचायत में अपनाई गई विभिन्न स्वच्छ प्रौद्योगिकियों के लिए ग्राम समुदाय के सदस्यों/SHG के सदस्यों को " संचालन एवं रखरखाव " का प्रशिक्षण प्रदान करना
 - » रूफटॉप सोलर (उत्तर प्रदेश सौर नीति, 2022) और सौर सिंचाई (प्रधानमंत्री-कुसुम, उत्तर प्रदेश सौर सिंचाई योजना) को बढ़ावा देने वाली वर्तमान सरकारी योजनाओं/ कार्यक्रमों पर जागरूकता अभियान का आयोजन करना

प्रमुख विभाग

- उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (यूपीएनईडीए)
- उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल)
- दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
- पंचायती राज विभाग
- ग्रामीण विकास विभाग
- कृषि विभाग
- शिक्षा विभाग



6. सतत और उन्नत गतिशीलता

संदर्भ एवं मुद्दे

- उदयपुरा में कुल 291 आंतरिक दहन इंजन (ICE) वाहन हैं; 250 दोपहिया, 3 जीप और 38 ट्रैक्टर।⁶²
- किसानों द्वारा कृषि उपज / माल के परिवहन के लिए, छोटा हाथी (मिनी ट्रक) या ट्रैक्टर का उपयोग किया जाता है। जिन किसानों के पास ऐसे वाहन नहीं हैं, वे उन्हें पड़ोसी किसानों से किराए पर लेते हैं।⁶³
- ICE वाहनों द्वारा कुल ईंधन खपत ~152 kL डीजल और ~16 kL पेट्रोल प्रति वर्ष है। कुल मिलाकर, परिवहन क्षेत्र में खपत किए गए ईंधन के कारण ~64 tCO₂e उत्सर्जन हुआ है।⁶⁴
- इसके अतिरिक्त, फ्रील्ड सर्वेक्षण से पता चलता है कि ग्राम पंचायत के अंदर और बाहर सड़कों के कई हिस्से जलभराव से प्रभावित हैं, जिन्हें ऊंचा करने की आवश्यकता है।

इसलिए, परिवहन अवसंरचना को बेहतर बनाने और ई-मोबिलिटी समाधानों की ओर बदलाव शुरू करने की काफी गुंजाइश है।



मौजूदा सड़क के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना

चरण	I 2024-25 से 2026-27	II 2027-28 से 2029-30	III 2030-31 से 2034-35
सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	<ol style="list-style-type: none"> सड़क का RCC/इंटरलॉकिंग का काम नई नालियों का निर्माण 	जब आवश्यक हो तो सड़क के बुनियादी ढांचे का रखरखाव और मरम्मत	यदि आवश्यक हो तो सड़क के बुनियादी ढांचे का निरंतर रखरखाव और मरम्मत

62 फ्रील्ड सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के अनुसार

63 फ्रील्ड सर्वेक्षण के दौरान समुदाय से प्राप्त जानकारी और ग्राम प्रधान के साथ चर्चा के आधार पर

64 फ्रील्ड सर्वेक्षण के दौरान समुदाय से प्राप्त जानकारी के आधार पर

लक्ष्य

- 2.5 km की कुल सड़क लंबाई के लिए सड़क RCC/ इंटरलॉकिंग
- 7.6 km लम्बी नई आंतरिक सड़क का निर्माण

सड़कों का नियमित और समय पर रखरखाव/मरम्मत

सड़कों का नियमित और समय पर रखरखाव/मरम्मत

अनुमानित लागत

- सड़क आरसीसी/इंटरलॉकिंग: ₹4,00,000
 - 7.6 km नई आंतरिक सड़क का निर्माण: ₹87,00,000
- कुल लागत: ₹91 लाख

आवश्यकता के अनुसार

आवश्यकतानुसार लागत



मध्यवर्ती सार्वजनिक परिवहन

चरण



2024-25 से 2026-27



2027-28 से 2029-30



2030-31 से 2034-35

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

पंचायत के अंतिम छोर तक संपर्क स्थापित करने के लिए ई-ऑटोरिक्षा की शुरुआत

मांग के आधार पर अधिक ई-ऑटोरिक्षा खरीदे जाना

आवश्यकता के अनुसार अधिक ई-ऑटोरिक्षा खरीदे जाना

लक्ष्य

आवश्यकतानुसार ई-ऑटोरिक्षा को बेड़े में शामिल किया जाना

आवश्यकतानुसार ग्राम पंचायत के बेड़े में और अधिक ई-ऑटोरिक्षा शामिल किया जाना

आवश्यकतानुसार बेड़े में अतिरिक्त ई-ऑटोरिक्षा शामिल किया जाना

अनुमानित लागत⁶⁵

आवश्यकतानुसार

आवश्यकतानुसार

आवश्यकतानुसार

65 ई-ऑटोरिक्षा की कीमत ₹1,50,000 से ₹4,00,000 या इससे अधिक तक होती है, जो कॉन्फिगरेशन, बैटरी के प्रकार आदि पर निर्भर करती है। ई-ऑटोरिक्षा की कीमत मूल्य बैंड के मध्य में मानी जाती है, जिसमें मुख्य रूप से परोपकारी संस्थाओं और अन्य फंडिंग एजेंसियों से संभावित सब्सिडी/अनुदान/प्रारंभिक पूंजी/व्यवहार्यता गैप फंडिंग को ध्यान में रखा जाता है।



ई-वाहनों (ई-टू व्हीलर, ई-गुड्स कैरियर और ई-ट्रैक्टर) को अपनाने को बढ़ावा देना

चरण	2024-25 से 2026-27	2027-28 से 2029-30	2030-31 से 2034-35
	सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ <ol style="list-style-type: none"> इलैक्ट्रिक वाहन पर सरकारी प्रोत्साहन और योजनाओं सहित निजी ई-वाहनों (2-व्हीलर) को अपनाने के बारे में जानकारी प्रसारित करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करना ICE वाहनों की बजाय ई-वाहनों के दीर्घकालिक लाभों के प्रति उपयोगकर्ता समूहों (किसानों/लॉजिस्टिक मालिकों/उद्यमियों) को संवेदनशील बनाकर डीजल ट्रैक्टरों और माल परिवहन वाहन के इलैक्ट्रिक विकल्प को बढ़ावा देना ई-गुड्स कैरियर्स और ई-ट्रैक्टर किराये पर लेने की सुविधा स्थापित करना ('आजीविका और हरित उद्यमिता को बढ़ावा देना' अनुभाग में विस्तार से बताया गया है) 	<ol style="list-style-type: none"> ई-वाहनों के दीर्घकालिक लाभों के साथ-साथ उनके लाभ के लिए उपलब्ध कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में नियमित कार्यशालाएं प्राइवेट 2-व्हीलर्स को ई-2 व्हीलर से बदलना मौजूदा ई-गुड्स कैरियर और ई-ट्रैक्टरों का रखरखाव और मरम्मत 	<ol style="list-style-type: none"> ई-वाहनों के दीर्घकालिक लाभों के साथ-साथ उनके लाभ के लिए उपलब्ध कार्यक्रमों और योजनाओं के बारे में नियमित कार्यशालाएं अतिरिक्त प्राइवेट -2व्हीलर्स को ई-2 व्हीलर से बदलना मौजूदा ई-गुड्स कैरियर और ई-ट्रैक्टरों का रखरखाव और मरम्मत
लक्ष्य <p>कुल 5 ई-ट्रैक्टर और 5 ई-माल वाहक का क्रय किया जाना</p>	<ol style="list-style-type: none"> आवश्यकता के अनुसार अतिरिक्त ई-ट्रैक्टरों और ई-गुड्स कैरियर की खरीद 10 % प्राइवेट 2 व्हीलर वाहनों को ई-2 व्हीलर वाहनों से बदला जाना 	<ol style="list-style-type: none"> आवश्यकता के अनुसार अधिक ई-ट्रैक्टर और ई-गुड्स कैरियर की खरीद अतिरिक्त 30% प्राइवेट 2 व्हीलर को ई-2 व्हीलर से बदला जाना 	

1. 5 ई-ट्रैक्टर: ₹30,00,000
 2. 5 ई-गुड्स कैरियर: ₹25,00,000
– ₹50,00,000
- कुल लागत: ₹55 लाख– ₹80 लाख

बाजार दर के अनुसार लागत

बाजार दर के अनुसार लागत

मौजूदा योजनाएं और कार्यक्रम

- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और MGNREGS की सहायता से सड़क के बुनियादी ढांचे की मरम्मत और उसमें सुधार किया जा सकता है
- उत्तर प्रदेश इलैक्ट्रिक वाहन विनिर्माण और गतिशीलता नीति, 2022 में प्रावधान है
 - » खरीदारों के लिए 100% पंजीकरण शुल्क और रोड टैक्स में छूट (पॉलिसी अवधि के दौरान)
 - » 1 साल की अवधि में डीलरों के माध्यम से खरीदारों को शुरुआती प्रोत्साहन के रूप में (एक बार) खरीद सब्सिडी - ई-माल वाहक: प्रति वाहन ₹1,00,000 तक पूर्व-फैक्ट्री लागत का 10 प्रतिशत; 2-व्हीलर इलैक्ट्रिक वाहन : प्रति वाहन ₹5000 तक पूर्व-फैक्ट्री लागत का 15 प्रतिशत; 3-व्हीलर इलैक्ट्रिक वाहन: प्रति वाहन ₹5000 तक पूर्व-फैक्ट्री लागत का 15 प्रतिशत⁶⁶
- ई-रिक्शों के लिए सब्सिडी का लाभ फास्टर एडॉप्शन एंड मैनुफैक्चरिंग ऑफ इलैक्ट्रिक व्हीकल्स इन इंडिया फेज II (फेम II) स्कीम के तहत भी लिया जा सकता है

वित्त के अन्य स्रोत

- ग्राम पंचायत का रिसोर्स एनवलप और OSR
- सीएसआर के समर्थन से बैंकों एवं सूक्ष्म वित्त संस्थानों से ऋण

प्रमुख विभाग

- अवसंरचना एवं औद्योगिक विकास विभाग
- परिवहन विभाग
- पंचायती राज विभाग
- ग्राम्य विकास विभाग

66 सरकार द्वारा दी जाने वाली सब्सिडी समय-समय पर सब्सिडी की मात्रा तथा लाभार्थियों की संख्या दोनों के संदर्भ में परिवर्तन के अधीन होती है। इसलिए, इस योजना के किसी भी हिस्से में उल्लिखित सब्सिडी केवल सांकेतिक हैं, और खरीद के समय इसकी पुष्टि की जानी चाहिए।



7. आजीविका और हरित उद्यमशीलता को बढ़ाना

कृषि और पशुपालन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं और 75 प्रतिशत से अधिक परिवार इन गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। कृषि और पशुपालन, दोनों ही क्षेत्र बदलती जलवायु एवं वर्तमान में असंवाहनीय प्रथाओं के कारण आजीविका की असुरक्षा से भरे हैं। इसलिए, आबादी के एक बड़े हिस्से की आजीविका अनिश्चित है। ग्राम पंचायत में आय का अन्य स्रोत गैर-कृषि मजदूरी है। पिछले 5 वर्षों में लगभग 37 परिवार बेहतर आजीविका की तलाश में ग्राम पंचायत से पलायन कर गए हैं। यह प्रवृत्ति अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में देखी जाती है। इसलिए, बताई गई गतिविधियों के अलावा, ग्राम पंचायत के भीतर नौकरियों के अवसर सीमित हैं। इस कार्ययोजना में बताए गए सुझाव आने वाले वर्षों में नए व्यवसायों और नौकरी के अवसरों के लिए दिशा प्रदान करती हैं। इनका विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:



प्लास्टिक-वैकल्पिक उत्पादों का विनिर्माण और बिक्री

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. प्लास्टिक के विकल्प वाली सामग्रियों (बैग, घरेलू सजावट की वस्तुएं, कटलरी, स्टेशनरी आइटम, फर्नीचर आदि) से उत्पाद बनाने के लिए महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय लघु उद्यमियों को शामिल करना।
2. पंचायत, महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय लघु उद्यमियों के बीच साझेदारी मॉडल विकसित करना
3. इसके लिए क्षमता निर्माण:
 - » उत्पाद श्रेणी का विविधीकरण
 - » ग्राम पंचायत के अंदर और बाहर उत्पादों के विपणन/बिक्री को बढ़ाना

प्रारंभिक स्तर पर शामिल:

- 100 महिलाएं
- 7 स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) (वर्तमान में ज्यादातर पशुपालन और कृषि में लगे हुए हैं)
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल जैसे बेकार कपड़ा, पुनर्चक्रण योग्य कचरा, बेंत, बांस आदि का उपयोग करना

इस ग्राम पंचायत और आसपास के गांवों से दीर्घकालिक स्तर पर शामिल होना:

- अतिरिक्त 200 महिलाएँ
- अतिरिक्त एसएचजी बनाना, MSME और व्यक्तिगत उद्यमियों को शामिल करना

लक्ष्य



जैविक कचरे को खाद बनाकर उर्वरक के रूप में बेचना

सुझाई गई जलवायु
स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. खाद बनाने और उसकी बिक्री के लिए पंचायत, समुदाय के सदस्यों और किसान समूहों के बीच साझेदारी स्थापित करना।
2. निम्न पर प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों का क्षमता निर्माण:
 - » कम्पोस्ट और वर्मीकम्पोस्ट बनाने की तकनीकियाँ
 - » ग्राम पंचायत के भीतर और बाहर खाद का विपणन और बिक्री

लक्ष्य

1. तत्काल लक्ष्य:

- » घरेलू कचरे (जैविक) से उत्पन्न कम्पोस्ट/ वर्मी-कम्पोस्ट: 100 किलोग्राम प्रति दिन; 36,000 किलोग्राम प्रति माह (वर्तमान अपशिष्ट उत्पादन के अनुसार)

2. दीर्घकालिक लक्ष्य:

- » जैविक अपशिष्ट उत्पादन के अनुसार कम्पोस्ट/ वर्मी-कम्पोस्ट उत्पादन को बढ़ाना (जनसंख्या वृद्धि के आधार पर)



ई-माल वाहक और ई-ट्रैक्टर किराए पर लेने की सुविधा

सुझाई गई जलवायु
स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. ई-माल वाहक और ई-ट्रैक्टर को व्यवसायिक रूप से किराए पर लेना (किराये के आधार पर) उत्तर प्रदेश इलैक्ट्रिक वाहन नीति 2022 और फेम-इंडिया स्कीम फेज- II के अंतर्गत प्रोत्साहन के माध्यम से हरित उद्यमिता के अवसर प्रस्तुत करता है।
2. ई-ट्रैक्टरों एवं ई-गुड्स कैरियर्स के इस्तेमाल के प्रति उपयोगकर्ता समूहों (किसानों/लॉजिस्टिक स्वामियों) को संवेदनशील बनाना
3. ई-ट्रैक्टरों का व्यावसायिक रूप से किराये पर लेना (किराये के आधार पर) युवाओं के लिए हरित उद्यमिता के अवसर प्रस्तुत करता है।

तत्काल लक्ष्य:

1. 2 या 3 ई-ट्रैक्टर (अनुमानित लागत: 6 लाख रुपये प्रति ई-ट्रैक्टर)
2. 2 या 3 इलैक्ट्रिक वाहन मिनी गुड्स ट्रांसपोर्ट ट्रक (मिनी गुड्स EV ट्रांसपोर्ट ट्रक की अनुमानित लागत: लगभग 9.2 लाख)

मध्य- अवधि लक्ष्य:

2/3 ई-ट्रैक्टर, 2/3 इलैक्ट्रिक वाहन मिनी माल परिवहन ट्रकों की अतिरिक्त खरीद

लक्ष्य



सौर ऊर्जा संचालित कोल्ड स्टोरेज के इस्तेमाल के माध्यम से आजीविका में सुधार

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करने के लिए छोटे और मध्यम किसानों (ग्राम पंचायत और आसपास के गांवों के भीतर) को सौर ऊर्जा संचालित कोल्ड स्टोरेज में जगह किराए पर देकर उद्यमिता के अवसर
2. फलों, सब्जियों, दूध और दूध उत्पादों के भंडारण के लिए उद्यमियों, किसान समूहों, सहकारी समितियों (जैसे पारस) और अन्य संस्थागत खरीदारों के बीच बिजनेस/व्यवसाय मॉडल/गठजोड़

लक्ष्य

5 से 10 मीट्रिक टन क्षमता वाले कोल्ड स्टोरेज की स्थापना लागत: ₹8,00,000 से ₹15,00,000



प्राकृतिक औषधियों और पूरकों के उत्पादन और बिक्री के लिए आरोग्य वन

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. विकास के माध्यम से समुदायों के लिए आजीविका सृजन और प्राकृतिक औषधियों एवं अनुपूरकों के उत्पादन के लिए आरोग्य वन का रखरखाव
2. कौशल विकास एवं प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय औषधीय एवं सुगंध पौधा संस्थान, लखनऊ के साथ साझेदारी

लक्ष्य

लगभग 0.1 हेक्टेयर भूमि को आरोग्य वन के रूप में स्थापित किया जाएगा



नवीकरणीय ऊर्जा प्रतिष्ठानों (सोलर और बायो-गैस) का संचालन एवं रखरखाव

मुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ

1. नवीकरणीय ऊर्जा रखरखाव पर कौशल विकास के लिए समुदाय के सदस्यों विशेष रूप से स्नातकों, युवा समूहों और किसान समूहों का प्रशिक्षण और क्षमता विकास।
2. ग्राम पंचायत के भीतर सोलर और बायो-गैस स्थापना तथा संचालन एवं रखरखाव व्यवसायों की स्थापना में CSR, केंद्र और राज्य सरकार की कौशल योजनाओं से सहायता

वित्त पोषण एवं कौशल विकास

- हरित उद्यमिता और आजीविका का समर्थन करने के लिए बैंकिंग और वित्तीय संस्थानों को संवेदनशील बनाना (विभिन्न क्रेडिट योजनाओं, साझेदारी/राजस्व मॉडल के माध्यम से); सरकारी ऋण योजनाएं जैसे मुद्रा ऋण, स्त्री शक्ति योजना आदि महिला उद्यमियों का समर्थन कर सकती हैं।
- आवश्यक कौशल विकास सहायक सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से प्रदान किया जाता है जैसे: मेक इन इंडिया, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (DST), राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन और अटल इनोवेशन मिशन द्वारा संचालित उद्यमी विकास कार्यक्रम।

इस अनुभाग में ग्राम पंचायत स्तर पर कार्यान्वयन के लिए अतिरिक्त विचार के लिए संभावित संस्तुतियों की एक सूची दी गई है। इन संस्तुतियों को भारत के विभिन्न हिस्सों और भौगोलिक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक लागू किया गया है जिनमें उत्तर प्रदेश के साथ बहुत समानताएं हो सकती हैं।

इन्हें मुख्य अनुशंसाओं में शामिल न करने का कारण यह है कि यह संस्तुतियां/परियोजनाएं उत्तर प्रदेश सरकार की किसी भी वर्तमान योजना या कार्यक्रम या केन्द्र प्रायोजित योजनाओं के दायरे में नहीं आती हैं। इसलिए इन परियोजनाओं का कार्यान्वयन वैकल्पिक वित्तपोषण विकल्पों, जैसे स्व-वित्तपोषण, CSR या ऐसे अन्य स्रोतों के माध्यम से करना होगा।

यदि यह परियोजनाएं लागू की जाती हैं, तो इनके माध्यम से समुदायों की अनुकूली क्षमताओं को और मजबूत करने की संभावना हो सकती है एवं इनके परिणामस्वरूप आजीविका में वृद्धि भी हो सकती है।

1. सौर ऊर्जा संचालित कोल्ड स्टोरेज इकाई (एफपीओ, एसएचजी व किसान):

- फसल कटाई के बाद की दक्षता बढ़ाने और नुकसान को कम करने के लिए सौर ऊर्जा से चलने वाली कोल्ड स्टोरेज इकाई हैं।
- यह किसानों को संकटपूर्ण बिक्री से बचने में मदद करता है और किसानों की आय में सुधार करता है।

ये गतिविधि "आजीविका और उद्यमिता को बढ़ाना" अनुभाग में चर्चा की गई पहलों को मजबूत करने में सहायता करेगी

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण : 67,68,69:

- हैदराबाद, तेलंगाना में कट्टनगुर फार्मर्स प्रोड्यूसर्स कंपनी लिमिटेड।
- घुम्मर किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) राजस्थान के पाली जिले की बाली तहसील के नाना गांव में स्थित है।

2. सौर निष्क्रिय डिजाइन और निष्क्रिय शीतलन:

नए निर्माण और रेट्रोफिटिंग के लिए (जहां भी संभव हो): ऊर्जा की मांग को कम करने और ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के लिए आवासीय घरों और प्रशासनिक भवनों में टिकाऊ डिजाइन के साथ स्थानीय और पारंपरिक सामग्री को बढ़ावा देना चाहिए:

- घरों में सौर ज्यामिति के अनुसार भवन का अभिविन्यास करना चाहिए।
- घरों में प्राकृतिक वायु का कुशल संचलन होना चाहिए।
- घरों में सौर चिमनी के साथ पवन टॉवर का उपयोग करना चाहिए।
- घरों में प्राकृतिक प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए (पारंपरिक विद्युत उपकरण जैसे बल्ब, ट्यूबलाइट आदि के उपयोग को कम करना)।
- घरों में ऊर्जा संरक्षण गतिविधियाँ करनी चाहिए।
- जल निकास और डिजाइन किए गए परिदृश्य (वृक्षारोपण/बागवानी) करना चाहिए।

यह गतिविधि "स्वच्छ, सतत, किफायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुंच" अनुभाग में चर्चित पहलों को मजबूत करेगी।

67 https://selcofoundation.org/wp-content/uploads/2023/08/Compendium_Updated_20230922.pdf

68 <https://www.opportunityindia.com/article/empowering-women-fpo-through-solar-power-ghummar-fpo-34521>

69 <https://www.ecozensolutions.com/ecofrost/fpos-leverage-agri-infra-funds-for-ecofrost.html>

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

राजकुमारी रत्नावती बालिका विद्यालय⁷⁰ का थार रेगिस्तान, राजस्थान का निर्माण गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली 400 से अधिक लड़कियों के लिए किया गया है जिसमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित उपायों का उपयोग किया गया है :

- थर्मल आराम को अधिकतम करने के लिए बिल्डिंग ओरिएंटेशन पर ध्यान दिया गया है।
- प्रकाश और पंखे चलाने के लिए स्कूल के छतों पर सौर पैनल लगाये गए हैं।
- सोलर पैनल कैनोपी और स्क्रीन स्कूल के कमरों में ज्यादा गर्मी होने से बचाते हैं।
- छत का अण्डाकार आकार शीतलता (वायुप्रवाह) उत्पन्न करता है।
- इमारत की दीवारें हवा के प्रवाह को बढ़ाने में मदद करती हैं और धूप व रेत को स्कूल के कमरों में आने से रोकती हैं।
- निर्माण के लिए स्थानीय सामग्री का उपयोग किया गया है।

सोलर पैसिव कॉम्प्लेक्स, पंजाब ऊर्जा विकास एजेंसी (PEDA), चंडीगढ़⁷¹:

- भवन में एकीकृत सौर ऊर्जा संयंत्र से 25 किलोवाट की बिजली का उत्पादन किया जाता है।
- सौर ज्यामिति के अनुसार अभिविन्यास किया गए हैं।
- भवन की छत (डिज़ाइन+सामग्री) गर्मी से रहत देने के उद्देश्य से बनाई गई।
- सौर ऊर्जा से कमरों में एयर कंडीशनर और प्रकाश की जरूरत को पूरा किया जाता है (उदाहरण के लिए, लाइट वॉल्ट, सौर चिमनी के साथ पवन टॉवर)।
- शीतलन और वायु शोधन के लिए छोटे तालाब और वृक्षारोपण (पेड़, झाड़ियाँ और घास)।

3. सौर ऊर्जा संचालित RO जल शोधन प्रणाली/ जल एटीएम कियोस्क का निर्माण:

सौर-आधारित आरओ (RO) जल शोधन प्रणाली स्वच्छ पेयजल की समस्या के लिए एक सतत और लागत प्रभावी समाधान प्रदान करती है। यह पानी के पुनः उपयोग को बढ़ावा देते हुए समुदाय को सुरक्षित पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करता है। पेयजल की गुणवत्ता की समस्या से जूझ रही ग्राम पंचायत के लिए यह पहल लाभदायक हो सकती है।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

हिवरा लाहे गांव, जिला-वाशिम, राज्य-महाराष्ट्र⁷²:

- सीएसआर समर्थन से सौर ऊर्जा संचालित जल शोधन प्रणाली/ जल एटीएम कियोस्क (समुदाय आधारित) को स्थापित किया गया।
- समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार देखा गया।
- प्रणाली के संचालन और प्रबंधन के लिए ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति को सक्षम बनाया गया।
- इसी तरह की पहल गुजरात, तेलंगाना, राजस्थान आदि राज्यों में भी की गई है।

70 <https://www.avontuura.com/rajkumari-ratnavati-girls-school-diana-kellogg-architects>

71 <https://peda.gov.in/solar-passive-complex>

72 <https://yraindia.org/wp-content/uploads/2019/12/RO-plant-Success-story-in-Village-Hiwara-HDB-project.pdf>

4. सौर ऊर्जा संचालित पशु शेड का निर्माण:

पशु शेड मवेशियों को तीव्र गर्मी और शीतलहर से बचाने के लिए सौर ऊर्जा संचालित अनुकूली उपाय हैं। इस पहल में पशु शेड की छतों पर सौर ऊर्जा पैनल लगाकर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का शमन करने में सहायक हैं। यह सौर ऊर्जा संचालित पशु शेड बिजली की मांग की भी पूर्ति कर सकते हैं। यह ऊर्जा की मांग में कमी और निष्क्रिय शीतलन और वेंटिलेशन प्रदान करने में सहायक हैं, इसके अलावा पशु शेड अन्य ऊर्जा की जरूरत को पूरा करता है जैसे की चारे की तैयारी और शेड में संचालन करने में ऊर्जा की जरूरत। अतिरिक्त उत्पादित बिजली को ग्रिड में डाला जा सकता है जिससे किसानों को अतिरिक्त आय उत्पन्न करने का स्रोत मिल सकता है।

इस तरह के पशु शेड बायोगैस उत्पादन और पशु अपशिष्ट (गोबर) से उर्वरक तैयार करने में भी मदद करेंगे। ये पशु शेड उचित पृथक और पशुओं को सुरक्षित स्थान प्रदान करके पशुओं में फैलने वाले रोगों के संचरण को कम करने में भी मदद कर सकते हैं।

यह गतिविधि संस्त्रुतियों के " सतत कृषि" खंड में सतत पशुधन प्रबंधन सुझावों को मजबूत कर सकती है।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

जिले: लुधियाना, भटिंडा और तरनतारन, पंजाब^{73,74}

- यह परियोजना 3 जिलों में 1-2 हेक्टेयर भूमि और 5-15 डेयरी पशुओं वाले छोटे और सीमांत किसानों के 3000 परिवारों के लिए कार्यान्वित की गई
- पशु शेड जलवायु को सुरक्षित करने और छोटे और सीमांत पशुधन किसानों की स्थायी आजीविका को बढ़ावा देते हैं

निर्मल गुजरात अभियान⁷⁵

- गुजरात के हिम्मतनगर में पशु आश्रय स्थल गांवों को साफ रखने में मदद करते हैं।
- ऐसे पशु आश्रय स्थल (पशु छात्रावास) में बायोगैस और वर्मीकम्पोस्ट उत्पन्न करने के लिए गोबर एकत्र करने में भी प्रभावी हैं। इसके अतिरिक्त ग्राम कल्याण के लिए धन जुटाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट बेचा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, एक "अनुसूचित जाति उप योजना (एससीएसपी)⁷⁶" के तहत पशु शेड सब्सिडी योजना" है, जिसे गुजरात सरकार के पशुपालन, कृषि, किसान कल्याण और सहयोग विभाग निर्देशल्य द्वारा कार्यान्वित किया जाता है। इस योजना के तहत, अनुसूचित जाति के लाभार्थियों को 2 जानवरों के लिए मवेशी शेड के निर्माण के लिए वित्तीय सहायता (या तो ₹30,000/- या मवेशी शेड की लागत का 50%, जो भी कम हो) दी जाती है।

5. कूल रूफ/ठंडी छतें

घरों, सार्वजनिक इमारतों और सरकारी भवनों की छतों को सौर-परावर्तक पेंट से रंगना।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

जोधपुर, भोपाल, सूरत और अहमदाबाद में झुग्गी-झोपड़ी वाले घर⁷⁷

- स्थानीय सामुदायिक कार्यकर्ताओं ने परिवारों को अपनी खुद की ठंडी छत को पेंट करने के लिए प्रशिक्षित किया।
- प्रदर्शन आउटरीच: 460 से अधिक छतें में पेंट किया गया।
- पारंपरिक छतों की तुलना में घर के अंदर का तापमान 2 - 5°C कम पाया गया।

73 <https://pscst.punjab.gov.in/en/climate-resilient-livestock-production-system>

74 <https://moef.gov.in/wp-content/uploads/2017/08/Punjab.pdf>

75 <https://jayshaktiengg.com/gujarat-government-launches-solar-scheme-for-farmers/>

76 <https://www.myscheme.gov.in/schemes/csssscspssc>

77 <https://www.nrdc.org/bio/anjali-jaiswal/cool-roofs-community-led-initiatives-four-indian-cities>

यह गतिविधि "स्वच्छ, सतत, किफायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुंच" अनुभाग से जुड़ी है।

6. चारे की संपूरक के उपयोग से मवेशियों से मीथेन उत्सर्जन को कम करना :

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर)-राष्ट्रीय पशु पोषण और फिजियोलॉजी संस्थान ने पशुधन से मीथेन उत्सर्जन को कम करने में मदद के लिए फ्रीड सप्लीमेंट (हरित धारा और टैमरिन प्लस) विकसित किए हैं।

यह गतिविधि "सतत कृषि" अनुभाग से जुड़ी है।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

- इन संपूरकों के उपयोग से आंत्रिय मीथेन उत्सर्जन में 17-20% तक कम हो सकता है⁷⁸।
- आईसीएआर की रिपोर्ट के अनुसार इन पूरक आहार की कीमत ₹6 प्रति किलोग्राम है।

7. सौर ऊर्जा संचालित ऊर्ध्वधर चारा उगाने वाली इकाइयों (घरेलू स्तर/ सामुदायिक स्तर) का निर्माण:

सौर ऊर्जा से संचालित, माइक्रोक्लाइमेट-नियंत्रित, ऊर्ध्वधर चारा उगाने वाली इकाई उपयोगकर्ताओं को प्रतिदिन एक बाल्टी से भी कम पानी के साथ ताजा चारा काटने में सक्षम बनाती है। ऐसी इकाइयाँ सूखे की स्थिति में भी पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित करेंगी।

यह गतिविधि "सतत कृषि" अनुभाग से जुड़ी है।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

आंध्र प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और बिहार राज्यों में⁷⁹

- चारा उत्पादक इकाइयों को अपनाने से पशुधन के लिए हरे चारे की उपलब्धता में वृद्धि।
- इससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।

8. पंचायत स्तरीय जल बजटिंग

जलवायु-अनुकूल कृषि-आधारित आजीविका के लिए जल प्रबंधन और 'जल बजटिंग'

- वार्षिक/त्रैमासिक जल बजट की गणना।
- ग्राम स्तर पर "जल की कमी" और "जल अधिशेष" की गणना।
- पानी की उपलब्धता के आधार पर वार्षिक फसल उत्पादन योजना।
- जल बर्बादी को रोकने के लिए जल ऑडिट।

यह गतिविधि कार्ययोजना के सतत कृषि और जल संसाधन प्रबंधन अनुभागों से जुड़ी है। यह पहल फसल चयन/योजना, खेत तालाब, बेहतर सिंचाई विधियों, जल पुनर्भरण आदि जैसे कई हस्तक्षेपों को सुदृढ़ बनाएगी।

78 भारतीय कृषि परिषद की रिपोर्ट के अनुसार <https://testicar.icar.gov.in/content/icar-nianp-commercializes-anti-methanogenic-feed-supplement-%E2%80%9Charit-dhara%E2%80%9D>

79 <https://india.mongabay.com/2024/04/amid-fodder-crisis-hydroponics-offers-new-hope-for-indian-farmers/>

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

7 ग्राम पंचायतें (जीपी) और पड़ोसी बस्तियां, रंगारेड्डी और नागौरकुर्नूल जिले, तेलंगाना ⁸⁰

- यह गतिविधि पानी की खपत की वर्तमान स्थिति व खपत को अनुकूलित करने के उपाय दोनों को पहचानने में मदद करेगी।
- इस गतिविधि के द्वारा प्रत्येक कृषि मौसम यानी खरीफ़ (मानसून), रबी (सर्दी), और ज़ैद (गर्मी) के लिए योजना बनाने में भी सहायता मिल सकती है।

9. जलवायु प्रभाव क्षेत्रों में ग्रामीण महिला उद्यमियों को सक्षम बनाना

गांवों में महिलाओं के नेतृत्व वाली जमीनी स्तर की उद्यमिता सहायता पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण:

- महिलाएं स्वच्छ/हरित प्रौद्योगिकी-आधारित उत्पाद की बिक्री करें।
- महिलाएं समुदायों को स्वच्छ-प्रौद्योगिकियों के महत्व पर शिक्षित करें।
- उदाहरण के लिए, स्वच्छ खाना पकाने (सौर कुकस्टोव), पोर्टेबल सौर जल शोधक, एनर्जी एम्पिफिसिएंट लाइट, आदि।
- महिलाओं को व्यवसाय विस्तार ऋण उपलब्ध कराया जाए।
- ग्रामीण विपणन और वितरण संबंधों को सुविधाजनक बनाया जाए।

ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र में सक्षम बनाने के लिए व्यावसायिक कौशल विकास, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण।

इस पहल का उद्देश्य स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और जलवायु प्रभाव क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी को मजबूत करना है। यह कार्ययोजना के आजीविका और हरित उद्यमिता को बढ़ाने वाले अनुभाग से जुड़ता है।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

4 राज्यों (महाराष्ट्र, बिहार, गुजरात और तमिलनाडु) में 14 जिले⁸¹

स्वयं शिशन प्रयोग (एसएसपी) महिलाओं को उनके ग्रामीण समुदायों में स्वच्छ ऊर्जा उद्यमियों और जलवायु परिवर्तन नेताओं के रूप में सक्षम बनाता है:

- 60,000 से अधिक ग्रामीण महिला उद्यमियों को स्वच्छ ऊर्जा, सतत कृषि, स्वास्थ्य और पोषण, और सुरक्षित पानी और स्वच्छता में सक्षम बनाया गया।
- 1,000 से अधिक महिला उद्यमियों ने स्वच्छ-ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षण लिया और व्यवसाय शुरू किया।

10. सामुदायिक बीज बैंक

- सामुदायिक बीज बैंक क्षेत्र में फसल विविधीकरण और स्थिरता को बढ़ावा देंगे जबकि स्थानीय बीज प्रणालियों को मुख्यधारा में लाएंगे, तथा जलवायु परिवर्तन के प्रति सुदृढ़ बनाएंगे।
- ऐसे बीज बैंक किसानों को सूखा-सहिष्णु और जलवायु परिवर्तन अनुरोधक फसलों को उगाने के लिए प्रोत्साहित करेगा।
- किसानों के लिए सुरक्षा जाल सुनिश्चित करें, विशेष रूप से प्रतिकूल मौसम की स्थिति और भोजन की कमी के दौरान।

⁸⁰ <https://wotr.org/2018/03/31/water-budgeting-in-telangana-the-need-and-the-objective-of-the-campaign/>

⁸¹ <https://unfccc.int/climate-action/momentum-for-change/women-for-results/rural-community-leaders-combatting-climate-change>

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

सामुदायिक बीज बैंक, डंगधोरा, जोरहाट, असम (UNEP-GEF परियोजना)⁸²

- बीज बैंक से जुड़े किसानों को स्थानीय बाजार में उपलब्ध बीजों की तुलना में बेहतर गुणवत्ता वाले बीजों की कटाई, उपचार, भंडारण और गुणा करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।
- बीज बैंक की पहल सहभागी फसल सुधार और ज्ञान-साझाकरण रणनीतियों को बढ़ावा देती है।
- किसानों को गुणवत्तापूर्ण बीजों तक सस्ते और आसान पहुंच प्रदान की जाती है व किसानों को बाजार से भी जोड़ती है।
- यह बीज प्रणालियाँ व इनकी मूल्य श्रृंखलाएँ स्थिरता और खाद्य सुरक्षा दोनों की रक्षा करती हैं।

11. जैव-संसाधन केंद्र (बीआरसी) की स्थापना

जैव-इनपुट संसाधन केंद्र (बीआरसी) प्राकृतिक खेती को अपनाने की सुविधा के लिए जैव-इनपुट तैयार करते हैं और आपूर्ति करते हैं। बीआरसी से किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए जैव-इनपुट स्वयं तैयार करने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि जैव-इनपुट तैयार करना एक समय लेने वाली और श्रम-गहन गतिविधि है।

- मिट्टी के स्वास्थ्य, फसल उपज की वृद्धि, कीट या रोग प्रबंधन में सुधार के लिए उपयोगी जैविक संस्थाओं या जैविक रूप से व्युत्पन्न इनपुट का उपयोग करने वाले स्थानीय रूप से तैयार उत्पाद किसानों द्वारा खरीद के लिए उपलब्ध कराए जाते हैं।
- बीआरसी क्षेत्र के किसानों की सभी जैव इनपुट आवश्यकताओं के लिए सिंगल-स्टॉप शॉप के रूप में कार्य करता है।

सर्वोत्तम प्रथाएं/ उदाहरण:

आंध्र प्रदेश राज्य में⁸³

- सतत जलवायु-अनुकूल कृषि में योगदान देता है।
- किसानों को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल ढलने में मदद मिलती है क्योंकि उच्च कार्बनिक पदार्थ की मात्रा मिट्टी को बाढ़, सूखे और भूमि क्षरण प्रक्रियाओं के प्रति अधिक लचीला बनाती है।
- कृषि-पारिस्थितिकी तंत्र और पैदावार में स्थिरता होने के परिणामस्वरूप जोखिम कम हो जाता है, और उत्पादन लागत भी कम हो जाती है।

82 <https://alliancebioversityciat.org/stories/community-seed-banks-empower-farmers-address-climate-risk-india>

83 <https://www.apmas.org/pdf/csv/casestudy-1.pdf>




जल निकायों का प्रबंधन और कायाकल्प

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया ⁸⁴
क. वर्षा जल संचयन (आरडब्ल्यूएच) 	<ul style="list-style-type: none"> प्रकृति-आधारित समाधान (एनबीएस) पानी की कमी और पानी के तनाव से निपटने की क्षमता को बढ़ाता है बेहतर भूजल पुनर्भरण पानी की गुणवत्ता में वृद्धि सूखा, लू आदि जैसी आपदाओं के प्रति लचीलापन बढ़ा। 	एसडीजी 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 6.1 लक्ष्य 6.4 लक्ष्य 6.5
ख. जल निकायों का रखरखाव 	<ul style="list-style-type: none"> कृषि एवं पशुधन उत्पादकता में सुधार स्थानीय जैव विविधता को बढ़ावा 	एसडीजी 11: टिकाऊ शहर और समुदाय <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 11.4 एसडीजी 12: सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करें <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 12.2
ग. जल निकासी बुनियादी ढांचे को बढ़ाना 		एसडीजी 13: जलवायु कार्यवाही <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.1 लक्ष्य 13.2
घ. अपशिष्ट जल प्रबंधन 		एसडीजी 15: भूमि पर जीवन <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 15.1 लक्ष्य 15.5
ङ. भूजल पुनर्भरण और जल संरक्षण 		





84 प्रासंगिक एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों की विस्तृत सूची अनुबंध V में दी गई है

सतत कृषि

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया
<p>क. कृषि के लिए सूखा प्रबंधन</p> 	<ul style="list-style-type: none"> कृषि उत्पादकता एवं लाभ में वृद्धि मृदा स्वास्थ्य में सुधार रासायनिक आदानों के कम उपयोग के कारण पानी की गुणवत्ता में सुधार कृषि जल सुरक्षा में सुधार शीत लहर और गर्मी की लहर के दौरान पशुधन की हानि कम हुई और उत्पादकता में वृद्धि हुई वायु गुणवत्ता में सुधार हुआ और उत्सर्जन में कमी आई 	<p>एसडीजी 2: शून्य भूख</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 2.3 लक्ष्य 2.4 लक्ष्य 2.ए ; अनुच्छेद 10.3.ई <p>एसडीजी 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 6.4 लक्ष्य 13.1 <p>एसडीजी 13: जलवायु कार्यवाही</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.2 लक्ष्य 13.3
<p>ख. प्राकृतिक खेती को अपनाना</p> 		
<p>ग. सतत पशुधन प्रबंधन</p> 		



हरित स्थानों और जैवविविधता को बढ़ाना

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया
<p>क. मौजूदा हरित आवरण में सुधार</p> 	<ul style="list-style-type: none"> जलवायु घटनाओं/आपदाओं से प्राकृतिक बफर सूक्ष्म जलवायु को विनियमित करने से हीटवेव और गर्मी के तनाव से अनुकूलन में सहायता मिलेगी औषधीय पौधों तक पहुंच से स्वास्थ्य लाभ 	<p>एसडीजी 11: सतत शहर और समुदाय</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 11.7 लक्ष्य 11.4 <p>एसडीजी 12: सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करें</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 12.2
<p>ख. जन जैवविविधता रजिस्टर</p> 	<ul style="list-style-type: none"> बेहतर मृदा स्थिरता, जल संरक्षण और संबंधित कृषि लाभों के लिए प्रकृति-आधारित समाधान (एनबीएस)। पशुधन उत्पादकता में सुधार कृषिवानिकी, प्राकृतिक औषधियों के उत्पादन आदि से राजस्व सृजन। जैव विविधता के लिए बेहतर पर्यावरण और आवास, पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में वृद्धि 	<p>एसडीजी 13: जलवायु संबंधी कार्यवाही</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.1 लक्ष्य 13.2 लक्ष्य 13.3 <p>एसडीजी 15: भूमि पर जीवन</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 15.1 लक्ष्य 15.2 लक्ष्य 15.3 लक्ष्य 15.5 लक्ष्य 15.9



सतत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया
<p>क. अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली स्थापित करना</p> 	<ul style="list-style-type: none"> जलभराव कम हुआ जल और भूमि प्रदूषण में कमी/स्वच्छता में सुधार 100% अपशिष्ट प्रबंधन और सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों और महामारी की घटनाओं में कमी के कारण अच्छा स्वास्थ्य और अपेक्षाकृत रोग-मुक्त वातावरण 	<p>एसडीजी 3: अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 3.3 लक्ष्य 3.9
<p>ख. जैविक अपशिष्ट का प्रबंधन</p> 	<ul style="list-style-type: none"> आजीविका और आय सृजन राजस्व और लाभ सृजन 	<p>एसडीजी 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 6.3 लक्ष्य 6.8 <p>एसडीजी 8: सभ्य कार्य और आर्थिक विकास</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 8.3
<p>ग. स्वच्छता बुनियादी ढांचे को बढ़ाना</p> 	<ul style="list-style-type: none"> सतत कृषि के लिए उन्नत इनपुट 	<p>एसडीजी 9: उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 9.1
<p>घ. एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध</p> 		<p>एसडीजी 12: सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करें</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 12.4 लक्ष्य 12.5 लक्ष्य 12.8 <p>एसडीजी 13: जलवायु कार्यवाही</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.1 लक्ष्य 13.2 लक्ष्य 13.3 <p>एसडीजी 15: भूमि पर जीवन</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 15.1










स्वच्छ, सतत, किफ़ायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुँच

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया
<p>क. सोलररूफ टॉप की संस्थापना</p> 	<ul style="list-style-type: none"> ऊर्जा सुरक्षा उष्ण से राहत आजीविका के उन्नत विकल्प अतिरिक्त राजस्व सृजन 	<p>एसडीजी 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता लक्ष्य 6.4</p> <p>एसडीजी 7: सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 7.1 लक्ष्य 7.2 लक्ष्य 7.3 लक्ष्य 7.ए लक्ष्य 7.बी
<p>ख. एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना</p> 	<ul style="list-style-type: none"> उच्च तापमान/धूप के संपर्क से राहत प्रदान करता है, जिसके परिणामस्वरूप उपज स्थिरता और उत्पादकता में वृद्धि होती है विषैले उत्सर्जन/स्थानीय वायु प्रदूषण में गिरावट 	<p>एसडीजी 9: उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 9.1
<p>ग. सोलर पंप</p> 	<ul style="list-style-type: none"> चुकौती/पे-बैक अवधि के बाद आर्थिक लाभ घर के अंदर वायु प्रदूषण में कमी विशेषकर महिलाओं के स्वास्थ्य में सुधार 	<p>एसडीजी 13: जलवायु कार्यवाही</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.2 लक्ष्य 13.3
<p>घ. रसोई में स्वच्छ ईंधन का उपयोग</p> 	<ul style="list-style-type: none"> ईंधन की लकड़ी एकत्र करने के कठिन परिश्रम/शारीरिक श्रम को समाप्त करता है आपदाओं के दौरान ग्रिड विफलताओं से निपटने की क्षमता में वृद्धि 	
<p>ड. ऊर्जा कुशल फिक्स्चर</p> 		
<p>च. सोलर स्ट्रीट लाइट</p> 		



सतत और उन्नत गतिशीलता

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया
<p>क. मौजूदा सड़क के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना</p> 	<ul style="list-style-type: none"> स्थानीय वायु प्रदूषण में गिरावट से मानव और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है जोखिम वाले और संवेदनशील लोगों के लिए बेहतर पहुंच अतिरिक्त राजस्व सृजन वस्तुओं और सेवाओं की अंतिम-मील कनेक्टिविटी में वृद्धि जलभराव कम करने जैसे सह-लाभों के साथ सड़क बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के माध्यम से लचीलेपन में सुधार 	<p>एसडीजी 7: सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 7.2 <p>एसडीजी 11: टिकाऊ शहर और समुदाय</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 11.2 <p>एसडीजी 9: उद्योग, नवाचार और बुनियादी ढांचा</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 9.1 <p>एसडीजी 13: जलवायु कार्यवाही</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.2 लक्ष्य 13.3
<p>ख. मध्यवर्ती सार्वजनिक परिवहन</p> 		   
<p>ग. ई-वाहनों (ई-टू व्हीलर, ई-गुड्स कैरियर और ई-ट्रैक्टर) को अपनाने को बढ़ावा देना</p> 		

आजीविका और हरित उद्यमशीलता को बढ़ाना

सुझाई गई जलवायु स्मार्ट संबंधी गतिविधियाँ	अनुकूलन क्षमता और सह-लाभ	एसडीजी और संबंधित लक्ष्यों को संबोधित किया गया
<p>क. प्लास्टिक-वैकल्पिक उत्पादों का विनिर्माण और बिक्री</p> 	<ul style="list-style-type: none"> जल एवं भूमि प्रदूषण में कमी स्थायी कृषि के लिए उन्नत इनपुट 100% अपशिष्ट प्रबंधन और सार्वजनिक स्वास्थ्य जोखिमों और महामारी की घटनाओं में कमी के कारण अच्छा स्वास्थ्य और अपेक्षाकृत रोग-मुक्त वातावरण 	<p>एसडीजी 5: लैंगिक समानता हासिल करना और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 5.5
<p>ख. जैविक कचरे को खाद बनाकर उर्वरक के रूप में बेचना</p> 	<ul style="list-style-type: none"> अतिरिक्त राजस्व सृजन आजीविका के उन्नत विकल्प औषधीय पौधों तक पहुंच से स्वास्थ्य लाभ 	<p>एसडीजी 8: सभ्य कार्य और आर्थिक विकास</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 8.3
<p>ग. ई-माल वाहक और ई-ट्रेक्टर किराए पर लेने की सुविधा</p> 	<ul style="list-style-type: none"> कृषिवानिकी, प्राकृतिक औषधियों के उत्पादन आदि से राजस्व सृजन। 	<p>एसडीजी 12: सतत उपभोग और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करें</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 12.2 लक्ष्य 12.4 लक्ष्य 12.5 लक्ष्य 12.8
<p>घ. सौर ऊर्जा संचालित कोल्ड स्टोरेज के माध्यम से आजीविका में सुधार</p> 	<ul style="list-style-type: none"> जैव विविधता के लिए बेहतर पर्यावरण और आवास, पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में वृद्धि 	<p>एसडीजी 13: जलवायु कार्यवाही</p> <ul style="list-style-type: none"> लक्ष्य 13.1 लक्ष्य 13.2 लक्ष्य 13.3
<p>ङ. प्राकृतिक औषधियों और पूरकों के उत्पादन और बिक्री के लिए आरोग्य वन</p> 	<ul style="list-style-type: none"> स्थानीय वायु प्रदूषण में गिरावट से मानव और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य में सुधार हुआ है वस्तुओं और सेवाओं की अंतिम-मील कनेक्टिविटी में वृद्धि 	   
<p>च. नवीकरणीय ऊर्जा प्रतिष्ठानों (सौर और बायोगैस) का संचालन एवं रखरखाव</p> 		

कार्यान्वयन में प्रस्तावित सुझाव से उदयपुरा के ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को कम करने में ही नहीं बल्कि ऊर्जा, खाद्य और जल सुरक्षा प्राप्त करने में भी सहायता होगी, जिससे ग्राम पंचायत जलवायु स्मार्ट, लचीली और सतत बनेगी। इससे गांव के निवासियों की आकांक्षाएं पूरी करने के लिए ग्राम पंचायत के समग्र और निरंतर विकास को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, ये संस्तुतियां प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देते हुए जीवन की गुणवत्ता में सुधार करेंगी। उदयपुरा के लिए यह क्लाइमेट स्मार्ट कार्ययोजना ऊर्जा, कृषि निवेश, पानी, आदि पर व्यय में कमी लाकर उदयपुरा को 'आत्मनिर्भर' बनाएगी जिससे आर्थिक विकास के नए मार्ग खुलेंगे। इसके अतिरिक्त, प्रस्तावित हस्तक्षेपों के कार्यान्वयन से जलवायु परिवर्तन पर उत्तर प्रदेश राज्य कार्ययोजना II, 2022 में परिकल्पित के अनुसार, उदयपुरा जलवायु कार्ययोजना पर राज्य के दृष्टिकोण और लक्ष्यों में भी योगदान देगा, जो बदले में, जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए देश के प्रयासों को सशक्त करेगा, जिससे एनडीसी, 2015 और इसके अद्यतन संस्करण, 2022 में सूचीबद्ध योगदान और 2030 तक सतत विकास लक्ष्य भी प्राप्त होंगे।

जलवायु संबंधी समस्याओं का समाधान करने के लिए स्थानीय स्तर पर विशेष रूप से तैयार किए गए समाधानों की आवश्यकता है, जो पर्याप्त जलवायु वित्त और कार्यान्वयन के अन्य माध्यमों की उपलब्धता से ही सफल हो सकते हैं। इसे राज्य और केंद्रीय योजनाओं के अंतर्गत समर्थित ग्राम पंचायत विकास योजना में परिकल्पित जारी गतिविधियों में न्यूनीकरण और अनुकूलन दोनों जलवायु कार्यवाही को मिलाकर और अतिरिक्त वित्तीय संसाधन जुटाकर प्राप्त किया जा सकता है। इससे सभी प्रासंगिक हितधारकों: समुदाय, सरकारी प्रशासन, निर्वाचित प्रतिनिधियों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग में वृद्धि होगी। कार्ययोजना के कार्यान्वयन के बाद, नई अवसरचना/प्रौद्योगिकी के कुशल प्रबंधन के रूप में निरंतर कार्यवाही उदयपुरा को एक मॉडल जलवायु स्मार्ट ग्राम पंचायत बनना सुनिश्चित करेगी। वर्तमान योजना की सफलता से संभवतः दूसरे ग्राम पंचायत भी कुशल, लचीले और सतत बनाने की प्रक्रिया का पालन करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। इस दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए, यह महत्वपूर्ण होगा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा परिकल्पित लाइफ़ मिशन के समान एक संवहनीय जीवन शैली को अपनाने के लिए सामुदायिक स्वामित्व की भावना और व्यवहार परिवर्तन को प्रेरित किया जाए।

अनुलग्नक I: पृष्ठभूमि और कार्यप्रणाली

पृष्ठभूमि

उत्तर प्रदेश राज्य जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के विरुद्ध उन्नत और नवीन गतिविधियां अपना रहा है। माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के दूरदर्शी और प्रेरणादायक मार्गदर्शन के अंतर्गत राज्य ने शासन के विभिन्न स्तरों पर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के विरुद्ध विस्तृत गतिविधियां प्रारंभ की हैं। इनमें से एक है 'क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत' के निर्माण के लिए कार्ययोजनाओं का निर्माण करना। उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री ने इस अवधारणा की परिकल्पना जून, 2022 में की थी। उनकी इस परिकल्पना को वास्तविक रूप देने के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के 39 संवेदनशील जिलों⁸⁵ में जलवायु अनुकूल ग्राम पंचायतों की पहचान करने के लिए एक त्वरित बहु-मानदंड मूल्यांकन संचालित किया गया। 5 जून, 2022 को आयोजित 'पंचायत सम्मेलन' (सीओपी) में इन चयनित ग्राम पंचायतों के नामों की घोषणा की गई और इनमें से कई पंचायतों को सम्मानित भी किया गया।

उदयपुरा के लिए क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना⁸⁶ का विकास उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा वसुधा फाउंडेशन और गोरखपुर एनवायर्नमेंटल एक्शन ग्रुप के सहयोग से किया गया है। इस कार्ययोजना का लक्ष्य ग्राम पंचायत स्तर पर जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध गतिविधियों को मुख्यधारा में सम्मिलित करने के लिए ग्राम पंचायत विशिष्ट ब्लूप्रिंट प्रदान करना है। यह न केवल स्थानीय जलवायु अभियानों को सुदृढ़ता प्रदान कर ग्राम पंचायत को जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध सहनशील बनाएगा बल्कि वर्ष 2030 तक शून्य कार्बन/कार्बन तटस्थ के लक्ष्य को पूरा करने के लिए उत्सर्जनों में कमी भी लाएगा।

इस कार्ययोजना के निर्माण में भागीदारी दृष्टिकोण अपनाया गया है जो कि ऊर्ध्वगामी (बॉटम अप) योजना निर्माण की अवधारणा के अनुरूप है। इस कार्ययोजना की प्रस्तावित संस्तुतियों को व्यक्तिगत परियोजनाओं के रूप में किया जा सकता है जिन्हें पूरा करने के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व में जुटी कंपनियों, राज्य और केंद्र सरकार की योजनाओं, उन्नत सार्वजनिक-निजी साझेदारियों, कार्बन वित्त और निजी निवेशों से धनराशि की व्यवस्था की जा सकती है।

इसे व्यवहार्य बनाने के लक्ष्य से यह कार्ययोजना पंचायत-निजी-साझेदारी (पीपीपी) के निर्माण के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है और साथ ही, इसके प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए राज्य और गैर-राज्य सक्रियकों के बीच सहयोग बढ़ाने की रूपरेखा भी प्रदान करती है।

कार्यप्रणाली

इस रिपोर्ट में मुख्य क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना के सहित भरी हुए प्रश्नावली, एचआरवीसीए (HRVCA) रिपोर्ट, ग्राम पंचायत के सामाजिक और संसाधन मानचित्र के रूप में फ्रील्ड से मिली जानकारी संलग्नक के रूप में सम्मिलित है।

क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना के विकास के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए:

- सर्वेक्षण प्रश्नावली की तैयारी: मूलभूत स्थिति को समझने और ग्राम पंचायत के आधारभूत परिदृश्य का विकास करने के लिए मुख्य

85 यूपी के 39 अत्यधिक संवेदनशील जिलों की पहचान यूपी के जलवायु परिवर्तन पर राज्य कार्य योजना 2.0 और डीओईएफसीसी, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन योजना के लिए स्कोपिंग आकलन से की गई थी।

86 इस दस्तावेज़ में मुख्य क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्य योजना शामिल है और इसमें अनुलग्नक के रूप में निम्नलिखित शामिल हैं: विस्तृत कार्यप्रणाली; भरी हुई प्रश्नावली; खतरा, जोखिम, भेद्यता और क्षमता आकलन (एचआरवीसीए) रिपोर्ट, और सामाजिक और संसाधन ग्राम पंचायत का नक्शा।

हितधारकों और क्षेत्रीय विशेषज्ञों के विचारों के आधार पर एक प्रश्नावली तैयार की गई। प्रश्नावली में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया, जैसे कि जनसांख्यिकी, सामाजिक-आर्थिक संकेतक, जलवायु परिवर्तनशीलता, जलवायु धारणा (पिछले 5 वर्ष की), ऊर्जा, कृषि और पशुधन, भूमि संसाधन, स्वच्छता और स्वास्थ्य। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य ग्राम पंचायत में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं की पहुंच को समझना भी था।

- हितधारकों से परामर्श और क्षमता निर्माण: स्थानीय गैर-सरकारी साझेदारों, ग्राम प्रधानों, पंचायत सचिवों के लिए परामर्श और क्षमता-निर्माण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में हितधारकों को क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना के उद्देश्य और पहलुओं, कार्ययोजना के विकास की प्रक्रिया और इसमें उनकी व्यक्तिगत भूमिकाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई।
- साथ ही, गैर सरकारी साझेदारों को मुख्य जलवायु परिवर्तन अवधारणाओं, अपनाई जाने वाली सर्वेक्षण प्रक्रियाओं और केन्द्रिय समूह परिचर्चा परिचर्चाओं के लिए विकसित प्रश्नावली के बारे में प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया था।
- क्षेत्र सर्वेक्षण: समुदाय से अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए, ग्राम सभाओं और केन्द्रित समूह चर्चाओं का आयोजन किया गया था जिसके माध्यम से प्राथमिक आंकड़ों को एकत्र किया गया।
 - » क्षेत्र सर्वेक्षण में ग्राम पंचायत का दौरा (ट्रांसेक्ट वाक) किया गया और उसके आधार पर सामाजिक और संसाधन मानचित्र तैयार किए गए।
 - » ग्राम पंचायत की विभिन्न समस्याओं को समझने के लिए खतरा, जोखिम, नाजुकता और क्षमता विश्लेषण (एचआरवीसीए) भी किया गया।
 - » उदयपुरा ग्राम पंचायत की जलवायु संबंधित समस्याओं को और उसके विकास लक्ष्यों को समझने के लिए समूह केन्द्रित चर्चाओं का भी आयोजन किया गया।
- प्राप्त जानकारी के आधार पर, योजना विकसित की गई और ग्राम पंचायत के लिए आधारभूत मूल्यांकन किया गया। इसमें क्लाइमेट स्मार्ट गतिविधियों की पहचान शामिल है जो न केवल पहचाने गए पर्यावरणीय और जलवायु संबंधी मुद्दों को संबोधित करते हैं अपितु पंचायत की प्रचलित कृषि-जलवायु विशेषताओं को भी ध्यान में रखते हैं।
- जानकारी में कमी और अतिरिक्त आवश्यक जानकारी की पहचान की गई और ग्राम प्रधान, समुदाय और पंचायत सचिव के साथ चर्चाओं द्वारा जानकारी को पूर्ण किया गया।
- ड्राफ्ट योजना को समीक्षा के लिए ग्राम पंचायत को प्रस्तुत किया गया।
- ग्राम पंचायत से प्राप्त जानकारी को सम्मिलित करने के पश्चात, कार्ययोजना को अंतिम रूप प्रदान किया गया और अनुमोदन के लिए ग्राम पंचायत को प्रस्तुत किया गया।

अनुलग्नक II: प्रश्नावली



उत्तर प्रदेश क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत की सर्वे प्रश्नावली

ग्राम पंचायत : उदयपुरा

विकासखण्ड : बार

जनपद : ललितपुर

I. गाँव की रूपरेखा

DM	विवरण	संख्या (सूचना का स्रोत- समुदाय के सदस्य)
1	राजस्व गाँव की संख्या	02 उदयपुरा और कैलोनी
2	टोलों की संख्या	02 मुरली और नहर बस्ती
3	a कुल जनसंख्या	6256
	b कुल पुरुषों की जनसंख्या	3412
	c कुल महिलाओं की जनसंख्या	2844
	d विकलांगजन की जनसंख्या	10
	e कुल बच्चों की जनसंख्या	476
	f वरिष्ठ नागरिक (60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग)	260
4	कुल परिवार की संख्या	712
a	गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवार की संख्या	250
5	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल	709.48 हेक्टेयर
6	a साक्षरता दर	64%
7	a पक्का घरों की संख्या	562
	b कच्चा घरों की संख्या (मुख्य रूप से उपयोग की गई सामग्री का उल्लेख करें)	150 (मिट्टी , लकड़ी एवं खपडैल का धर)





II. सामाजिक आर्थिक

8	ग्राम पंचायत में केवल कृषि (प्रकार) पर आश्रित परिवार	कुल परिवारों की संख्या	
	निजी भूमि/स्वयं की भूमि	572	
	किराए की भूमि (हुण्डा)	296	
	अनुबंध खेती	Nill	
	दिहाड़ी मजदूर	118	
	अन्य व्यवस्था (रेहन, अधिया आदि)	120	
	अन्य सूचनाएं/जानकारी (एक से अधिक कृषि गतिविधि में शामिल परिवार, उल्लेख करें)	Nill	
9	ग्राम पंचायत में आय के स्रोत	कुल परिवारों की संख्या	
	सेवा क्षेत्र (उदाहरण: अध्यापन, बैंक, सरकारी नौकरी आदि)	10	
	कुटीर उद्योग	Nill	
	कृषि	572	
	कला/हस्तकला	5	
	पशुपालन	462	
	व्यवसाय (स्थानीय दुकान)	35	
	व्यवसाय/उद्यम	Nill	
	दैनिक/दिहाड़ी मजदूर (अकृषिगत)	245	
	अन्य	10	
10	पलायन	हां	नहीं
	a क्या पिछले पांच वर्षों में आप के ग्राम पंचायत से ग्रामीणों ने पलायन किया है?	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
	b पलायन करने वाले स्थान	पिछले पांच वर्षों में पलायन करने वाले परिवार/व्यक्तिगत की संख्या	
	अन्य गांव	Nill	
	निकट के शहर	15 परिवार	
	राज्य के प्रमुख शहर	10 परिवार	
	देश के प्रमुख महानगर	12 परिवार	
	c क्या पिछले पांच वर्षों में आप के ग्राम पंचायत में परिवार/व्यक्ति ने प्रवास किए हैं?	हां	नहीं
		<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>





d	पिछले पांच वर्षों में आपके ग्राम पंचायत में कितने परिवार प्रवास किए हैं? मुख्य कारण स्पष्ट करें।	Nil
---	--	-----

11 महिलाओं की स्थिति		
a	महिला प्रमुख परिवारों की संख्या (आय का मुख्य स्रोत- महिला)	5
b	खेती में कार्यरत महिला	कुल संख्या
	निजी भूमि/स्वयं की भूमि	5
	किराएकी भूमि/हुण्डा	Nil
	अनुबंध खेती	0
	दिहाड़ी मजदूर	205
	अन्य व्यवस्था	Nil
	अन्य सूचनाएं/जानकारी (एक से अधिक कृषि गतिविधि में संलग्न महिलाएं, उल्लेख करें)	अधिकांश महिलाएं अपनी खेती के साथ साथ पशुपालन करती हैं
c	नौकरी/अन्य क्षेत्र में कार्यरत महिलाएं	कुल संख्या
	सेवा क्षेत्र (उदाहरण: अध्यापन, बैंक, सरकारी नौकरी आदि)	0
	कुटीर उद्योग	Nil
	कृषि	205
	कला/हस्तकला	5
	पशुपालन	150
	व्यवसाय (स्थानीय दुकान)	0
	दैनिक/दिहाड़ी मजदूर (गैरकृषिगत)	Nil
	अन्य	36 सिलाई का कार्य करती हैं





12 स्वयं सहायता समूहों					
क्रम	स्वयं सहायता समूह का नाम	सदस्यों की संख्या	अपनायी गई गतिविधियाँ	वार्षिक बचत (₹0)	बैंकों से जुड़ाव/अजुड़ाव
1	अम्बेडकर महिला स्वयं सहायता समूह	12	Null	9840	बैंकों से जुड़ाव है
2	तुलसा माता स्वयं सहायता समूह	12	Null	9520	बैंकों से जुड़ाव है
3	मां सारदा महिला स्वयं सहायता समूह	14	Null	9420	बैंकों से जुड़ाव है
4	सावित्री बाई महिला स्वयं सहायता समूह	10	Null	8200	बैंकों से जुड़ाव है
5	साधना स्वयं सहायता समूह	12	Null	7500	बैंकों से जुड़ाव है
6	गौरी शंकर महिला स्वयं सहायता समूह	10	Null	3200	बैंकों से जुड़ाव है
7	गायत्री मां महिला स्वयं सहायता समूह	12	Null	3840	बैंकों से जुड़ाव है

13 कृषक उत्पादक संगठन (एफ0पी0ओ0)						
	एफ0पी0ओ0 का नाम	क्या इस संगठन की प्रमुख महिला हैं?	प्रत्येक एफ0पी0ओ0 में सदस्यों की संख्या	एफ0पी0ओ0 से प्राप्त वार्षिक राजस्व/ बचत	कृषि उत्पाद	पोस्ट हार्वेस्ट की गतिविधियां/ गतिविधियों का क्षेत्र
	Null	<input type="checkbox"/>				
	Null	<input type="checkbox"/>				
	Null	<input type="checkbox"/>				
	Null	<input type="checkbox"/>				
	Null	<input type="checkbox"/>				





14 अन्य समुदाय आधारितसंगठन /						
	सामाजिक संगठन / समितियों के नाम	क्या महिला प्रमुख संगठन / समिति हैं?	सदस्यों की संख्या	प्राप्त वार्षिक राजस्व / बचत	उत्पाद / सेवा	विपणन / लक्षित उपभोगकर्ता
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				
	Nill	<input type="checkbox"/>				

15 योजनाएं						
	A योजना के नाम	पंजीकृत लाभार्थी की संख्या	लाभ प्राप्त लाभार्थियों की संख्या	विगत वर्ष ग्राम पंचायत में प्राप्त कुल भगतान (रु०)	अन्य कोई बकाया (रु०)	की गई गतिविधियाँ / कार्य
	मनरेगा	345	345	891000		खेतों का समतलीकरण , पौधा रोपण , नाला गहरीकरण , खेल का मैदान
	प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना / एन.एफ.एस.ए.	345	345			
	प्रधानमंत्री उज्जवला योजना	290	275	-		गैस चूल्हा एवं सिलेन्डर
	प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना	Nill				
	प्रधानमंत्री कुसुम योजना	Nill				
	B अन्य योजनाएं					
	ग्राम उज्जवला योजना	Nill				
	ऊर्जा दक्षता योजना	Nill				





	प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम	Nil				
	प्रधानमंत्री आवास योजना	26	24	2640000	21 पहली किस्त	लाभार्थी का आवास बना है।
	सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी0डी0एस0)	588	588			
	कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम	Nil				
	उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन	Nil				
	राष्ट्रीय कौशल विकास योजना (RKVY)	Nil				
	मौसम आधारित फसल बीमा	Nil				
	प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)	Nil				
	मृदा स्वास्थ्य कार्ड	Nil				
	किसान क्रेडिट कार्ड	876	586			किसान को फसल लोन मिला
	स्वच्छ भारत मिशन	665	665			लाभार्थी का शौचालय बना
	सौर सिंचाई पम्प योजना	02	-			सोलर पैनल मिला
	नई/नवीन भारतीय बायोगैस व कार्बनिक खाद कार्यक्रम	Nil				
	विकेन्द्रित अनाज क्रय केन्द्र योजना	Nil				
	गोवर्धन योजना	Nil				
	जल पुनर्भरण योजना	Nil				
	रेनवाटर हार्वेस्टिंग	Nil				
	समन्वित वाटरशेड विकास कार्यक्रम	Nil				
	अन्य वाटरशेड विकास योजनाएं	Nil				
	अन्य (एक जिला-एक उत्पाद, मेक इन इण्डिया, अन्य)	Nil				
	उद्यमिता सहायता योजनाएं आदि	Nil				



	आयुष्मान कार्ड	369	250			स्वास्थ्य सेवाये मिलेगीं
--	----------------	-----	-----	--	--	--------------------------

16	सक्रिय बैंक खाताधारकों की संख्या					1280
17	ई-बैंकिंग/डिजिटल भुगतान एप/यू.पी.आई आदि से भुगतान करने वाले खाताधारकों की संख्या					280

18	निकट कृषि बाजार/क्रय केन्द्र/सरकारी केंद्र	क्या ग्राम पंचायत द्वारा बाजार/कय केन्द्र का उपयोग होता है		यदि नहीं, तो बाजार/केन्द्र का उपयोग क्यों नहीं किया जाता	उत्पादित फसल(कु0)	बिक्री हुई फसल (कु0)	ग्राम पंचायत से दूरी (यदि ग्राम पंचायत से दूर है) (कि0मी0)
		हां	नहीं				
	बानपुर	√□	□	-	उर्द - 800 मूंग-500 गेहूँ-700	उर्द - 500 मूंग-300 गेहूँ-700	17 किमी

19		शिक्षा (केवल ग्राम पंचायत में)				
	प्रकार/स्तर	उपलब्ध छत का क्षेत्रफल (वर्ग मी0)	कुल नामांकित विद्यार्थियों की संख्या	विगत वर्ष में कुल ड्रॉप आऊट विद्यार्थियों की संख्या	ड्रॉप आऊट के मुख्यकारण(स्वास्थ्य (1), पहुँच/उपलब्धता-(2), आर्थिक समस्या-(3), अन्य-(4) उल्लेख करें)	
A	प्राथमिक विद्यालय-उदयपुरा	1000 वर्ग मीटर	109	03	अन्य-4 (बच्चों के माता पिता बच्चों के पलायन कर गये)	
B	प्राथमिक विद्यालय-मुंरली	900 वर्ग मीटर	71	02	अन्य-4 (बच्चों के माता पिता बच्चों के पलायन कर गये)	
C	प्राथमिक विद्यालय-कैलोनी	750 वर्ग मीटर	126	01	अन्य-4 (बच्चों के माता पिता बच्चों के पलायन कर गये)	
	जू0 हाई स्कूल-उदयपुरा	6000 वर्ग मीटर	170	02	पहुँच/उपलब्धता-(2),	
C	हाई स्कूल		Nil			
D	अन्य संस्थान		Nil			





20	कौशल विकास/व्यवसायिक प्रशिक्षण/पुनः कौशल संस्थान (केवल ग्राम पंचायत में)	उपलब्ध छत का क्षेत्रफल (वर्ग मी0)	संस्थान के प्रकार (सरकारी 1, निजी 2)	नामांकित व्यक्तियों की संख्या	नामांकित व्यक्तियों की आयु
	Nill				

21	राज्य/राष्ट्रीय राजमार्ग की उपलब्धता			
	राजमार्ग का नाम	राज्य मार्ग 1, राष्ट्रीय राजमार्ग 2	ग्राम पंचायत से दूरी	सम्पर्क मार्ग की स्थिति अच्छा (1), खराब (2), घटिया (3), सबसे घटिया (4)
	राज्य मार्ग – ललितपुर	2	11 Km	अच्छा (1)
	राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-44)	1	30 Km	अच्छा (1)

III. भूमि संसाधनों संबंधित सूचनाएं/जानकारी

22	वन भूमि का विवरण	
A	वन का क्षेत्र	10 एकड़
B	वन विभाग द्वारा अधिसूचित क्षेत्र	Nill
C	सार्वजनिक उपयोग हेतु उपलब्ध वन क्षेत्र	Nill
D	कितने क्षेत्र पर अतिक्रमण है?	Nill
E	विगत पांच वर्षों में कोई वन उन्मूलन/वन कटाई की गतिविधियां	Nill
F	अनुमानित वन उन्मूलन/वन कटाई का क्षेत्रफल (एकड़)	Nill

23	अन्य भूमि का वर्गीकरण			
A	ग्राम पंचायत के पास ग्राम सभा की कितनी भूमि उपलब्ध है?	7 (एकड़)		
B	कितनी भूमि पर अतिक्रमण है? (एकड़)	2 (एकड़)		
C	ग्राम पंचायत में खनन गतिविधियां	हां <input type="checkbox"/>	नहीं <input checked="" type="checkbox"/>	आच्छादित क्षेत्रफल



	खनन के प्रकार बालू खनन 1, खनिज खनन—(उल्लेख करें) 2, अन्य (उल्लेख करें) 3	Null
	अतिरिक्त सूचनाएं	Null

24 जल निकाय क्षेत्र			
	विवरण	हाँ	नहीं
A	क्या आप के ग्राम पंचायत में जल निकाय क्षेत्र है?	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
B	ग्राम पंचायत में कुल जल निकाय क्षेत्रों की संख्या	6	
C	क्या जल निकाय क्षेत्र में अतिक्रमण है?	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
D	जल निकाय क्षेत्र में अतिक्रमण कब से है?	10-15 वर्षों से	
E	क्या जल निकाय क्षेत्र के आस-पास के भूमि पर अतिक्रमण किया गया है?	हाँ	

25 जल आपूर्ति		
a	ग्राम पंचायत में घरों हेतु जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत क्या है? नहर (1) वर्षा जल—(2) भूमिगत जल—(3) तालाब/झील—(4) अन्य— (5)	भूमिगत जल—(3)
b	क्या उपरोक्त जल आपूर्ति के स्रोत मौसमी या बारहमासी है?	बारहमासी
c	घरों में जल आपूर्ति कैसे होती है? पाइप जलापूर्ति (1) ग्राम पंचायत में सामान्य संग्रह केन्द्र (2) पानी टंकी (3) महिलाओं/बच्चों द्वारा दूर से लाया गया (4) हैण्डपम्प (5)	हैण्डपम्प (5)





	ऊँचा सतही जलाशय (6) कूआ (7) अन्य (8), उल्लेखित करें। अगर 4 है, तो कितनी दूर से लाया जा रहा है?	
d	कितने घरों में जलापूर्ति पाइप से है?	अभी टंकी के पाइप का कनेक्शन हो रहा है।
e	क्या पानी का बहाव/प्रवाह दर कम, अधिक या संतोषजनक है?	NA
f	पाइप जलापूर्ति की नियमितता 24×7 घण्टे(1) काफी नियमित (2) अनियमित (3)	NA
g	ग्राम पंचायत में कृषि सिंचाई हेतु जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत क्या है? नहर (1) वर्षा जल (2) भूमिगत जल – (नलकूप (3A), कूआ (3B)) तालाब/झील (4) पानी टैंक (5) नदी (6) अन्य (7)	नहर (1) वर्षा जल (2) भूमिगत जल – (नलकूप (3A), कूआ (3B))
h	क्या उपरोक्त जल आपूर्ति स्रोत मौसमी या बारहमासी है?	नलकूप एवं व्यक्तिगत बोरिंग का प्रयोग फसल की आवश्यकतानुसार एवं वर्षाजल मौसमी है।
i	क्या जलापूर्ति का बहाव/प्रवाह दर कम/अधिक या संतोषजनक है?	संतोषजनक
j	अतिरिक्त जानकारी (उदाहरण : क्या घरेलू, कृषि व संबंधित गतिविधियों, उद्योगों आदि के लिए जल आपूर्ति पर्याप्त है) क्या विगत वर्षों में भूजल, नदी या नहर से जल की उपलब्धता बढ़ी/घटी या सूख गया? क्या सूखे या गर्मी के मौसम में पानी की टंकियों का उपयोग बढ़ जाता है?	जल आपूर्ति पर्याप्त सामान्य Nill

IV. जलवायु की धारणा

तापमान व वर्षा में प्रमुख परिवर्तन/बदलाव	
26	





a	गर्मी के माह में देखा गया			
b	गर्मी के तापमान में देखे गए बदलाव (पिछले पांच वर्षों में)	गर्म दिनों में वृद्धि	गर्म दिनों में कमी	गर्म दिनों में कोई परिवर्तन नहीं
		√ <input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
c	दिनों की संख्या	(25 दिन)		
d	अन्य सूचनाएं (गर्मी माह में कोई परिवर्तन)	Nill		
27				
a	सर्दी के माह में महसूस किया गया			
b	सर्दियों के तापमान में कोई परिवर्तन पाया गया (विगत पांच वर्षों में)	ठण्ड दिनों में वृद्धि	ठण्ड दिनों में कमी	ठण्ड दिनों में कोई परिवर्तन नहीं
		<input type="checkbox"/>	√ <input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
c	दिनों की संख्या	(20 दिन)		
d	अन्य सूचनाएं (सर्दी माह में कोई परिवर्तन)	Nill		
28				
a	मानसून माह में महसूस किया गया			
b	मानसून ऋतु की वर्षा में कोई परिवर्तन देखा गया (विगत पांच वर्षों में)	वर्षा के दिनों में वृद्धि	वर्षा के दिनों में कमी	वर्षा के दिनों में कोई परिवर्तन नहीं
		<input type="checkbox"/>	√ <input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
c	दिनों की संख्या		20 दिन	
d	अन्य सूचनाएं (मानसून माह में कोई परिवर्तन)	Nill		
29				
a	क्या गैर मानसून ऋतु की वर्षा में परिवर्तन हुआ है? (विगत पांच वर्षों में)	वर्षा के दिनों में वृद्धि	वर्षा के दिनों में कमी	वर्षा के दिनों में कोई परिवर्तन नहीं
		<input type="checkbox"/>	√ <input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
b	ग्रीष्म ऋतु की वर्षा में देखे गये परिवर्तन	वर्षा दिनों में वृद्धि	वर्षा दिनों में कमी	वर्षा के दिनों में कोई परिवर्तन नहीं
		<input type="checkbox"/>	√ <input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
c	दिनों की संख्या		15	
d	शरद ऋतु की वर्षा में देखे गये परिवर्तन	वर्षा के दिनों में वृद्धि	वर्षा के दिनों में कमी	वर्षा के दिनों में कोई परिवर्तन नहीं
		<input type="checkbox"/>	√ <input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
e	दिनों की संख्या		15 दिन	
f	अन्य सूचनाएं/जानकारी	Nill		





चरम मौसम की घटनाएं

30 सूखा						
a	सूखे की घटना	प्रथम वर्ष (2022) √□	द्वितीय वर्ष (2021) √□	तृतीय वर्ष (2020) √□	चतुर्थ वर्ष (2019) √□	पंचम वर्ष (2018) √□
b	किस माह में सूखा देखा गया	15 जून से 15 अक्टूबर	15 जून से 15 अक्टूबर	15 जून से 15 अक्टूबर	15 जून से 15 अक्टूबर	15 जून से 15 अक्टूबर
c	सूखे का प्रबन्धन कैसे किया गया (सरकारी सहायता, निजी सहायता, कुएं खोदा आदि)	घरेलू स्तर पर प्रबन्धन – कुछ नहीं करते हैं।			कृषि स्तर पर प्रबन्धन – अतिरिक्त सिंचाई करते हैं।	
d	सूखे की आवृत्ति : सूखे की घटना (पिछले पांच वर्षों में)	वृद्धि √□	कमी □	कोई परिवर्तन नहीं □		
e	अतिरिक्त सूचना कोई पुरानी प्रमुख घटना-1, स्वास्थ्य पर प्रभाव-2					
31 बाढ़						
	बाढ़ की घटना	प्रथम वर्ष (2022) □	द्वितीय वर्ष (2021) □	तृतीय वर्ष (2020) □	चतुर्थ वर्ष (2019) □	पंचम वर्ष (2018) □
b	किस माह में बाढ़ देखा गया	Null	Null	Null	Null	Null
c	बाढ़ का प्रबन्धन कैसे किया गया (सरकारी सहायता, निजी सहायता आदि)	घरेलू स्तर पर प्रबन्धन			कृषि स्तर पर प्रबन्धन	
d	बाढ़ की आवृत्ति : बाढ़ की घटना (पिछले पांच वर्षों में)	वृद्धि □	कमी □	कोई परिवर्तन नहीं √□		
e	अतिरिक्त सूचना कोई पुरानी प्रमुख घटना-1, स्वास्थ्य पर प्रभाव-2	Null				
32 भूस्खलन						
a	भूस्खलन की घटना	प्रथम वर्ष (2022) □	द्वितीय वर्ष (2021) □	तृतीय वर्ष (2020) □	चतुर्थ वर्ष (2019) □	पंचम वर्ष (2018) □
b	किस माह में भूस्खलन देखी गई	Null	Null	Null	Null	Null
c	भूस्खलन का प्रबन्धन कैसे किया गया (सरकारी सहायता, निजी सहायता आदि)	घरेलू स्तर पर प्रबन्धन			कृषि स्तर पर प्रबन्धन	
d	भूस्खलन की आवृत्ति : भूस्खलन की घटना (पिछले पांच वर्षों में)	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं		



		<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		
e	अतिरिक्त सूचना कोई पुरानी प्रमुख घटना-1, स्वास्थ्य पर प्रभाव-2	Null				
33 ओलावृष्टि						
a	ओलावृष्टि की घटना	प्रथम वर्ष (2022)	द्वितीय वर्ष (2021)	तृतीय वर्ष (2020)	चतुर्थ वर्ष (2019)	पंचम वर्ष (2018)
		<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
b	किस माह में ओलावृष्टि हुई	फरवरी मार्च	फरवरी मार्च	फरवरी मार्च	फरवरी मार्च	फरवरी मार्च
c	ओलावृष्टि का प्रबन्धन कैसे किया गया (सरकारी सहायता, निजी सहायता आदि)	घरेलू स्तर पर प्रबन्धन - कुछ नहीं करते हैं।			कृषि स्तर पर प्रबन्धन- कुछ नहीं करते हैं।	
d	ओलावृष्टि की आवृत्ति : ओलावृष्टि की घटना (पिछले पांच वर्षों में)	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं		
		<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		
34 फसलों के कीट/बीमारी						
a	कीट/बीमारी की घटनाक्रम	प्रथम वर्ष (2022)	द्वितीय वर्ष (2021)	तृतीय वर्ष (2020)	चतुर्थ वर्ष (2019)	पंचम वर्ष (2018)
		<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
b	किस माह में कीट/बीमारी को देखा गया?	जनवरी फरवरी	दिसम्बर	जनवरी फरवरी	जनवरी फरवरी	जनवरी
c	किस प्रकार के टिड्डी कीट/बीमारी को देखा गया?	माहो, थ्रिप्स, गंधी कीट, गेरुई (रस्ट), झुलसा, सब्जी में फलछेदक एवं विषाणुजनित रोग	माहो, थ्रिप्स, गंधी कीट, गेरुई (रस्ट), झुलसा, सब्जी में फलछेदक एवं विषाणुजनित रोग	माहो, थ्रिप्स, गंधी कीट, गेरुई (रस्ट), झुलसा, सब्जी में फलछेदक एवं विषाणुजनित रोग	माहो, थ्रिप्स, गंधी कीट, गेरुई (रस्ट), झुलसा, सब्जी में फलछेदक एवं विषाणुजनित रोग	माहो, थ्रिप्स, गंधी कीट, गेरुई (रस्ट), झुलसा, सब्जी में फलछेदक एवं विषाणुजनित रोग
c	कीट/बीमारी का प्रबन्धन कैसे किया गया? (सरकारी सहायता, निजी सहायता आदि)	दुकान से खरीदकर दवा खेतों में डालते हैं।				
d	कीट/बीमारी की आवृत्ति : कीट बीमारी का घटनाक्रम (पिछले पांच वर्षों में)	वृद्धि	कमी	कोई परिवर्तन नहीं		
		<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>		
	अतिरिक्त जानकारी/सूचनाएं					

35 ग्राम पंचायत में आपदा की तैयारी	
	ग्राम पंचायत स्तर पर क्या आपदा प्रबन्धन/तैयारी के उपाय उपलब्ध है?
	क्या ग्रामीणों तक इसकी पहुँच/उपलब्धता है?





	आपदा तैयारी के उपाय	हां	नहीं	हां	नहीं
	ग्राम आपदा प्रबन्धन योजना	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
	ग्राम आपदा प्रबन्धन समिति	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
	पूर्व चेतावनी प्रणाली / मौसमी चेतावनी प्रणाली / कृषि चेतावनी प्रणाली	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
	आपातकाल अनाज बैंक	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
	अन्य	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>

36	अनाज भण्डारण		
	a	ग्राम पंचायत के आपातकालिन खाद्य/अनाज बैंक में किस प्रकार का भोजन भण्डारित किया जाता है?	
		अनाज (विवरण दें)	Nil
		तेल	Nil
		घेनी	Nil
		अन्य खाद्य पदार्थ – उल्लेख करें	Nil
	B	क्या ग्राम पंचायत में शीतगृह है, अगर है तो उसकी क्षमता क्या है?	Nil

37	ग्राम पंचायत में मौसम की चेतावनी, पूर्व चेतावनी प्रणाली, कृषि आधारित चेतावनी के लिए उपलब्ध जानकारी के स्रोत		
		स्थानीय कृषि अधिकारी	Nil
		समाचार पत्र / समाचार / रेडियो	Yes
		मोबाईल फोन / एप	Yes
		मौखिक	Yes
		कृषि विज्ञान केन्द्र / कृषि ज्ञान केन्द्र	Nil
		पशुपालन विभाग	Nil
		उद्यान विभाग	Nil
		अन्य	Nil





कृषि एवं संबंधित गतिविधियों पर प्रभाव (विगत पांच वर्षों में)

38 फसल हानि						
a	घटना का वर्ष	हानि की ऋतु/मौसम खरीफ (1) रबी(2) जायद/अन्य ऋतु (3)	फसल का नाम	हानि के कारण रोग, चरम, घटनाक्रम— गर्मी, ठण्ड, वर्षा, ओलावृष्टि, मिट्टी आदि	अनुमानित हानि की मात्रा (कुन्तल)	परिणाम स्वरूप आय में हानि (औसत रु०)
	प्रथम वर्ष (2022)	रबी(2)	मटर	ठण्ड, रोग	1500	6000000
		खरीफ (1)	उर्द	बरसात	240	840000
	द्वितीय वर्ष (2021)	रबी(2)	मटर	ठण्ड, रोग	1500	6000000
		खरीफ (1)	उर्द	बरसात	240	840000
	तृतीय वर्ष (2020)	रबी(2)	सरसों	ठण्ड रोग	150	750000
		खरीफ (1)	मूंग	बरसात	110	440000
	चतुर्थ वर्ष (2019)
	पंचवां वर्ष (2018)
b	क्या आप फसल बीमा के बारे में जानते हैं?	हां				
		√□	□			
	अतिरिक्त जानकारी (फसल बीमा के लाभार्थी—बड़े किसान, लघु एवं सीमान्त किसान आदि)	लघु किसान				
	फसल बीमा लाभार्थी का संतुष्टि स्तर क्या है?	हां (संतोषजनक)				







39 फसल पद्धति में बदलाव					
a	सामान्य फसल	खरीफ मुंग ज्वार बाजरा मक्का	श्रबी गेंहू सरसों चना मसूर	जायद/अन्य ऋतु	
b	फसल का नाम	पारम्परिक बोवाई का समय	विगत 5 वर्षों में बोआई के समय में परिवर्तन हुआ है/देखा है	अभी बोआई का समय	परिवर्तन के कारण
	मटर	अक्टूबर – नवम्बर	हां	नवम्बर	
	चना	अक्टूबर – नवम्बर	हां	नवम्बर	
	सरसों	अक्टूबर – नवम्बर	हां	नवम्बर	
	गेंहू	दिसम्बर	हां	नवम्बर	
	उर्द	जुलाई	हां	नवम्बर	
	मुंग	अप्रैल	हां	नवम्बर	
c	अन्य सूचना/जानकारी (विलुप्त फसल/प्रजाति आदि उल्लेख करें)	धान की खेती			

40 सिंचाई प्रणाली/पद्धति में परिवर्तन					
a	फसल का नाम	वर्तमान में सिंचाई पद्धति का उपयोगफव्वारा सिंचाई (1), टपक विधि (2), नहर (3), वर्षा आधारित (4), पारम्परिक (5), अन्य (6) (उल्लेखित करें)	वर्तमान में उपयोग किए गए पानी की मात्रा (रुपया/एकड़)	पूर्व में सिंचाई पद्धति का उपयोगफव्वारा सिंचाई (1), टपक विधि (2), नहर (3), वर्षा आधारित (4), पारम्परिक (5), अन्य (6) (उल्लेखित करें)	पूर्व में उपयोग किए गए पानी की मात्रा (रुपया/एकड़)
	मटर , चना , सरसों	3 (नहर)	नहर का पानी फ्री में मिलता है	3 (नहर)	नहर का पानी फ्री में मिलता है





		गेंहु उर्द मूंग	6 (पम्पिंग सेट)	3500 रूपया प्रति एकडं	6 (पम्पिंग सेट)	2500 रूपया प्रति एकडं
	b	ग्राम पंचायत में सिंचाई हेतु पम्पों की संख्या	डीजल आधारित	विद्युत आधारित	सौर पम्प	पारम्परिक सिंचाई विधियां
			डीजल पम्पसेट 300	100	1	100 परिवार नदी तालाब एवं कुआं से सिंचाई
	c	अन्य सूचनाएं/जानकारी अगर कोई है	Nill			
41 पशु पालन/पशुधन						
	a	ग्राम पंचायत में प्रचलित पशुधन और पशुपालन सम्बन्धित गतिविधियां श्रेणी : डेयरी (1) मुर्गी पालन (2) मतस्य पालन (3) सूअर पालन (4) मधुमक्खी पालन (5) अन्य- स्पष्ट करें (6)		1 (घरेलु स्तर पर 3-4 भैंस और गाय रखी गयी है।) 2 (घरेलु स्तर पर 3-4 मुर्गी पालन किया गया है) 3 परिवार (स्वयं के स्तर पर मतस्य पालन)		
	b	डेयरी पर प्रभाव	पशु हानि गाय (1) भैंस (2) अन्य (3)	पशु हानि की संख्या (प्रत्येक पशु को उल्लेख करें)	हानि के कारण (रोग, आयु, दुर्घटना आदि)	हानि का मौसम
		उत्पादकता में कोई परिवर्तन देखा गया? वृद्धि (1) कमी (2) परिवर्तन नहीं (3)				
		प्रथम वर्ष (2022)	गाय (1) भैंस(2)	03 भैंस	घटरूधा	वर्षा
		द्वितीय वर्ष(2021)	गाय भैंस	05 भैंस	घटरूधा	वर्षा
		तृतीय वर्ष (2020)	गाय भैंस	10 गाय 20 भैंस	घटरूधा	वर्षा
		कमी (2)				
		कमी (2)				
		कमी (2)				





	चतुर्थ वर्ष(2019)	गाय भैस	05 गाय 04 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)
	पंचम वर्ष(2018))	गाय भैस	06 गाय 06 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)
	अन्य जानकारी / सूचनाएं	Nill				
c	मुर्गी पालन पर प्रभाव	पक्षी हानि मुर्गी (1) बत्तख (2) अन्य (3)	पक्षी हानि की संख्या (प्रत्येक पक्षी का उल्लेख करें)	हानि के कारण	हानि के मौसम/ ऋतु	उत्पादकता में कोई परिवर्तन पाया गया है? वृद्धि (1) कमी (2) परिवर्तन नहीं (3)
	प्रथम वर्ष (2022)	1	50	शीतलहर	सर्दी	2
	द्वितीय वर्ष(2021)	1	40	शीतलहर	सर्दी	2
	तृतीय वर्ष (2020)	1	60	शीतलहर	सर्दी	2
	चतुर्थ वर्ष(2019)	1	40	शीतलहर	सर्दी	2
	पंचम वर्ष(2018))	1	30	शीतलहर	सर्दी	2
	अन्य जानकारी / सूचनाएं	Nill				
d	अन्य पशुओं पर प्रभाव	पशु हानि (कृपया निर्दिष्ट करें कि कौन से हैं)	पशु हानि की संख्या (प्रत्येक पशु का उल्लेख करें)	हानि के कारण	हानि की ऋतु	उत्पादकता में कोई परिवर्तन पाया गया है? वृद्धि (1) कमी (2) परिवर्तन नहीं (3)
	प्रथम वर्ष (2022)	भैस	03 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)
	द्वितीय वर्ष(2021)	भैस	05 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)
	तृतीय वर्ष (2020)	गाय भैस	10 गाय 20 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)
	चतुर्थ वर्ष(2019)	गाय भैस	05 गाय 04 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)
	पंचम वर्ष(2018)	गाय भैस	06 गाय 06 भैस	घटरूधा	वर्षा	कमी (2)



	अन्य जानकारी / सूचनाए	Nill				
--	--------------------------	------	--	--	--	--





V. कृषि व पशुपालन

प्रमुख उगाई जाने वाले फसलें व सम्बन्धित सूचनाएं/जानकारी									
42 a	उर्वरक उपयोग				कीटनाशक उपयोग				खरपतवारनाशी
	फसल (अनाज, तिलहन, दलहन, उद्यान एवं फूल आदि)	ऋतु/ मौसम	उपज (कू0) प्रति एकड	उर्वरक के प्रकार	औसत प्रयुक्त मात्रा (किग्रा0/ एकड)	क्या विगत पांच वर्षों में उपयोग किये गये उर्वरकों की मात्रा में वृद्धि (1) कमी (2) परिवर्तन नहीं है (3)	कीटनाशकों के प्रकार	औसत प्रयुक्त मात्रा (किग्रा/ एकड)	क्या विगत पांच वर्षों में उपयोग किये गये खरपतवार की मात्रा में वृद्धि (1) कमी (2) परिवर्तन नहीं है (3)
	तिल्ली सरसों	वर्षात बसन्त	100 किलों प्रति एक एकड 300 किलों प्रति एक एकड	डीएपी यूरिया	45 किलों प्रति एक एकड	वृद्धि (1) वृद्धि (1)	टरगा	1 एकड में 500 ग्राम	1 एकड में 500 ग्राम 1 एकड में 500 ग्राम
	मटर उर्द मूंग चना	बसन्त ग्रीष्म ग्रीष्म बसन्त	600 किलों प्रति एक एकड	डीएपी यूरिया	45 किलों प्रति एक एकड	वृद्धि (1) वृद्धि (1) वृद्धि (1) वृद्धि (1)	टरगा	1 एकड में 500 ग्राम 1 एकड में 500 ग्राम	वृद्धि (1) वृद्धि (1) वृद्धि (1) वृद्धि (1)



43 जैविक खेती सम्बन्धित गतिविधियां					
फसल	क्षेत्रफल	प्रति फसल आय (₹0/कुन्तल)	बिक्री हेतु बाजार	तृतीय पक्ष द्वारा प्रमाणित / सत्यापित	
गेहूं	4 एकड	इस वर्ष से शुरुआत हुआ	कल्यानपुरा- 17 किमी ललितपुर -30 किमी	Bajaj - CSR	
उर्द	7 एकड	5 कुन्तल	कल्यानपुरा- 17 किमी ललितपुर -30 किमी	Bajaj - CSR	

44 अन्य स्थाई खेती सम्बन्धी गतिविधियां (जैसे शून्य/जीरो बजट प्राकृतिक खेती)					
फसल	स्थायी गतिविधियां (शून्य जुताई, मल्लिंग, फसल चक्र, अर्न्तःफसलें, वर्मी कम्पोस्ट, कम्पोस्ट, मिश्रित फसले, प्राकृतिक कीट प्रबन्धन, जैव पदार्थ में वृद्धि आदि)	क्षेत्रफल (एकड)	प्रति फसल प्राप्त आय (रूपया)		
गेहूं	कम्पोस्ट	7 एकड	इस वर्ष से किया जा रहा है।		



45	कृषि वानिकी, सामाजिक वानिकी, परती भूमि विकास और अन्य वृक्षारोपण गतिविधियां	पौध रोपण गतिविधियों के प्रकार	आच्छादित क्षेत्रफल	स्थान	योजना अन्तर्गत राष्ट्रीय कृषि वानिकी मिशन (1), समन्वित वाटरशेड प्रबन्धन कार्यक्रम (2), वर्षा आधारित क्षेत्र कार्यक्रम (3), मनरेगा (4), वृक्षारोपण जन आन्दोलन (5), अन्य (6) - उल्लेख करें	मोनोक्लचर (1), मिश्रित प्रजाति (2)	रोपित प्रजातियां	आरम्भ दिनांक	सफलता (प्रतिशत)	कृषि वानिकी गतिविधियों के लाभ तक लोगों की पहुंच/अवसर	पिछले 10 वर्षों में पहुंच/अवसर में परिवर्तन, वृद्धि (1), कमी (2), कोई परिवर्तन नहीं (3)	परिवर्तन के कारण- लाभ में वृद्धि (1), लाभ में वृद्धि (2), प्रजाति सम्बन्धित (3), वन उन्मूलन (4) अन्य (5)- उल्लेख करें
		कृषि वानिकी कार्यक्रम	7 एकड़	प्रावि0 मुरल		02 मिश्रित सागौन	सागौन शीशम नीबू करंज	जुलाई 21	नवम्बर 21	40 परिवार	03	04 - वन उन्मूलन



46 अपनाये गये स्थायी पशुधन प्रबन्धन तकनीक			
पशुधन के प्रकार	ग्राम पंचायत में कुल संख्या (लगभग)	अपनाई गई गतिविधियां (चारा में परिवर्तन, पोषण पूरक अर्थात् पशुआहार, खुले में चराई आदि)	प्राप्त / उत्पादित आय प्रति पशुधन प्रतिवर्ष
गाय (देशी नस्ल)	300	खुले में चरते है और चारा	6000 प्रति पशुधन प्रतिवर्ष
गाय (संकर नस्ल)			
भैंस (देशी नस्ल)	800	खुले में चरते है और चारा	38000 प्रति पशुधन प्रतिवर्ष
भैंस (संकर नस्ल)			
बकरी	300	खुले में चरते है और चारा	4000 प्रति बकरी प्रतिवर्ष
सुअर			
मुर्गी	25	खुले में चरते है	200 प्रति मुर्गी
मत्स्य	01	चारा	250 रू0 प्रति किलो
अन्य	Nil		



45	कृषि वानिकी, सामाजिक वानिकी, परती भूमि विकास और अन्य वृक्षारोपण गतिविधियां	पौध रोपण गतिविधियों के प्रकार	आच्छादित क्षेत्रफल	स्थान	योजना अन्तर्गत राष्ट्रीय कृषि वानिकी मिशन (1), समन्वित वाटरशेड प्रबन्धन कार्यक्रम (2), वर्षा आधारित क्षेत्र कार्यक्रम (3), मनरेगा (4), वृक्षारोपण जन आन्दोलन (5), अन्य (6) - उल्लेख करें	मोनोक्लचर (1), मिश्रित प्रजाति (2)	रोपित प्रजातियां	आरम्भ दिनांक	सफलता (प्रतिशत)	कृषि वानिकी गतिविधियों के लाभ तक लोगों की पहुंच/अवसर	पिछले 10 वर्षों में पहुंच/अवसर में परिवर्तन, वृद्धि (1), कमी (2), कोई परिवर्तन नहीं (3)	परिवर्तन के कारण- लाभ में वृद्धि (1), लाभ में वृद्धि (2), प्रजाति सम्बन्धित (3), वन उन्मूलन (4) अन्य (5)- उल्लेख करें
	कृषि वानिकी कार्यक्रम	7 एकड़	प्रावि0 मुरल			02 मिश्रित सागौन	सागौन शीशम नीबू करंज	जुलाई 21	नवम्बर 21	40 परिवार	03	04 - वन उन्मूलन



46 अपनाये गये स्थायी पशुधन प्रबन्धन तकनीक			
पशुधन के प्रकार	ग्राम पंचायत में कुल संख्या (लगभग)	अपनाई गई गतिविधियां (चारा में परिवर्तन, पोषण पूरक अर्थात् पशुआहार, खुले में चराई आदि)	प्राप्त / उत्पादित आय प्रति पशुधन प्रतिवर्ष
गाय (देशी नस्ल)	300	खुले में चरते है और चारा	6000 प्रति पशुधन प्रतिवर्ष
गाय (संकर नस्ल)			
भैंस (देशी नस्ल)	800	खुले में चरते है और चारा	38000 प्रति पशुधन प्रतिवर्ष
भैंस (संकर नस्ल)			
बकरी	300	खुले में चरते है और चारा	4000 प्रति बकरी प्रतिवर्ष
सुअर			
मुर्गी	25	खुले में चरते है	200 प्रति मुर्गी
मत्स्य	01	चारा	250 रू0 प्रति किलो
अन्य	Nil		



48 ठोस अपशिष्ट उत्पादन/अपशिष्ट प्रबन्धन						
a	अपने घर में प्रतिदिन उत्पन्न होने वाला अपशिष्ट पदार्थ/कचरा	2 किग्रा				
b	आपके ग्राम पंचायत में अपशिष्ट पदार्थ/कचरा कैसे इकट्ठा किया जाता है?	घूरा पर फेंकते हैं				
c	कचरा संग्रह कितनी बार होता है?	<input checked="" type="checkbox"/> प्रतिदिन	<input type="checkbox"/> साप्ताहिक	<input type="checkbox"/> वैकल्पिक दिन		
		<input checked="" type="checkbox"/> हां	<input type="checkbox"/> नहीं			
d	क्या आपके क्षेत्र में कोई स्थान है, जहां कचरा इकट्ठा डाला जा सकता है? यदि हां तो कृपया आपकी ग्राम पंचायत से कितनी दूरी पर है या किस स्थान पर है?	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	मुख्य गांव से 1 किमी		
e	क्या आपके ग्राम पंचायत क्षेत्र में सामान्य कूड़ेदान रखे गये हैं?	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>			
f	क्या आप कचरे को सूखे और गीले कचरे की श्रेणी में बांटते हैं?	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>			
g	आप गृह स्तर पर कचरे का उपचार कैसे करते हैं?	पुनःचक्रमण	कम्पोटिंग	वर्मी कम्पोस्ट	अपशिष्ट	जलाना (अन्य उल्लेखित करें)
	Nil	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	फेंकते हैं।

49 खुले में शौच मुक्त स्थिति				
a	क्या आपका गांव खुले में शौच मुक्त घोषित है?	<input checked="" type="checkbox"/> हां	<input type="checkbox"/> नहीं	
b	स्वयं के शौचालय वाले परिवारों की संख्या	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	25
c	सामुदायिक शौचालय/इज्जत घर की संख्या	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	प्रमुख स्थान – प्रा0 वि0 मुरली के पास एक सामुदायिक शौचालय बना है।
d	क्या शौचालय का उपयोग किया जा रहा है?	नहीं		
e	अगर शौचालय का उपयोग नहीं किया जा रहा है तो क्यों? (साफ-सफाई का अभाव, रख-रखाव का अभाव, बहुत दूर आदि)	गांव से दूरी होने के कारण रख-रखाव नहीं हो पा रहा और दूरी होने के कारण साफ सफाई नहीं होती है		





50	अपशिष्ट जल	घरेलू	व्यवसायिक	औद्योगिक	कृषि गतिविधियां	गंदा नाला
a	अपशिष्ट जल का क्या स्रोत है?	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
b	उत्पन्न अपशिष्ट जल की मात्रा (अनुमानित लीटर प्रतिदिन)	20 लीटर				
c	गांव में किया गया अपशिष्ट जल उपचार, यदि कोई है तो-	Null				
d	अपशिष्ट जल पुनःचक्रण या पुनः उपयोग की गतिविधि, यदि कोई हैं तो-	Null				

51	स्वास्थ्य देखभाल की सुविधा			
	स्वास्थ्य केन्द्र की उपलब्धता	हां	नहीं	उपलब्ध छत का क्षेत्रफल (वर्गमीटर)
a	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	
b	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	
c	उपस्वास्थ्य केन्द्र	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	800 मीटर
d	आंगनवाड़ी	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	स्कूल में संचालित होता है।
e	आशा	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	
f	स्वास्थ्य कैम्प/मेला	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	CSR Bajaj
g	डिजिटल स्वास्थ्य देखभाल	<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>	

52	रोग/बीमारी								
	विगत वर्ष निम्नवत् बीमारी/रोग से कितने लोग प्रभावित हुए हैं?	प्रभावित कुल व्यक्तियों की संख्या	प्रभावित आयु समूह			सामान्य उपचार का विकल्प			
			प्रभावित बच्चों की संख्या	प्रभावित व्यवस्कों की संख्या	प्रभावित वरिष्ठ नागरिकों की संख्या	स्थानीय स्वास्थ्य देखभाल सुविधाएं (उल्लेख करें)	घरेलू देखभाल	घर-घर जाने वाला	अन्य (उल्लेख करें)
a	वेक्टर-जनित रोग (मलेरिया, डेंगू, चिकेनगुनिया आदि)	240	60	120	60	-	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जिला अस्पताल में
b	जल-जनित रोग (हैजा/डायरिया/टाईफाईड/हैपेटाइटिस आदि)	20	10	10	-	-	<input checked="" type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जिला अस्पताल में
c	श्वास सम्बन्धी रोग जो वायु प्रदूषण से होते हैं (इनडोर एण्ड आउटडोर)	05	-	05	-	-	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जिला अस्पताल में





d	कुपोषण	1	01	-	-	आशा एवं ए एन एम	<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>	जिला अस्पता ल में
---	--------	---	----	---	---	--------------------	--------------------------	--------------------------	-------------------------

VII. उर्जा

53		
a	आपके ग्राम पंचायत में कुल कितने घर विद्युतकृत हैं	712
b	ग्राम पंचायत में निम्नलिखित अनुमानित विद्युत उपकरणों की संख्या	Nil
	ए0सी0	Nil
	एयर कुलर	50 परिवार
	रेफ्रिजरेटर/फ्रीज	35 परिवार

54	विद्युत कटौती की आवृत्ति	
a	दिन में कुछ बार	<input checked="" type="checkbox"/>
	दिन में एक बार	<input type="checkbox"/>
	विद्युत कटौती नहीं	<input type="checkbox"/>
b	प्रतिदिन कितने घण्टे गुल रहती है?	12 घण्टे
	यदि प्रतिदिन नहीं तो सप्ताह में कितने घण्टे बिजली गुल होती है?	Nil

55	वोल्टेज अस्थिरता/ उतार-चढ़ाव की आवृत्ति क्या है?	
	दिन में कुछ बार	<input checked="" type="checkbox"/>
	दिन में एक बार	<input type="checkbox"/>
	अस्थिरता/ उतार-चढ़ाव नहीं	<input type="checkbox"/>

56	पावर बैकअप का मतलब विद्युत कटौती के दौरान उपयोग	संख्या
	डीजल चलित जेनरेटर	Nil
	सौर उर्जा	Nil
	इमरजेंसी लाइट	Nil





इन्टवर्टर्स	Nil
अन्य साधन (उल्लेख करें)	Nil

57 नवीकरणीय/अक्षयऊर्जा के स्रोत			
a	क्या गांव में निम्नलिखित में से कोई स्थापना है?	इंस्टालेशन (स्थापना) की संख्या	कुल स्थापित क्षमता (किलोवाट)
	घर की छतों पर सौर उर्जा स्थापना	Nil	
	विद्यालय की छत पर सौर उर्जा स्थापना	Nil	
	चिकित्सालय की छत पर सौर उर्जा स्थापना	Nil	
	ग्राम पंचायत भवन पर सौर उर्जा स्थापना	Nil	
	अन्य सौर उर्जा स्थापना	Nil	
	सौर स्ट्रीट लाइट	Nil	
	बायोगैस	Nil	
	विकेन्द्रित नवीनीकरण उर्जा/मिनी ग्रीड	Nil	
b	क्या आप सौर उर्जा स्थापना के लिए उपलब्ध अनुदान के बारे में जानते हैं (कुछ योजनाओं/कार्यक्रमों का उल्लेख करें)	Nil	

58	भोजन बनाने हेतु प्रयुक्त ईंधन	परिवारों की संख्या	प्रति परिवार प्रयुक्त औसत मात्रा (किग्रा/महीना)
	पारम्परिक जलौनी (उपले/जलौनी लकड़ी)	462	20 किग्रा जलौनी एवं 20 किग्रा उपले / प्रति माह
	बायोगैस	Nil	
	एलपीजी गैस	250 परिवार	16 किग्रा /प्रतिमाह
	विद्युत	Nil	
	सौर उर्जा	Nil	
	अन्य (कोयला, मिट्टी का तेल, चारकोल आदि)	Nil	





59 वाहन की संख्या				
	वाहन के प्रकार	ग्राम पंचायत में वाहन संख्या (अनुमानित)	प्रयुक्त ईंधन के प्रकार	तय की गई औसत दूरी (किमी प्रतिदिन)
a	जीप	03	जल	40 किलोमीटर
b	कार	Nil		
c	दो पहिया वाहन	250	पेट्रोल	10 किलोमीटर
d	विद्युत चालित वाहन	Nil		
e	आटो	Nil		
f	ई-रिक्शा	Nil		
g	अन्य	Nil		

60 कृषि यंत्र				
	ग्राम पंचायत में कृषि यंत्रों/मशीनों की संख्या	प्रयुक्त ईंधन के प्रकार	तय की गई औसत दूरी (किमी प्रतिदिन)	
a	टैक्टर	38	डीजल	3 किलोमीटर
b	कम्बाईन हारवेस्टर	Nil		
c	अन्य (कृपया उल्लेख करें)	Nil		

61 ग्राम पंचायत में अवस्थित पेट्रोल पम्प (अगर कोई है)										
	ईंधन के प्रकार	प्रतिदिन की बिक्री	पम्प से आपूर्ति वाले गांव की संख्या	कितने प्रकार के वाहन एक दिन/महीना में पेट्रोल पम्प से ईंधन लेते हैं? (समय/ अवधि का उल्लेख करें)						
				टैक्टर	कृषि यंत्र	जीप	कार	दो पहिया वाहन	आटो	ई-रिक्शा
a	Nil									
b	Nil									





62 औद्योगिक इकाई				
	उद्योग के प्रकार	संख्या	उर्जा के स्रोत: ग्रिड विद्युत (1), डीजल जेनरेटर (2), नवीनीकरण/अक्षय उर्जा (3)	उर्जा की खपत प्रति माह विद्युत का उपयोग (किलोवाट) ईंधन उपयोग (लीटर प्रतिदिन)
	Null			



अनुलग्नक III: एचआरवीसीए रिपोर्ट



कलाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत विकास योजना

ग्राम पंचायत – उदयपुरा

विकासखण्ड - बार

जनपद - ललितपुर

2023 – 24

खतरा ,जोखिम , नाजुक एवं क्षमता विश्लेषण

जलवायु परिवर्तनशीलता – प्रवृत्ति / परिवर्तन, मुख्य चुनौतिया / झटके एवं तनाव

गाँव के सम्मानित और बुजुर्ग लोगो से पूछने पर ज्ञात हुआ की लगभग 1000 वर्ष पहले कुछ लोग इस तरफ से निकल रहे थे जब वह यहाँ पहुँचे तो रात हो गयी थी और अपना डेरा यही डाल के सो गये जब सुबह में उदय हुआ तो उनको यह स्थान उनको बहुत पसंद आया तब उन लोगो ने यही रहने का फैसला कर लिया और उनका कहना था की यही पर सूर्य का उदय हुआ है इस लिए इस गाँव का नाम उदयपुरा रखा जायेगा तब से इस गाँव का नाम उदयपुरा चलता चला आ रहा है . गाँव के पूरब में बडैया नाला ,पश्चिम में उटारी नदी एवं, उत्तर में गाँव का आदर्श तालाब , प्राचीन हनुमान मंदिर एवं बजाज पावर प्लान्ट और दक्षिण में रेलवे लाइन है जो गाँव को आकर्षित बनाता है .

लगभग 20 वर्षों से उदयपुरा में जलवायु में बहुत परिवर्तन हुआ है जिसमे सूखा और गर्मी का प्रभाव सबसे ज्यादा रहा है .इस परिवर्तन के कारण हर मौसम में बदलाव हुआ है . पहले बरसात के दिनों में हर दो दिन में और एक सप्ताह तक लगातार बारिश होती रहती थी लेकिन अब बारिश में बहुत कम हो गया है . सर्दी के समय में बहुत परिवर्तन हो गया है अब केवल जनवरी माह में ठंडी पड रही है ,पहले की अपेक्षा अब गर्मी बहुत ज्यादा बढ़ गयी है. अब हर मौसम में गर्मी बढ़ रही है. गाँव के लोगो से बात हुई तो उनका कहना है की बढ़ती गर्मी फसल को काफी नुकसान पहुँचाती है एवं गर्मी के वजह से फसल की उपज कम हो गयी है.

गाँव में PRA टूल्स के माध्यम से गाँव में विभिन्न गतिविधिया की गयी जिसके माध्यम से प्राथमिक निम्न आँकडो के आधार पर जलवायु आपदा खतरा जोखिम प्रोफाइल में आपेक्षित सूचनाओ को संकलन किया गया. आपदा –खतरा जोखिम प्रोफाइल से सम्बंधित सूचनाए निम्नवर है

1. गाँव को प्रभावित करने वाली आपदाओं की पहचान करना एवं इनका प्राथमिकीकरण :

समुदाय में PRA गतिविधियों के माध्यम से उन आपदाओं के बारे में विचार – विमर्श किया गया जिनसे उनके दैनिक दिनचर्या , आजीविका , शिक्षा , स्वास्थ्य ,पेयजल एवं साफसफाई आदि प्रभावित होते है. इन सभी चर्चा के आधार पर आपदाओं की एक सूची प्राप्त हुई। इस सूची के माध्यम से उत्पन्न समस्याओं की तुलनात्मक रैंकिंग को देखते हुए उनका प्राथमिकीकरण किया गया .इस गाँव की मुख्य आपदा सूखा है . समुदाय में उन आपदाओं के बारे में चर्चा की गयी जिसका असर अभी तक गाँव के ऊपर पडा है .

आपदा का इतिहास एवं क्षति :

गाँव में सन् 2014 में सूखा पड़ने के कारण गाँव के लोग पलायन करने पर मजबूर हो गए थे. उसी वर्ष ओला ने पंचायत की सभी फसलो को बर्बाद कर दिया . सन् 2014 में बरसात के दिनों में आकाशीय विजली गिरी जिसके कारण 2 लोग और 04 पशु मर गए . 2016 में बहुत भयंकर सूखा पड़ने के कारण फसल विल्कुल नहीं बोयी गयी जिसके कारण अर्थव्यवस्था कमजोर पड़ गयी , और लगभग 250 लोग गाँव से पलायन कर गए थे . प्रत्येक वर्ष सूखा की वजह से फसल बर्बाद हो रही थी इसी प्रकार सन् 2017 में सूखा पड़ने के वजह से गाँव में लगभग 300 परिवार पर असर पड़ा था. सन 2019 में मई के महीने में बहुत तेजी से तूफान आया जो धुल, मिट्टी और तेज हवा के साथ था इस तूफान में गाँव में जिनके टिनशेड लगे थे वो उड़ कर गाँव से दूर चले गए थे साथ में पेड़ उखड़ गए थे इस घटना से पूरे गाँव के लगभग सभी परिवारों को जनधन का भारी नुकसान हुआ था.

विस्तृत विवरण हेतु संलग्नक संख्या – 04 देखें .

आपदा की पहचान एवं प्राथमिकीकरण के आधार पर निम्न आपदायें ग्राम पंचायत उदयपुरा को प्रभावित करते हैं –

आपदा का नाम	जन 0	फर0	मार्च 0	अप्रै 0	म ई	जून 0	जुला 0	अग स्त	सित 0	अक्ट 0	नव 0	दिस0
सूखा												
आंधी तूफान												
ओला पत्थर												
लू चलना												
शीतलहर												

समुदाय में मौसमी कैलेंडर बनाने से उस दौरान समुदाय से हुयी चर्चा से स्पष्ट हुआ है की गर्मी ,और सर्दी के बढ़ते प्रभाव से बहुत सारी समस्याओ का सामना करना पड़ता है.

2. जलवायु परिवर्तन जनित आपदा के जोखिम / खतरों का मानचित्रण एवं आकलन

ग्राम पंचायत उदयपुरा में मानवजीवन , आजीविका , पर्यावरण एवं स्वास्थ्य का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है. सूखा शीतलहर एवं लू आदि आपदाओं का उदयपुरा के सन्दर्भ में विभिन्न क्षेत्रो पर इनके विभिन्न प्रकार से जोखिम की संभावना बनती है. गाँव के लोगो ने माना की जोखिमों से उन्हें प्रतिवर्ष तरह-तरह के नुकसान सहना पड़ता है जो निम्न प्रकार है –

क्रम	संभावित जोखिम प्रभावित क्षेत्र	

	आपदा/ खतरे	संभावित जोखिम का क्षेत्र	जोखिम	आबादी	घर	संसाधन
1	सूखा	पेयजल	जल स्तर का नीचे जाना /पेयजल की कमी / संकट	पूरा गाँव	700	82 इंडिया मार्का हैण्ड पंप एवं 18 प्राइवेट हैण्ड पंप का जल स्तर निचे चला जाता है
		कृषि	कुआ और नल के बोर का पानी बहुत नीचे चला जाता है	पूरा गाँव	400	लगभग 100 एकड़ खेती खराब होने की आशंका
2	लू चलना	पशुपालन	जानवरों को चारा का संकट, तापमान के वजह से बीमारी होना	गाय, भैंस एवं बकरी पालन	200 परिवार	चारागाह
		स्वास्थ्य	पशुओ और मानव का गर्मी के वजह से स्वास्थ्य खराब होना	पूरा गाँव	712 परिवार	स्वास्थ्य सेवार्यें बाधित होना, पेयजल संकट, चारा सूख जाना
3	शीतलहर	स्वास्थ्य	मानव एवं जानवरों को ठण्ड लगना	पूरा गाँव - बुजुर्ग साँस की बीमारी में वृद्धि	712 घर के बच्चे एवं बुजुर्ग	शीतलहर के प्रकोप से मानव स्वास्थ्य हानि
		कृषि	शीतलहर से फसल को नुकसान	पूरा गाँव	572 परिवार	खेत
		पशुपालन	पशु क्षति खेत में फसल को नुकसान	पूरा गाँव	200 पशुपालन	ठंड के कारण प्रत्येक वर्ष बकरियों की मृत्यु
4	ओला - वृष्टि	मानव स्वास्थ्य एवं पेयजल	छोटे बच्चो, वृद्धजन महिलाओ के गिरने, चोट लगने का खतरा	पूरा गाँव	150 कच्चे मकान	कच्चे घरों का क्षतिग्रस्त होना फसल का नष्ट होना

आजीविका के साधनों पर आपदा का प्रभाव

इस क्षेत्र के आजीविका का मुख्य साधन कृषि, कृषिगत मजदूरी एवं पशुपालन है. सूखा के दौरान आजीविका ना होने के कारण लोग पलायन करते हैं. आजीविका के साधन आपदा से सर्वाधिक प्रभावित होते हैं जिससे सम्बंधित सूचनाएँ संकलित कर **संलग्नक** की गयी है.

विस्तृत विवरण हेतु संलग्नक संख्या – 05 देखें .

3. नाजुकता विश्लेषण

समुदाय के लोगो से बात करने पर उनका कहना है की हर बार इस तरह की आपदाओं को सहते सहते हम लोग कमजोर हो चुके हैं इन सभी आपदा के चलते बच्चे, महिला और बुजुर्गों पर बहुत ज्यादा असर पड़ा है . इस आपदा से सुरक्षित होने के लिए इसके बारे में जानना बहुत जरूरी था इसलिए गाँव की आँगनबाडी और आशा की मदद से नाजुक वर्ग के लोगो की जानकारी ली गयी जिसमे ग्राम पंचायत के संसाधनों की स्थिति के बारे में पता किया गया.

1. सूखा

गाँव में लोगो से बात करने पर यह पता चला की सूखा गाँव की सबसे बड़ी समस्या और आपदा है . लगभग 15 वर्षों से बरसात की अनियमितता के चलते बारिश में कमी आयी है इस वर्ष भी बारिश बहुत ज्यादा नहीं हुई जिससे सूखा जैसे स्थिति बनी रही है शुरू के दिनों में बारिश हुई लेकिन आखिरी समय में बिल्कुल बारिश नहीं हुई फिर जब फसल तैयार हो चुकी थी तब अचानक से बारिश हो गयी जिससे फसल को काफी नुकसान हो गया और उसके बाद बारिश बिल्कुल नहीं हुयी . इस वजह से गाँव में सूखे की स्थिति बनी रही.

- सिंचाई हेतु गाँव में कुल 250 कुंए है जो खेती के पानी का प्रबंध करते हैं वो गर्मी के दिनों में सूख जाते हैं . गाँव के कुंए का पानी बहुत गन्दा है और कुंए में बहुत गन्दगी रहती है एवं कई कुओं में मिट्टी और कूड़ा जमा है.
- गाँव में कई बार वृक्षारोपण करवाया गया लेकिन सभी पौधे सूखा के वजह से सूख जाते हैं इस समय बाग – बगीचे के मामले में पूरा ग्राम पंचायत खाली पड़ा है निजी रूप से पेड़ लगे हैं जिसमे शीशम , आम, बरगद और सागौन के पेड़ लगे हैं .
- गाँव में मेड बंदी जैसी गतिविधियों की बहुत जरूरी है क्योंकि की बारिश के समय खेत में पानी नहीं टिकता है.
- वृक्षारोपण का काफी अभाव है जिससे पर्यावरण पर बहुत ज्यादा असर पड रहा है. खेतों के किनारे और सड़कों के किनारे पौधारोपण की ज्यादा आवश्यकता है.
- गाँव में केवल 4 एकड़ गेहूँ और 7 एकड़ उर्द के अलावा बाकि के सभी खेत पर रसायनिक खाद का प्रयोग किया जा रहा है.

सूखा का ग्राम पंचायत पर प्रभाव

- सूखा से ग्राम पंचायत बहुत प्रभावित होता है . गर्मी के समय 82 हैंडपंप और निजी स्तर पर बने सभी कुओं का जल स्तर निचे चला जाता है.
- जानवरों के लिए चारा का संकट हो जाता है साथ में तापमान बढ़ने से तालाब का पानी सूख जाता है जिससे जानवरों को पानी पीने में समस्या होती है.
- सूखे से फसल ज्यादा बर्बाद हो जाती है और खेत में पानी चलाने की लागत बहुत ज्यादा देनी पड़ती है इस वर्ष 2022 में लगभग 40 प्रतिशत कम फसल हुई है.

2.जलजमाव :

ग्राम पंचायत उदयपुरा में तालाब के पास बरसात के दिनों में जल जमाव के कारण खतरा बना रहता है क्यों की तालाब नीचे है और उसके ऊपर से रास्ता बना है जिसके कारण बच्चो ,बुजुर्ग एवं जानवरों को गिरने का डर हमेशा बना रहता है.

इस तालाब में मुरली ,कैलोनी और उदयपुरा का पानी जमा होता है .

- गाँव की मुख्य सड़क जो बार और कैल्गुवा को जोड़ती है वो मार्ग जगह जगह से टूटी है जिससे आवागमन में समस्या होती है और बरसात के दिनों में 3 माह तक जलजमाव बना रहता है.
- मुरली, कैलोनी गाँव में नाली नहीं बनी है जिससे गाँव में जलजमाव बना रहता है.
- उदयपुरा में पानी निकास के लिए नाली का चेंबर लगभग 70 प्रतिशत टूटा है जिससे जलजमाव बना रहता है.
- गाँव में प्रत्येक इण्डिया मार्का हैण्ड पंप के पास नाली ना बनने के कारण पानी का जल जमाव बना रहता है .स्थिति ऐसी हो गयी है की बाल्टी और घड़ा को रखने की जगह नहीं बची है, यदि बाल्टी और घड़ा रखा जाता है तो वो गंदे पानी में रखना पड़ता है.
- गाँव के तालाब के ऊपर रेलिंग बनाना बहुत जरूरी है ,क्यों की तालाब नीचे है और रास्ता उसके ऊपर, जिससे बच्चो , महिलाओं और जानवरों का तालाब में गिरने का खतरा बना रहता है.
- गाँव से खेत के तरफ निकलने वाले मार्ग में जल जमाव बना रहता है जिससे बरसात के दिनों में किसान खेत तक नहीं पहुच पाते है .

3.लू लगना

- ग्राम पंचायत में सबसे ज्यादा खेती और मजदूरी करने वाले परिवार है जो नियमित अपने खेत में या दूसरे के यहाँ मजदूरी करने जाते है मई- जून में सबसे ज्यादा लू लगने के वजह से लोग घर के बाहर नहीं निकल पाते है इस कारण से लोगों का कार्य प्रभावित होता है और लू लगने से उनका स्वस्थय खराब हो जाता है. विशेषकर बच्चो और बुजुर्ग को यह मौसम ज्यादा प्रभावित करता है. इस मौसम में जानवरों को पानी पीने की समस्या ज्यादा होती है .

4.शीतलहर

- शीतलहर ग्राम पंचायत की एक बड़ी आपदा है यह सर्दियों के मौसम में दिसम्बर के अंत में और जनवरी के मध्य तक रहता है। शीतलहर से गाँव में लगभग सभी लोग प्रभावित होते हैं साथ में कृषि क्षेत्र में भी काफी असर पड़ता है। ज्यादातर महिलायें चूल्हे पर खाना बनाती हैं जो इस माह में जलौनी की ज्यादा समस्या हो जाती है।
- आलू और तिलहन में ओला पड़ने से खराब हो जाती है और फसल सूख जाती है।

समुदाय की व्यवहारगत एवं ढांचा गत संरचना में कमियाँ हैं जो निम्नवर हैं

- ग्राम पंचायत में लोगों को और जागरूक करने की जरूरत है क्योंकि सरकार की कृषि सम्बंधित महत्व पूर्ण योजनायें (तालाब जीर्णोधार , मेडबंदी आदि) चल रही है जिसका लाभ नहीं ले पा रहे हैं।
- ग्राम पंचायत में पशुपालन हो रहा है लेकिन अच्छी नस्ल के पशु नहीं हैं एवं पशुओं का बीमा आदि की जानकारी न के बराबर है
- ग्राम पंचायत में लगभग 80 प्रतिशत लोगों के पास पक्की छत है लेकिन सोलर उर्जा सम्बंधित कोई गतिविधियां नहीं हैं . सड़क के किनारे या धार्मिक स्थलों पर प्रकाश के लिए एवं सिंचाई के लिए सोलर उर्जा सम्बंधित कोई गतिविधियां नहीं हैं
- ग्राम पंचायत में कृषि केंद्र , बीज केंद्र , किसान संगठन , सामुदायिक अनाज बैंक, युवा मण्डल , धार्मिक मण्डल आदि सामाजिक संगठन की कमी है. इस कारण आपदा के समय समुदाय को सरकारी एवं बाहरी सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है.
- ग्राम पंचायत में कूड़ा निस्तारण लिए कोई स्थान चयनित नहीं है और पंचायत में कोई कूड़ापात्र नहीं रखा गया है समुदाय के लोग गीला एवं सूखा कचरा एक साथ रोड के किनारे एवं नाली में फेकते हैं जिससे पानी बहाने में अवरोधक होता है. अभी लोगों को और जागरूक करने की जरूरत है.
- किसान लोग अपने खेतों में कीटनाशक दवाओं का प्रयोग ज्यादा करते हैं.
- पंचायत में जल जनित , मच्छर -मक्खियों से जनित बीमारियों की आशंका बनी रहती है यहाँ टाइफाइड, मलेरिया , सम्बंधित बिमारियां होती रहती हैं.
- पंचायत में पशुपालन बहुत ज्यादा है लेकिन गोबर का प्रयोग जैविक खाद एवं कम्पोस्ट खाद बनाने हेतु नहीं करते हैं बल्कि सड़को के किनारे ढेर लगाकर रखे रहते हैं. कुछ लोग इसके कंडे बनाकर प्रयोग करते हैं.
- आँगनबाड़ी केंद्र का कोई निजी भवन नहीं है जिससे स्कूल के बच्चों एवं आँगनबाड़ी के बच्चों को पठन पाठन में समस्या होती है.
- पंचायत में एक सामुदायिक शौचालय है जो मुख्य गाँव से दूर बना है एवं बहुत गन्दा पड़ा है .

4. क्षमता विश्लेषण :

ग्राम पंचायत उदयपुरा क्लाइमेट्स स्मार्ट विलेज बनाने में स्वयं कितना जागरूक है इसके लिए पंचायत का आँकलन किया गया . जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले आपदाओं एवं खतरों से गाँव के साथ आस पास उपलब्ध संसाधन भी प्रभावित होते हैं. यह

संसाधन भौतिक, पर्यावरण एवं मानव संसाधन के रूप में होते हैं। इनके पहचान करने से आपदा के खतरों से निपटने में आसानी होती है।

उदयपुरा से राष्ट्रीय मार्ग से करीब 30 किलोमीटर की दूरी पर है पंचायत से बार ब्लाक की दूरी 15 km की है और थाना बानपुर की दूरी लगभग 12 km है। जिला मुख्यालय की दूरी लगभग 30 km की है जिस कारण से गाँव का विकास कार्य नहीं हुआ है। इस पंचायत में समुदाय के लिए सामुदायिक शौचालय, बच्चों के बेहतर शिक्षा के लिए 03 प्राथमिक विद्यालय और एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय बना है, लोगों के आवागमन हेतु खडंजा और कुछ इंटरलॉकिंग लगा हुआ है, पंचायत में मुख्यतः 80 प्रतिशत लोगों के पास पक्के मकान हैं जल निकासी हेतु नाली बनी है लेकिन बीच बीच में टूटी पड़ी है लेकिन जगह-जगह पर चेंबर टूटा है जिससे पानी की निकासी बाधित होती है। उदयपुरा में एक पंचायत भवन बना है, बच्चों के टीकाकरण हेतु गाँव में एक स्वास्थ्य उपकेन्द्र बना है लेकिन ANM पद वैकेंट है जिससे गाँव में बच्चों के टीकाकरण और महिलाओं के टीकाकरण में समस्या होती है, ग्राम गाँव पेयजल व्यवस्था हेतु में 82 हैण्ड पंप चालू है लेकिन उसके आस पास पानी जमा रहता है। पंचायत में महिला संगठन के रूप में 07 महिला समूह बना है जो बैंक से लिंक है। गाँव में आदर्श तालाब बना है जो गाँव को आकर्षित बनाता है।

सुविधा संसाधन मानचित्र से लिए गए आकड़े एवं तथ्य

संसाधन मानचित्र से किये गए क्षमता आँकलन को तीन भागों में बाटा गया है जिसमें भौतिक संसाधन, प्राकृतिक संसाधन उपलब्धता और मानव संसाधन है। समुदाय के साथ चर्चा से प्राप्त सूचनाये निम्न प्रकार है।

भौतिक संसाधनों की उपलब्धता एवं गाँव से दुरी

क्रम संख्या	विवरण	संख्या	संपर्क व्यक्ति का नाम एवं संख्या	गाँव से दुरी
1	प्राथमिक विद्यालय	03	श्री राजेंद्र यादव (प्रा० अ०), श्रुषी चौरसिया (प्रा० अ०), बालकृष्ण सोनी (प्रा० अ०)	0.3 किमी
2	पूर्व माध्यमिक विद्यालय	01	श्री विश्वेन्द्र यादव (प्रा० अ०)	0.2 किमी
3	पंचायत भवन	01		0 किमी
4	सरकारी राशन की दुकान	01	रामलाल राठोर	0.3 किमी
5	थाना बानपुर	1	श्री कृपा शंकर चौबे	15 किमी
6	तहसील - महरौनी	01		28 किमी
7	जिला चिकित्सालय एम्बुलेंस व्यवस्था - ललितपुर	01	102, 108	30 किमी
8	विकास खंड कार्यालय बार	01		15 किमी
9	प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बानपुर	01		15 किमी
10	आपदा विभाग - बार	01		15 किमी
11	पोस्ट ऑफिस	01	उदयपुरा	0.3 किमी
12	बिजली विभाग - बानपुर	01	1098	15 किमी
13	डिग्री कॉलेज	01		30 किमी

14	फायर स्टेशन - महरौनी	01	101	28 किमी
15	बस स्टेशन - बानपुर	01		15 किमी
16	रेलवे स्टेशन - उदयपुरा	01		0 किमी
17	खाद बीज दवा केंद्र - बानपुर	01		15 किमी
18	बाजार - बानपुर	01		15 किमी
19	बैंक - पावर प्लान्ट चिकलौआ	01		07 किमी
20	आयुर्वेदिक अस्पताल - उदयपुरा	01		0 किमी

प्राकृतिक संसाधन उपलब्धता संख्या एवं दूरी

क्रम संख्या	संसाधन	संख्या	विवरण / नाम / संपर्क संख्या	दूरी
01	तालाब	03	ग्राम सभा	0.2 किमी
02	कुआ	250	निजी (सिचाई हेतु)	5 किमी
03	नाला	02		0.4 किमी
04	बाग	0		किमी
05	नदी	01	उटारी नदी	5 किमी
06	नहर	01	उटारी नहर	3 किमी
07	कृषिगत क्षेत्र	5500 एकड़		7 किमी
08	खुला क्षेत्र / सामुदायिक भूमि	130 एकड़		किमी

मानव संसाधन

क्रम संख्या	विवरण	संख्या	संपर्क व्यक्ति का नाम एवं संख्या	संपर्क नंबर	गाँव से दूरी
01	ग्राम प्रधान	01	श्री रामरतन यादव	8127288114	0 किमी
02	शिक्षक	03	श्री राजेंद्र यादव (प्रा० अ०), श्रषी चौरसिया (प्रा० अ०), बालकृष्ण सोनी (प्रा० अ०)	7007697708 8127248714	0.2 किमी 0.4 किमी 0.3 किमी
03	आंगनबाड़ी	02	श्रीमति सरस्वती देवी श्रीमति उर्मिला देवी	8052701228 8052701228	0.4 किमी 0.2 किमी
04	आशा बहू	03	श्रीमति विमला यादव श्रीमति सुनीता राय श्रीमति नीरेंद्र कुमारी	9648751068 9792880100 9956184411	0.2 किमी 0.4 किमी 0.4 किमी
05	एएनएम	01	वैकेंट	-	

06	ग्राम पंचायत सचिव	01	श्री सौरभ यादव	8400326023	0.2किमी
07	रोजगार सेवक	01	श्री अजीत सिंह	8948297290	0किमी
08	पंचायत सहायक	01	कु. रोशनी यादव	6393889436	0किमी
09	बी सी सखी	01	रजनी नामदेव	9984014410	0किमी
10	समूह सखी	01	श्रीमति किरन	9554554686	0किमी
11	लेखपाल	01	श्री अविनाश कुमार	7355609645	30 किमी
12	सफाई कर्मी	02	श्री जयनेन्द्र श्री प्रदीप	9369476624 8707649366	1.2किमी 1.किमी

वित्तीय संसाधन

क्रम संख्या	मद	वर्ष 2022 - 2023
01	15 वा वित्त आयोग	1400000/-
02	स्वयं के राजस्व का स्रोत	-

क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत उदयपुरा की कार्य योजना निर्माण

क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत विकास योजना बनाने हेतु PRA टूल्स, FGD और खुली बैठक के माध्यम से सेक्टर अनुसार जानकारी प्राप्त किया गया है. तदनुसार सेक्टर अनुसार उदयपुरा ग्राम की क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत की कार्ययोजना तालिका -

क्रसं	कार्य का क्षेत्र	कार्य का नाम	कार्य का विवरण	परिसम्पत्ति का नाम	अनुमानित धनराशि	अवधि	योजना का परिव्यय
1	सेक्टर 1. मानव विकास एवं सामाजिक सुरक्षा साफ सफाई एवं स्वच्छता	मेड़बंदी कर वृक्षारोपण	कैलोनी में 20 किसानों की मेड़बंदी एवं वृक्षारोपण	कैलोनी	30 लाख	3 माह	मनरेगा , 15वां राजवित्त
2		सोलर उर्जा द्वारा प्रकाश की व्यवस्था	100 घरों के छतों पर सौर उर्जा के लिए पैनल एवं प्रकाश की व्यवस्था छत का क्षेत्रफल 2000 वर्ग मी०	उदयपुरा - 60 कैलोनी - 20 मुरली - 10 दलित बस्ती - 10	40 लाख	2 माह	15वां राजवित्त

3		चेक डेम निर्माण	कारिटरिया के पास चेकडेम निर्माण	उदयपुरा	25 लाख	5 माह	मनरेगा , 15वां राजवित्त
4			बढ़ईया नाले पर चेकडेम निर्माण	कैलोनी	40 लाख	6 माह	मनरेगा , 15वां राजवित्त
5		साफ सफाई एवं स्वच्छता	105 कुओं की सफाई चुनाई एवं मरम्मत का कार्य	उदयपुरा	90 लाख	3 वर्ष	15वां राजवित्त
6		कूड़ा पात्र रखवाना	80 कूड़ा पात्र की आवश्यकता है	पंचायत भवन -2 स्कूल - 08 अस्पताल -02 तालाब - 04 चौराहा -20 गाँव में -44	3 लाख	2 माह	15वां राजवित्त
7		शौचालय निर्माण	150 नये शौचालय की आवश्यकता है	दलित बस्ती - 25 मुरली - 25 उदयपुरा - 70 कैलोनी - 30	18 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
8		हैण्ड पंप रिबोर	हैण्ड पंप रिबोर होना है	बगला - 1 दलित बस्ती - 2मुरली - 2कैलोरी - 3विद्यालय - 2अस्पलात -1मोटर स्टैंड -1उदयपुरा - 3	10 लाख	1 वर्ष	15वां राजवित्त
9		नाडेप जैविक खाद का पिट निर्माण	मृदा को नम बनये के लिए व्यक्तिगत स्तर पर 20 वर्मी कम्पोस्ट एवं नापेड कम्पोस्ट पिट का निर्माण	उदयपुरा -8 कालोनी -6 मुरली -21 दलित बस्ती -2	4 लाख	1 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
10		तालाब के चारो तरफ पौधा रोपण	मंदिर के पास के तालाब पर पौधा रोपण	मंदिर के पास का तालाब	5 लाख	6 माह	मनरेगा

11	पानी सफाई हेतु ट्रीटमेन्ट केंद्र	गंदे पानी की सफाई हेतु ट्रीटमेन्ट की जरूरत थी	नहर के पास दलित बस्ती रेलवे लाइन के पास - उदयपुरा मंदिर के पास कालोनी	15 लाख	1 वर्ष	15वां राजवित्त
12	नाला निर्माण	रिछारिया के मकान से रामस्वरूप के मकान तक लगभग 200 मी	उदयपुरा	5 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
13		रामस्वरूप के मकान से रेलवे लाइन तक लगभग 600 मी	उदयपुरा	14 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
14		रामलाल के मकान से पलवान के मकान तक 250 मी	उदयपुरा	3 लाख	1 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
15		प्यारेलालके मकान से पुलिया तक लगभग 300 मी	मुरली	6 लाख	1 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
16		रामदयाल के मकान से गोबन सिंह के मकान तक लगभग 200 मी	उदयपुरा	5 लाख	1 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
17		जालन के मकान से बरजुरा के मकान तक 150 मी	उदयपुरा	3 लाख	1 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
18		इंटरलॉकिंग	दगोरके मकान से हीरालाल के मकान तक पेयवर ब्लाक 1500 मी	उदयपुरा	4 लाख	2 वर्ष

19			सोहन के मकान से मंदिर तक पेयवर ब्लाक 200 मी	उदयपुरा	6 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
20			कैलोनीरोड से हरिराम के मकान तक पेयवर ब्लाक 400 मी	उदयपुरा	14 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
21			पतु के मकान से खाजराज के मकान तक पेयवर ब्लाक 400 मी	उदयपुरा	14 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
22		मिट्टी का कार्य एवं नयी सड़क निर्माण	रघुवीर के मकान से नदी तक कच्ची सड़क 2000 मी	कैलोनी	20 लाख	3 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
23			कैलोनी रोड से मंदिर तक 1000 मी	कैलोनी	12 लाख	3 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
24			उदयपुरा रोड से राकेश के खेत तक 1600 मी	उदयपुरा	14 लाख	3 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
25			मुरली स्कूल से नहर तक 2000 मी	मुरली	25 लाख	3 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
26			गोविन्द के मकान से किन्दराऊ के मकान तक 1000 मी	मुरली	16 लाख	3 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त	
27	सेक्टर 2. बुनियादी/आधारभूत संरचना एवं पर्यावरण		आंगनबाड़ी केंद्र का नाम	गाँव में दो आंगनबाड़ी हैं जिनका भवन नहीं है	उदयपुरा, कैलोनी	8 लाख	2 वर्ष	15वां राजवित्त
28				पूमांविंके स्कूल क्यारी एवं पौधारोपण होना	उदयपुरा	10 हजार	6 माह	15वां राजवित्त

29	स्कूल में पौधारोपण, शौचालय निर्माण एवं जीर्णोद्धार	प्र०वि०मुरली में शौचालय की मरम्मत करना	प्र०वि०मुरली	1 लाख	6 माह	15वां राजवित्त
30		स्कूल में क्यारी एवं पौधारोपण	प्र०वि०मुरली	70 हजार	6 माह	15वां राजवित्त
31	उपस्वास्थ्य केन्द्र मरम्मत	उदयपुरा के उपकेन्द्र का मरम्मत कार्य	उदयपुरा	20 लाख	1 वर्ष	15वां राजवित्त
32	सोखता गड्ढा	भूगर्भ जल प्रबंधन हेतु लगभग 70 गड्ढा खोदना	उदयपुरा- 20	2 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
33			मुरली 10			मनरेगा , 15वां राजवित्त
34			कैलोनी 20			मनरेगा , 15वां राजवित्त
35			दलित बस्ती 10			मनरेगा , 15वां राजवित्त
36	तालाब का जीर्णोद्धार	मंदिर के पास का तालाब ,तालाब के पास तालाब की तरफ रेलिंग	उदयपुरा	70 हजार	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
37		तालाब पर स्नान हेतु घाट एवं सीढियों का निर्माण	मंदिर के पास तालाब	60 हजार	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
38	नाला निर्माण	दसइया के मकान से बबाता रोड तक लगभग 300 मीटर	उदयपुरा	9 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
39		देहरे से नयुवा के मकान तक लगभग 600 मी०	कैलोनी	15लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त

40		नाला सफाई एवं खुदाई	शिव नरायन के मकान से कलगुवा रोड तक नाली की सफाई लगभग 300 मी०	उदयपुरा	2लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
41		नाली के ऊपर चैम्बर बनवाना	भरत के मकान से कलगुवा रोड तक	उदयपुरा	3 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
42		तालाब खुदवाई एवं जीर्णोद्धार	ग्रामसभा के जमीन पर मंदिर के पास	कैलोनी	40 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
43		सड़क का मरम्मत कार्य	कैलुगुवा रोड से बबाता रोड तक लगभग 300 मी०	उदयपुरा	10 लाख	2 वर्ष	मनरेगा , 15वां राजवित्त
44		सड़क का मरम्मत कार्य	कैलुगुवा रोड से मढिया तक 250 मी०	उदयपुरा	12 लाख	2 वर्ष	15वां राजवित्त
45		सड़क का मरम्मत कार्य	देवी मंदिर से तालाब तक उदयपुरा - 300मी०	उदयपुरा	10 लाख	2 वर्ष	15वां राजवित्त
46	सेक्टर 3.आजीविका कृषि पशुपालन	नर्सरी	गाँव में एक नर्सरी का निर्माण करना - उदयपुरा	उदयपुरा	4 लाख	6 माह	15वां राजवित्त
47		स्थाई पशु आश्रय स्थान	व्यक्तिगत 5-6 पशु क्षमता वाला 50 पशु आश्रय स्थल का निर्माण नियमित टीकाकरण	उदयपुरा	50लाख	4 माह	15वां राजवित्त

क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत विकास योजना के निरूपण की सहभागी प्रक्रिया

1.वातावरण निर्माण

2. खुली बैठक

3. ट्रांजेक्ट वाक (ग्राम भ्रमण)

4. सामाजिक मानचित्र

1. वातावरण निर्माण

ग्राम पंचायत उदयपुरा में आगामी वित्तीय हेतु क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत विकास योजना के निरूपण हेतु गाँव के सभी लोगो की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए ग्राम प्रधान राम रतन यादव के द्वारा पुरे गाँव में मुनादी पिटवाकर सबको सूचना करवाया गया की सभी ग्राम वासियों को दिनांक 17-02-23 को ग्राम पंचायत में दोपहर 12 बजे इकठ्ठा होना है. यह सूचना पुरे गाँव और मजरे में करवाया गया ताकि सभी लोग उपस्थित हो सके.

2. खुली बैठक

ग्राम पंचायत उदयपुरा ले लिए क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्योजना हेतु ग्राम सभा की खुली बैठक पूर्व निर्धारित सूचना के अनुसार दिनांक 17-02-23 को ग्राम पंचायत भवन में किया गया. इस बैठक में ग्राम प्रधान , वार्ड सदस्य , आगनबाडी कार्यकर्त्री , आशा बहु , ग्रामीण किसान , महिलाये , पुरुष , बच्चे और बुजुर्ग उपस्थित थे. ग्राम पंचायत के 2 राजस्व गाँव और 2 मजरो से कुल 122 लोग भाग लिया. जिसमे कुल पुरुष - 75 महिला -32 एवं 15 बच्चे भाग लिए.

विस्तृत विवरण हेतु संलग्नक संख्या - 01 देखें .

3. ट्रांजेक्ट वाक (ग्राम भ्रमण)

ग्राम पंचायत उदयपुरा के जलवायु आपदा एवं जोखिम को समझाने के लिए पुरे गाँव का भ्रमण किया गया जिसमे गाँव के मुख्य स्थान जैसे तालाब , नदी , नाहर , कुआ और गाँव की गली की गन्दगी को लोगो को दिखाकर उनको संवेदित करने की कोशिश किया गया. इस भ्रमण के दौरान 3 प्राथमिक स्कूल एवं एक पूर्व माध्यमिक स्कूल आदि का भ्रमण किया गया.

विस्तृत विवरण हेतु संलग्नक संख्या - 02 देखें .

4. सामाजिक मानचित्र

पंचायत के सभी राजस्व ग्राम और मजरे का भ्रमण के बाद पंचायत भवन के प्रांगण में सामाजिक मानचित्र गाँव के लोगो के द्वारा बनाया गया उस मानचित्र के आधार पर जो सूचनायें प्राप्त किया गया जो निम्न है.

विवरण	संख्या
ग्राम पंचायत की चौहद्दी का क्षेत्रफल	7 km

कुल टोलो की संख्या	02
कुल घरों की संख्या	712
कुल पक्के मकान की संख्या	562
कुल कच्चे घरों की संख्या	150
आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की संख्या	105
विकलांग जन की संख्या	09
महिला मुखिया परिवार	05
इण्डिया मार्का हैण्डपम्प	82

जातिगण / श्रेणीगत विवरण

सामान्य जाति के घरों की संख्या	135
पिछड़ी जाति के घरों की संख्या	422
अनुसूचित जाति के घरों की संख्या	155
कुल घरों की संख्या	712

विस्तृत विवरण हेतु संलग्नक संख्या - 03 देखें .

संलग्नक - 01

वातावरण निर्माण

ग्राम पंचायत उदयपुरा की आगामी वित्तीय वर्ष हेतु क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत विकास योजना के निरूपण हेतु ग्राम पंचायत के समय जन की सहभागिता सुनिश्चित करने की दृष्टि से ग्राम प्रधान द्वारा दिनांक 16-03-23 को पूरे पंचायत में मुनादी पिटवाकर सबको सूचना दिया गया कि दिनांक 17-02-23 को पंचायत भवन उदयपुरा पर खुली बैठक आयोजित की गयी है.

खुली बैठक

ग्राम पंचायत उदयपुरा ले लिए क्लाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्योजना हेतु ग्राम सभा की खुली बैठक पूर्व निर्धारित सूचना के अनुसार दिनांक 17-02-23 को ग्राम पंचायत भवन में किया गया. इस बैठक में ग्राम प्रधान , वार्ड सदस्य , आगनबाडी कार्यकर्त्री , आशा बहु , ग्रामीण किसान ,महिलाये ,पुरुष ,बच्चे और बुजुर्ग उपस्थित थे.ग्राम पंचायत के 2 राजस्व गाँव और 2 मजरो से कुल 122 लोग भाग लिया. जिसमे कुल पुरुष - 75 महिला -32 एवं 15 बच्चे भाग लिए.

इस बैठक की अध्यक्षता ग्राम प्रधान राम रतन यादव जी ने किया और सबका स्वागत करते हुए बैठक के उद्देश्य पर प्रकाश डाला एवं बताया की जलवायु परिवर्तन का असर पूरा विश्व झेल रहा है . इसका प्रभाव हमारे ग्राम पंचायत एवं ग्राम वासियों पर भी पड रहा है . सरकार और तमाम संस्थाए इस पर कार्य कर रही है । पूरे उत्तर प्रदेश में 39 जिले जलवायु परिवर्तन का असर झेल रहे है जिसमे से एक जिला ललितपुर भी है. ललितपुर जिला में ग्राम पंचायत उदयपुरा को इस कार्य के लिए चयनित किया गया है . इस कार्ययोजना में आप सभी ग्राम वासियों की सहभागिता बहुत महत्वपूर्ण है. इस बैठक में पर्यावरण को लेकर बात किया गया जिसमे निकल कर आया की अपने गाँव में सबसे ज्यादा सूखा का प्रभाव रहता है जिससे पूरा गाँव प्रभावित होता है.ग्राम पंचायत के लगभग सभी लोग कृषि करते है इस लिए सूखा का प्रभाव सबसे ज्यादा रहता है. सूखा के वजह से पेड़ पौधे जिन्दा नहीं रहते है. ग्राम पंचायत में एक आदर्श तालाब है उस तालाब के ऊपर रास्ते पर रेलिंग बनाना है इस वजह से हमेशा बच्चो ,बुजुर्ग और जानवरों को खतरा बना रहता है. पहले रास्ते पर रेलिंग लगी थी लेकिन उसको चोर चुरा ले गए तबसे तालाब ऐसे पड़ा हुआ है. तालाब के पास वाले ग्राम पंचायत की जमीन पर पौधारोपण करवाया गया था लेकिन वह सूखा से सब सूख गया जो बचा था उसको जानवर खा गए. इस बैठक के माध्यम से सबको बताया गया की आप सभी लोगो के बीच कल सहभागिता सामाजिक मानचित्र टूल्स को किया जायेगा जिसमे आप सभी लोगो को आना जरूरी है उसके माध्यम से जानने की कोशिश किया जायेगा की कहाँ क्या है और उस पर बातचीत किया जाएगा.



ग्राम पंचायत समितियों का विवरण -

नियोजन एवं विकास समिति अध्यक्ष - श्री रामरतन यादव सदस्य श्रीमति कांति देवी श्रीमति रजनी देवी श्रीमति विनीता देवी श्री रामकिशन श्री चिपसाव श्रीमति फुला	शिक्षा समिति अध्यक्ष - श्री रामरतन यादव सदस्य श्रीमति कांति देवी श्रीमति रजनी देवी श्रीमति रजनी देवी श्री सुदीप श्री दलपतराम श्री रामकिशन	जल प्रबंधन समिति अध्यक्ष - श्रीमति कांति देवी सदस्य श्रीमति रजनी देवी श्रीमति रजनी देवी श्रीमति फुला श्री सुदीप श्री चिपसाव श्रीमति विनीता देवी
निर्माण कार्य समिति अध्यक्ष - श्री रामकिशन सदस्य श्रीमति कांति देवी श्रीमति रजनी देवी श्रीमति विनीता देवी श्री सुदीप श्रीमति फुला श्रीमति रजनी देवी	स्वास्थ्य एवं कल्याण समिति अध्यक्ष - श्री सुदीप सदस्य श्रीमति रजनी देवी श्रीमति कांति देवी श्रीमति रजनी देवी श्री चिपसाव श्रीमति विनीता देवी श्री दलपतराम	प्रशासनिक समिति अध्यक्ष - श्री रामरतन यादव सदस्य श्रीमति कांति देवी श्रीमति रजनी देवी श्रीमति फुला श्रीमति विनीता देवी श्री दलपतराम श्री सुदीप श्री रामकिशन

क्रम संख्या	पंचायत सदस्य का नाम	पद
1	श्री राम रतन यादव	ग्राम प्रधान
2	श्रीमती विनीता	वार्ड सदस्य
3	श्रीमती क्रांति	वार्ड सदस्य
4	फूला	वार्ड सदस्य
5	रजनी देवी	वार्ड सदस्य
6	राजो	वार्ड सदस्य
7	दया बाई	वार्ड सदस्य
8	श्री सुदीप	वार्ड सदस्य
9	श्री नरेश	वार्ड सदस्य

10	श्री चिप साहब	वार्ड सदस्य
11	श्री जगदीश	वार्ड सदस्य
12	श्री राम किशन	वार्ड सदस्य
13	श्री दलपत	वार्ड सदस्य
14	श्रीमती रजनी	वार्ड सदस्य

संलग्नक - 02

ट्रांजेट वाक (ग्राम भ्रमण)

ग्राम पंचायत उदयपुरा के जलवायु आपदा एवं जोखिम को समझाने के लिए पूरे गाँव का भ्रमण किया गया जिसमें गाँव के मुख्य स्थान जैसे तालाब ,नदी , नाहर , कुआ और गाँव की गली की गन्दगी को लोगो को दिखाकर उनको संवेदित करने की कोशिश किया गया. इस भ्रमण के दौरान 3 प्राथमिक स्कूल एवं एक पूर्व माध्यमिक स्कूल आदि का भ्रमण किया गया.

ट्रांजेट वाक के दौरान अवलोकन की गयी स्थितियां

गाँव की बसावट	ग्राम पंचायत उदयपुरा में 2 राजस्व (उदयपुरा , कैलोनी)ग्राम एवं 2 मजरे (मुरली ,नाहर बस्ती) हैं . गाँव में कुल 712 घर हैं जिसकी आबादी 6256 है . प्राथमिक विद्यालय हर राजस्व गाँव और मजरे में हैं. गाँव में हैण्डपंप, कुआ ,नहर और एक नदी मिली है .गाँव में वाटर सप्लाई के पानी की पाइप देखने को मिला लेकिन अभी कनेक्शन नहीं हुआ है.
ताल तलैया	3 तालाब (एक बड़ा और 2 छोटे) ग्राम के उत्तर में एक आदर्श तालाब है और दो छोटे तालाब हैं जिससे गाँव के जानवरों के पानी पीने के लिए उपयोग किया जाता है. गाँव के पश्चिम में एक उटारी नदी है इसी से जुड़ी उटारी नहर निकली है.
हरित क्षेत्र बाग - बगिया	ग्राम पंचायत के भ्रमण के दौरान हरित क्षेत्र कम देखने को मिला.
भौतिक संसाधन	ग्राम पंचायत में कुल 82 हैण्ड पंप चालू हैं जो पानी पीने का श्रोत हैं. 3 प्राथमिक विद्यालय और एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय हैं. गाँव में एक सामुदायिक शौचालय बना है लेकिन उपयोग में नहीं है बंद पड़ा है.



पंचायत में पानी के सप्लाई का पाइप लगा है पर अभी कनेक्शन और टोटी नहीं लगी है पंचायत में एक आयुर्वेदिक हॉस्पिटल है जो बहुत जर्जर अवस्था में है .गाँव में एक उपकेन्द्र भी बना है पर ठीक अवस्था में नहीं है.



संलग्नक - 03

1. सामाजिक मानचित्र

पंचायत के सभी राजस्व ग्राम और मजरे के भ्रमण के बाद पंचायत भवन के प्रांगण में बैठक करके मीटिंग के उद्देश्य के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया की आप लोगो के माध्यम से जलवायु परिवर्तन पर सामाजिक मानचित्र के माध्यम से जलवायु परिवर्तन की जानकारी लिया जा सके इसलिए आप सभी लोगो को बुलाया गया है। सामाजिक मानचित्र गाँव के लोगो के द्वारा जमीन पर बनाया गया उस मानचित्र के आधार पर जो सूचनायें प्राप्त किया गया जो निम्न है.

विवरण	संख्या
ग्राम पंचायत की चौहद्दी का क्षेत्रफल	7 km
कुल टोलो की संख्या	02
कुल घरों की संख्या	712

कुल पक्के माकन की संख्या	562
कुल कच्चे घरों की संख्या	150
आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की संख्या	105
विकलांग जन की संख्या	09
महिला मुखिया परिवार	05
इण्डिया मार्का हैण्डपम्प	82

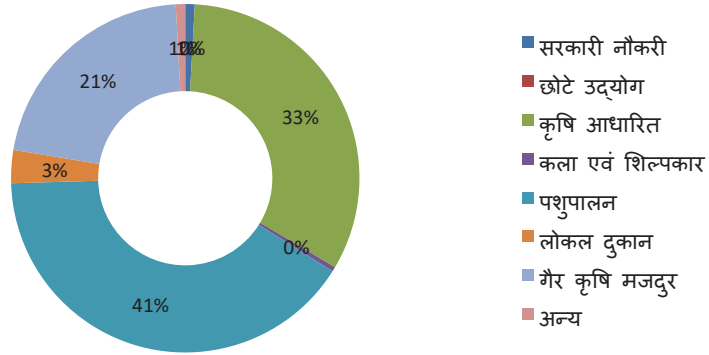
जातिगण / श्रेणीगत विवरण

सामान्य जाति के घरों की संख्या	135
पिछड़ी जाति के घरों की संख्या	422
अनुसूचित जाति के घरों की संख्या	155
कुल घरों की संख्या	712

आजीविका के साधन

आजीविका के साधन	व्यक्तियों की संख्या
सरकारी नौकरी	10
छोटे उद्योग	0
कृषि आधारित	372
कला एवं शिल्पकार	5
पशुपालन	462
लोकल दुकान	35
गैर कृषि मजदूर	245
अन्य	10

व्यक्तियों की संख्या



सामाजिक मानचित्र फोटो



आपदाओं का ऐतिहासिक समय रेखा एवं घटनाक्रम

ग्राम पंचायत उदयपुरा में अतीत में जो कुछ आपदाएं आयी हैं उन सभी आपदाओं को जानने का प्रयास किया गया . इस समय समुदाय की मुख्य आपदा सूखा है . इसी के साथ विगत दो वर्षों से कोरोना वीमारी भी एक आपदा के रूप में पंचायत झेल रहा है . इस वीमारी से बचने के लिए लॉक डाउन लग जाने के कारण लोग अपने घरों में बंद हो गये थे. इसका सबसे अधिक प्रभाव खेती में तैयार उत्पाद के लिए बाजार ना मिलने के रूप में था. सब कुछ बंद होने के कारण बड़े पैमाने पर लोगों की आजीविका प्रभावित हुई .

क्रम संख्या	वर्ष	आपदा / खतरा	घटनाओं का कारण	मृतकों की संख्या	प्रभावित लोगों की संख्या	आर्थिक क्षति	न्यूनीकरण हेतु किया गया कार्य
1	2014	आकाशिय बिजली	प्राकृतिक कारण	2 आदमी और 4 पशु	6 परिवार	पैसों की हानि	कोई कार्य नहीं
2	2016	सूखा	बारिश नहीं हुयी	-	250 लोग गाँव से पलायन कर गए थे		कुआ खोदा गया
3	2017	सूखा	बारिश नहीं हुयी	-	150 लोग गाँव से पलायन कर गए थे		कुआ खोदा गया
4	2019	तूफान		-	पूरा गाँव	पेड़ टूटे , छप्पर उड़ गए, टीन उड़ गए	कोई कार्य नहीं

5	2020-2022	कोरोना का प्रभाव	गाँव में लोग बाहर से आये	-	-	रोजगार बाधित तथा आर्थिक क्षति	वैक्सीनेशन
---	-----------	------------------	--------------------------	---	---	-------------------------------	------------

संलग्नक - 5

आजीविका के साधनों पर आपदाओं का प्रभाव

क्रम संख्या	आजीवि का के प्रकार	परिवार की संख्या	आपदा	आपदा का प्रभाव			क्या प्रभाव पडा है
				अधिक	माध्यम	कम	
1.	कृषि	पूरा गाँव	सूखा				<ul style="list-style-type: none"> • खेत खाली पड़े रहते हैं • सिंचाई के पानी में खर्च ज्यादा होते हैं. • सभी फसलों की पैदावार कम हो जाती है.
		पूरा गाँव	शीतलहर				<ul style="list-style-type: none"> • फसल में माहो का प्रकोप बढ जाता है • फसल की पैदावार प्रभावित होती है. • सरसों में माहो का प्रकोप ज्यादा होता है.
2.	पशुपालन	पूरा गाँव	सूखा				<ul style="list-style-type: none"> • जानवरों का चारा कम पैदा होता है. • पशुओं का दूध कम हो जाता है. • गर्मी के कारण जानवरों को बीमारी का प्रकोप हो जाता है।
		पूरा गाँव	शीतलहर				<ul style="list-style-type: none"> • मुर्गी पालन में मुर्गी बहुत मरती है. • जानवरों को चारा की समस्या बहुत ज्यादा होती है.

						<ul style="list-style-type: none"> • जानवरों में दुग्ध उत्पादन कम हो जाता है.
3.	मजदूरी		सूखा			<ul style="list-style-type: none"> • सूखा में लोग पलायन करते हैं • लोगो की आजीविका प्रभावित होती है. • आर्थिक संकट उत्पन्न हो जाता है.
			शीतलहर			<ul style="list-style-type: none"> • लोगो को मजदूरी नहीं मिलती है • स्वास्थ्य खराब रहता है .

साई ज्योति टीम

नाम	पद	संस्थान
श्री अजय कुमार श्रीवास्तव	सचिव	साई ज्योति संस्थान
श्री रविन्द्र कुमार	प्रोजेक्ट मैनेजर	साई ज्योति संस्थान
श्री जोगेंद्र सिंह	डिस्ट्रिक्ट कंसल्टेंट	साई ज्योति संस्थान
श्री भगवान सिंह	टीम लीडर	साई ज्योति संस्थान

अनुलग्नक IV: लक्ष्य, लागत, उत्सर्जन से बचाव और अनुक्रमण क्षमता का अनुमान

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियाँ	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
हरित स्थानों और जैवविविधता को बढ़ाना				
1	वृक्षारोपण गतिविधियाँ	<p>चरण 1: वर्तमान में ग्राम पंचायत में हो रही गतिविधियों के सामान (प्रधान के साथ परामर्श के दौरान जानना अनिवार्य है)</p> <p>चरण 2: भूमि की उपलब्धता के आधार पर वृक्षारोपण लक्ष्य को 500-1000 तक बढ़ाना।</p> <p>चरण 3: भूमि की उपलब्धता के आधार पर लक्ष्य को 500-1000 तक और बढ़ाना।</p>	<p>वृक्षारोपण (तैयारी, पौधारोपण, श्रम आदि)⁸⁷ = ₹ 70 प्रति पेड़ (पौधे डीओईएफसीसी, उत्तर प्रदेश सरकार से निःशुल्क उपलब्ध हैं)</p> <p>ट्री गार्ड (धातु)⁸⁸ = ₹ 1,200 प्रति इकाई</p> <p>वृक्षारोपण का रखरखाव: ₹ 1.5 लाख/हेक्टेयर</p>	<p>सागौन की प्रजातियों के आधार पर अनुक्रमण की क्षमता का अनुमान - प्रति पेड़ 5.6 से 10 टन कार्बन डाइऑक्साइड (tCO₂e)</p>
2	आरोग्य वन	<ul style="list-style-type: none"> 300-400 हेक्टेयर से कम क्षेत्र वाले ग्राम पंचायत के लिए, 0.1 हेक्टेयर क्षेत्र के साथ एक आरोग्य वन का सुझाव दिया जा सकता है। लगभग 1000 हेक्टेयर क्षेत्रफल वाली ग्राम पंचायत के लिए, भूमि की उपलब्धता के आधार पर 0.2-0.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल वाले एक आरोग्य वन का सुझाव दिया जा सकता है। 		<p>कृषि वानिकी के लिए वृक्षारोपण घनत्व 100 पेड़/हेक्टेयर माना जाता है</p>
3	कृषि वानिकी	<p>(यह व्यक्तिपरक हो सकता है और कृषि-वानिकी गतिविधियाँ चरण 1 से शुरू की जा सकती हैं)</p> <p>चरण 2: कुल कृषि भूमि का 40% ; साथ ही + प्रति हेक्टेयर 100 पेड़ लगाया जाना</p> <p>चरण 3: शेष कृषि भूमि ; साथ ही + प्रति हेक्टेयर 100 पेड़ लगाया जाना</p>	<p>कृषि वानिकी की लागत⁸⁹ = ₹ 40,000/हेक्टेयर⁹⁰</p>	

87 वृक्षारोपण दिशानिर्देशों और ग्राम पंचायत से प्राप्त सुझावों के अनुसार लागत

88 लागत बाजार भाव के अनुसार

89 कृषि वानिकी दिशानिर्देशों पर उप-मिशन, सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन के अनुसार लागत

90 <https://link.springer.com/article/10.1007/s42535-022-00348-9>

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
----------	----------------------	---	--	------------------------------------

सतत कृषि

1	सूक्ष्म सिंचाई-ड्रिप एवं स्प्रिंकलर (छिड़काव) सिंचाई	<p>चरण 1: कुल कृषि भूमि का 30% सम्मिलित किया जाना</p> <p>चरण 2: कुल कृषि भूमि का 70% सम्मिलित किया जाना</p> <p>चरण 3: कुल कृषि भूमि का 100% सम्मिलित किया जाना</p>	₹ 1 लाख प्रति हेक्टेयर	
2	मेड़बंधी का निर्माण	<p>चरण 1: सम्मिलित की जाने वाली कुल कृषि भूमि का 50%</p> <p>चरण 2: सम्मिलित की जाने वाली कुल कृषि भूमि का 100%</p> <p>चरण 3: मेड़ों का रखरखाव</p> <ul style="list-style-type: none"> - मेड़ों का निर्माण कृषि क्षेत्रों की परिधि पर किया जाता है - ग्राम पंचायत में किसानों के पास विभिन्न आकारों की भूमि होती है। अनुमान : सभी खेत वर्गाकार होते हैं। 	1 मी. मेड़बंदी के लिए ⁹¹ = ₹ 150 रुपये	
3	कृषि तालाबों का निर्माण	<p>चरण 1: 5-10 तालाब</p> <p>चरण 2: 15-20 तालाब चरण : यदि आवश्यक हो तो अधिक + तालाबों का रखरखाव</p> <p>1 कृषि तालाब की क्षमता = 300 m³</p> <p>ग्राम पंचायत में बड़े खेतों की संख्या + तालाबों की आवश्यकता पर निर्भर करता है (प्रधान से की गई बातचीत के आधार पर)</p>	1 कृषि तालाब का निर्माण ⁹² = ₹ 90,000	
4	मिनी मौसम स्टेशन	चरण 1: चरण 1: 1 मिनी मौसम निगरानी स्टेशन की स्थापना	1 मिनी मौसम स्टेशन की लागत = ₹ 1,50,000	

91 एचआरवीसीए में ग्राम पंचायत से प्राप्त इनपुट के अनुसार लागत

92 एचआरवीसीए में ग्राम पंचायत से प्राप्त सुझावों के अनुसार लागत

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
5	प्राकृतिक खेती को अपनाना	<p>चरण 1: कुल कृषि भूमि का 15% सम्मिलित किया जाना</p> <p>चरण 2: कुल कृषि भूमि का 40% सम्मिलित किया जाना</p> <p>चरण 3: कुल कृषि भूमि का 100% सम्मिलित किया जाना</p>	<p>a. प्रशिक्षण और प्रदर्शन (3 सत्र): ₹ 60,000</p> <p>b. प्रमाणीकरण (विशेषज्ञ परामर्श के आधार पर): ₹ 33,000</p> <p>c. फसल प्रणाली का परिचय- जैविक बीज खरीद; नाइट्रोजन संचयन संयंत्र लगाना--> प्रति एकड़ लागत = ₹ 2,500</p> <p>d. एकीकृत खाद प्रबंधन- तरल जैव उर्वरक की खरीद और उसका उपयोग; तरल जैव कीटनाशकों की खरीद और उसका उपयोग; प्राकृतिक कीट नियंत्रण तंत्र की स्थापना; फॉस्फेट युक्त जैविक खाद---> प्रति एकड़ लागत = ₹ 2,500</p> <p>e. गणना (प्रति एकड़ परिवर्तन की लागत) = a + b + c + d = ₹ 1,00,000 कुल लागत⁹³: क्षेत्र (हेक्टेयर) * e--> 2.471 * 1,00,000 = ₹ 2,47,100</p>	

93 यूपी राज्य जैविक प्रमाणीकरण एजेंसी (UPSOCA_Tariff_20March.pdf (apeda.gov.in)) और राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA) दिशानिर्देश

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
----------	----------------------	---	--	------------------------------------

जल निकायों का प्रबंधन और कायाकल्प

1	वर्षा जल संचयन (आरडब्ल्यूएच) संरचनाएं	<p>चरण 1: सभी सरकारी/पीआरआई भवनों में</p> <p>चरण 2: सभी पीआरआई भवनों + पुनर्भरण गड्डों में वर्षा जल संचयन संरचनाओं (आरडब्ल्यूएच) की स्थापना (एचआरवीसीए में सुझाई गई)</p> <p>चरण 3: 1000 वर्ग फुट के आवासीय भवनों में आरडब्ल्यूएच संरचनाओं की स्थापना + सभी नए भवनों में आरडब्ल्यूएच प्रणाली को शामिल करना</p>	<p>10 m³ क्षमता वाली 1 वर्षा जल संचयन संरचना की लागत⁹⁴ = ₹ 35,000</p> <p>1 पुनर्भरण गड्डे की लागत = ₹ 35,000</p>	
2	जल निकायों का रखरखाव (यदि ये वृक्षारोपण समग्र हरित स्थान को बढ़ाने के प्रयासों का हिस्सा हैं, जैसा कि ऊपर बताया गया है तो लागत की दोगुनी गणना नहीं की जाएगी)	<p>चरण 1: जल निकायों की सफाई, गाद निकालना और बाड़ लगाना + जल निकायों की परिधि के आसपास वृक्षारोपण (1000) (ट्री गार्ड के साथ)</p> <p>चरण 2: जल निकायों के आसपास अतिरिक्त 100 वृक्षारोपण (वृक्ष रक्षकों के साथ) + जल निकायों का निरंतर रखरखाव</p> <p>चरण 3: जल निकायों का निरंतर रखरखाव</p>	<p>अनुमानित लागत⁹⁵: 1. 1 तालाब का जीर्णोद्धार (सफाई, गाद निकालना, जलग्रहण क्षेत्र में वृद्धि, आदि) = ₹ 7 लाख</p> <p>2. 1 रिटेंशन तालाब (300 m³ क्षमता) का निर्माण = ₹ 7 लाख</p> <p>3. ट्री गार्ड के साथ वृक्षारोपण = ₹ 1,200 प्रति यूनिट</p> <p>4. रखरखाव की लागत:</p> <p>a. 1 तालाब/जल निकाय = ₹ 3, 75,000</p> <p>b. 1 प्रतिधारण तालाब = ₹ 50,000</p> <p>c. ट्री गार्ड वाला पेड़ = ₹ 20 प्रति यूनिट</p>	
3	जल निकासी के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना	<p>चरण 1: मौजूदा नालियों की सफाई और गाद निकालना + जल निकासी के बुनियादी ढांचे को बढ़ाना (नए नालों का निर्माण)</p> <p>चरण 2 और 3: चरण 1 में जारी गतिविधियाँ जारी जायें</p>	<p>अधिकतर एचआरवीसीए दस्तावेज़ में दी गई लागतों को देखें</p>	

94 छत पर वर्षा जल संचयन दिशानिर्देश, भारतीय मानक (IS 15797:2008)

95 एचआरवीसीए में जीपी से प्राप्त इनपुट के अनुसार लागत

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
4	अपशिष्ट जल प्रबंधन	चरण 1: 1 MLD की क्षमता वाले 1 DEWATS की स्थापना	DEWATS के लिए: 6,256 के साथ जीपी के लिए जनसंख्या और जल आपूर्ति मात्रा 120 लीटर/व्यक्ति/दिन के रूप में, अपशिष्ट जल उत्पन्न होता है 80% पानी आपूर्ति, इसलिए कुल अपशिष्ट जल उत्पन्न 7,50,720 लीटर/दिन या है 0.75 एमएलडी. तो, विचार कर रहे हैं भविष्य की मांग, ए की अनुमानित क्षमता DEWATS = 1 एमएलडी (मौजूदा का 20%) अपशिष्ट जल उत्पन्न 1 एमएलडी क्षमता की लागत DEWATS ₹50 लाख है	

सतत और उन्नत गतिशीलता

1	मौजूदा सड़क बुनियादी ढांचे को बढ़ाना	चरण 1: सड़क मरम्मत/रख-रखाव कार्य + सड़क आरसीसी/इंटरलॉकिंग कार्य चरण 2 और 3: सड़कों का निरंतर रखरखाव	सड़क रख-रखाव /मरम्मत की प्रति किमी लागत ⁹⁶ : ₹ 50,00,000 प्रति किलोमीटर	
2	माध्यम आकर के सार्वजनिक परिवहन (आईपीटी) को बढ़ाना	ग्राम पंचायत की आवश्यकतानुसार सुझावों के अनुसार ई-ऑटोरिक्शा	1 ई-ऑटोरिक्शा की कीमत: ~₹ 3,00,000 उपलब्ध सब्सिडी: प्रति वाहन 12,000 रुपये तक	

96 प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजीएसवाई) दर/किमी के अनुसार लागत और एचआरवीसीए में जीपी से प्राप्त इनपुट

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
3	ई-ट्रैक्टर और ई-माल वाहन किराए पर लेने की सुविधा	चरण 1: डीजल ट्रैक्टरों और माल परिवहन वाहनों के इलेक्ट्रिक विकल्पों को बढ़ावा देना + किसानों को ई-वाहनों के दीर्घकालिक लाभों के बारे में जागरूक करना चरण 2 & 3: निरंतर जागरूकता	1 ई-ट्रैक्टर की कीमत = ₹ 6,00,000 1 कमर्शियल ई-वाहन की कीमत = ₹ 5 से 10 लाख	

सतत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन

1	अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली की स्थापना	चरण 1: a. ग्राम पंचायत की घर-घर कचरा संग्रहण प्रणाली के अंतर्गत 100% घरों को शामिल करना b. मौजूदा कचरे का 100% एकत्र करने के लिए इलेक्ट्रिक कचरा वैन की व्यवस्था c. कूड़ादानों की स्थापना d. अन्य हितधारकों (एसएचजी, स्थानीय स्क्रैप डीलर, स्थानीय व्यवसाय और एमएसएमई) के साथ साझेदारी बनाना	कुल उत्पन्न कचरा = प्राथमिक डेटा, यदि उपलब्ध नहीं है, तो ग्राम पंचायत में उत्पन्न प्रति व्यक्ति औसत कचरा लगभग 80 ग्राम प्रति दिन लें; बायोडिग्रेडेबल/जैविक अपशिष्ट- 58% गैर-बायोडिग्रेडेबल/अकार्बनिक अपशिष्ट - 42% आवश्यक ई-कचरा वैन की संख्या = कुल उत्पन्न कचरा/प्रत्येक वैन की क्षमता (310 किग्रा) कूड़ेदानों की संख्या = एचआरवीसीए से या उचित स्थानों की पहचान करके अनुमान लगाया जा सकता है स्थान (पीआरआई भवन, सार्वजनिक भवन, पार्क, आदि)	
---	------------------------------------	---	--	--

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
		चरण 2: a. ग्राम पंचायत-स्तरीय पुनर्चक्रण और प्लास्टिक श्रेडर इकाई b. अतिरिक्त कूड़ादानों की स्थापना c. अतिरिक्त इलेक्ट्रिक कचरा वैन की व्यवस्था d. मौजूदा सुविधाओं/बुनियादी ढांचे का रखरखाव e. साझेदारी को बढ़ाना	प्लास्टिक श्रेडर इकाई की संख्या = 1 प्रति पंचायत अतिरिक्त कूड़ादान = एचआरवीसीए से या उचित स्थानों (पीआरआई भवन, सार्वजनिक भवन, पार्क, आदि) की पहचान करके अनुमानित करना।	
		चरण 3: a. रखरखाव कार्य b. साझेदारी को बढ़ाना	लागत ⁹⁷ : 1. 1 इलेक्ट्रिक कचरा वैन = ₹ 95,000 से 1,00,000 2. 1 कूड़ादान/कंटेनर ⁹⁸ = ₹ 15,000 3. प्लास्टिक श्रेडर यूनिट ⁹⁹ = ₹ 50,000 प्रति यूनिट	
2	जैविक अपशिष्ट का प्रबंधन	चरण 1: a. सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से कम्पोस्ट और वर्मी-कम्पोस्ट गड्डों की स्थापना b. पंचायत, समुदाय के सदस्यों और किसान समूहों के बीच साझेदारी मॉडल: 1. कम्पोस्ट का उत्पादन एवं विक्रय 2. कृषि अपशिष्ट की बिक्री	कुल उत्पन्न बायोडिग्रेडेबल/ जैविक कचरा = प्राथमिक डेटा घरों, वाणिज्यिक दुकानों, सरकारी/पीआरआई भवनों, सार्वजनिक भवनों और खुले स्थानों आदि से जैविक कचरा = xxx किलोग्राम प्रति दिन (प्राथमिक डेटा के अनुसार) संभावित खाद की मात्रा (किलो प्रति दिन) जो उत्पन्न ¹⁰⁰ की जा सकती है = xxx किग्रा/दिन जैविक अपशिष्ट / 2 प्रति वर्ष __ किलोग्राम कृषि अपशिष्ट की आवधिक खाद बनाना (प्राथमिक डेटा के अनुसार)	

97 लागत बाज़ार भाव के अनुसार

98 एसबीएम गाइडलाइन्स और एचआरवीसीए में इनपुट के अनुसार लागत

99 लागत बाज़ार भाव के अनुसार

100 <https://www.biocycle.net/connection-co2-math-for-compost-benefits/#:~:text=In%20the%20process%20of%20making%20compost%20>

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
		<p>चरण 2 और 3:</p> <p>a. रखरखाव और कम्पोस्ट गड्डों की क्षमता बढ़ाना</p> <p>b. साझेदारी को बढ़ाना</p>	<p>लागत¹⁰¹:</p> <p>1. कम्पोस्ट गड्डों की लागत संदर्भ: 30 वर्मीकम्पोस्टिंग और 15 नाडेप कम्पोस्ट गड्डे = ₹ 4,50,000</p> <p>2. ठोस अपशिष्ट प्रबंधन यार्ड (जैविक और अजैविक दोनों प्रकार के कचरे के लिए) लागत संदर्भ: ₹ 35,00,000</p>	
3	एकल-उपयोग-प्लास्टिक पर प्रतिबंध	<p>चरण 1:</p> <p>a. सिंगल यूज प्लास्टिक पर पूर्ण प्रतिबंध</p> <p>b. जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता-निर्माण कार्यक्रम</p> <p>c. रेस अभियान और लाइफ़ मिशन का लाभ उठाना</p> <p>d. पंचायत, महिलाओं और स्वयं सहायता समूहों के बीच साझेदारी मॉडल</p>	विनिर्माण के क्षेत्र में 100 महिलाओं की भागीदारी	
		<p>चरण 2:</p> <p>a. निरंतर जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम</p> <p>b. पंचायत और आस-पास के गांवों में महिलाओं, एसएचजी, एमएसएमई और व्यक्तिगत उद्यमियों की भागीदारी बढ़ाना</p>	अतिरिक्त 200 महिलाएं	
		<p>चरण 3:</p> <p>a. निरंतर जागरूकता, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम</p> <p>b. पंचायत और आसपास के गांवों में महिलाओं, एसएचजी, एमएसएमई और व्यक्तिगत उद्यमियों की भागीदारी बढ़ाना</p>	अतिरिक्त 300 महिलाएँ	

101 एचआरवीसीए में जीपी से प्राप्त इनपुट के अनुसार लागत

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
----------	----------------------	---	--	------------------------------------

स्वच्छ, सतत, किफ़ायती और विश्वसनीय ऊर्जा तक पहुँच

सोलर रूफटॉप स्थापना	<p>चरण 1: सरकारी/पीआरआई भवन (पंचायत भवन, स्कूल, आंगनवाड़ी, पीएचसी, सीएचसी, सीएससी आदि)</p> <p>अनुमान- छत के 70% क्षेत्र की सोलर रूफटॉप लगाने के लिए उपलब्धता</p>	<p>वार्षिक स्वच्छ बिजली का उत्पादन (किलोवाट में) = स्थापित क्षमता (किलोवाट) * 310 (धूप वाले दिन) * 24 (घंटे) * 0.18 (सीयूएफ) (प्रत्येक पीआरआई भवन के लिए इसकी गणना करें और कुल जोड़ें)</p> <p>स्थापित क्षमता- उपरोक्त वेबसाइट से</p> <p>कुल स्थापित क्षमता=पंचायत भवन+स्कूल 1+स्कूल 2....+कोई अन्य पीआरआई भवन</p> <p>प्रति किलोवाट लागत = ₹ 50,000</p> <p>प्रति दिन उत्पादित स्वच्छ बिजली की इकाइयों की संख्या = उत्पादित बिजली/365</p>	<p>उत्पन्न वार्षिक बिजली (किलोवाट)* 0.82/ 1000 = ___ टन CO₂</p>
	<p>चरण 2 और 3:</p> <p>परिवार अनुमान- छत के 70% क्षेत्र की सोलर रूफटॉप लगाने के लिए उपलब्धता मानी गई स्थापित क्षमता - 3 किलोवाट पॉवर</p> <p>चरण 2: स्थापित करने के लिए कुल पक्के घरों का 40%</p> <p>चरण 3: स्थापित करने के लिए कुल पक्के घरों का 100%</p>	<p>प्रति परिवार औसत स्थापित क्षमता = 3 किलोवाट पॉवर</p> <p>परिवार स्तर पर स्थापित कुल क्षमता = परिवारों की संख्या * 3 किलो वाट पॉवर</p> <p>वार्षिक स्वच्छ बिजली का उत्पादन (किलोवाट में)= पारिवारिक स्तर पर स्थापित कुल क्षमता (किलोवाट) *310 (धूप वाले दिन)*24 (घंटे)*0.18 (सीयूएफ)</p> <p>प्रति किलोवाट लागत¹⁰² = ₹ 50,000</p> <p>प्रति दिन उत्पादित स्वच्छ बिजली की इकाइयों की संख्या= वार्षिक उत्पादित बिजली/365</p>	

102 एमएनआरई और मौजूदा बाजार दरों के अनुसार लागत

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
2	एग्रो-फोटोवोल्टिक की स्थापना	चरण 2: उपयुक्त कृषि क्षेत्र का 25% चरण 3: उपयुक्त कृषि क्षेत्र का 50% उपयुक्त कृषि क्षेत्र – दलहनों और सब्जियों के अंतर्गत क्षेत्र (मूल्य 10 हेक्टेयर से कम रखें)	प्रति हेक्टेयर 250 किलोवाट स्थापित कुल स्थापित क्षमता = क्षेत्रफल (हेक्टेयर) * 250 किलोवाट पॉवर वार्षिक स्वच्छ बिजली का उत्पादन (किलोवाट में)=कुल स्थापित क्षमता (किलोवाट) *310 (धूप वाले दिन)*24 (घंटे)*0.18 (सीयूएफ) प्रति किलोवाट लागत ¹⁰³ = ₹ 1 लाख प्रति दिन उत्पादित स्वच्छ बिजली की इकाइयों की संख्या= वार्षिक उत्पादित बिजली/365	
3	सौर पंप	चरण 1: 20% डीजल पम्पों का बदला जाना चरण 2: 50% डीजल पम्पों का बदला जाना चरण 3: 100% डीजल पम्पों का बदला जाना	स्थापित क्षमता = 5.5 किलोवाट प्रति पंप कुल स्थापित क्षमता = बदले गए पंपों की संख्या * 5.5 किलोवाट वार्षिक स्वच्छ बिजली उत्पन्न= कुल स्थापित क्षमता (किलोवाट) *310 (दिन)*24 (घंटे)*0.18 (सीयूएफ) प्रति दिन उत्पादित स्वच्छ बिजली की इकाइयों की संख्या= वार्षिक उत्पादित बिजली/365 प्रति पंप लागत ¹⁰⁴ = ₹ 3 से 5 लाख	डीजल की खपत को कम करना =390 लीटर/ प्रति/वर्ष प्रति वर्ष कम कुल डीजल खपत = बदले गए पंपों की संख्या * 390 उत्सर्जन से बचाव = प्रति पंप प्रति वर्ष 1.05 टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन (tCO ₂ e)

103 स्थापना/लगाने की लागत बाजार दर के अनुसार

104 लागत बाजार दरों और पीएमकेएसवाई दिशानिर्देशों के अनुसार

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
4	रसोई में स्वच्छ ईंधन का उपयोग	<p>चरण 1: 25% घरों में बायोगैस स्थापित करने के लिए मवेशी + शीर्ष आय वर्ग में 25% घरों में सौर इंडक्शन कुकस्टोव + 50% परिवार जो वर्तमान में बायोमास का उपयोग करते हैं उनके पास बेहतर चूल्हों की उपलब्धता</p> <p>चरण 2: 50% घरों में बायोगैस स्थापित करने के लिए मवेशी + 50 शीर्ष आय वर्ग के % घरों में सौर इंडक्शन चूल्हे + वर्तमान में बायोमास का उपयोग करने वाले 100% घरों में बेहतर चूल्हों की उपलब्धता</p> <p>चरण 3: 100% घरों में बायोगैस स्थापित करने के लिए मवेशी + शीर्ष आय समूहों में 100% घरों में सौर इंडक्शन और खाना पकाने का चूल्हे की उपलब्धता</p>	<p>1 बायोगैस प्लांट की लागत = ₹ 50,000 2 से 3 m³ बायोगैस संयंत्र की लागत, बिना बैटरी वाले डबल बर्नर वाले सोलर कुकस्टोव की लागत = ₹ 45,000</p> <p>1 बेहतर चूल्हे की लागत = ₹ 3,000¹⁰⁵</p>	
5	ऊर्जा दक्षता (ईई)	<p>चरण 1: सभी सरकारी/पीआरआई भवनों को सभी फिक्स्चर और पंखों को ऊर्जा कुशल फिक्स्चर और पंखों से बदलना + सभी परिवारों के 1 तापदीप्त/सीएफएल बल्ब को एलईडी बल्ब से या 1 फ्लोरोसेंट ट्यूब लाइट को एलईडी ट्यूब लाइट से बदलना</p> <p>चरण 2: सभी तापदीप्त/सीएफएल बल्बों को एलईडी बल्ब से और सभी फ्लोरोसेंट ट्यूब लाइटों को एलईडी ट्यूब लाइट से बदला जाना + सभी परिवारों में 1 पारंपरिक पंखे को ईई पंखे से बदला जाना ।</p> <p>चरण 3: सभी परिवारों में सभी पंखों को ईई पंखों से बदला जाएगा</p>	<p>1 एलईडी बल्ब की लागत = ₹ 70</p> <p>1 एलईडी ट्यूबलाइट की लागत = ₹ 220</p> <p>1 ईई पंखे की लागत = ₹ 1,110¹⁰⁶</p>	

105 बाजार दर के अनुसार लागत

106 विद्युत मंत्रालय द्वारा उजाला योजना दिशानिर्देशों के अनुसार लागत (<https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specialdocs/documents/2022/jun/doc202261464801.pdf>)

क्र. सं.	सुझायी गई गतिविधियां	विभिन्न गतिविधियों के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु व्यापक दिशानिर्देश (ग्राम पंचायत के आधार पर परिवर्तन हो सकता है)	संख्यावार लक्ष्य का अनुमान लगाने के लिए टारगेट/ फार्मूला	अनुक्रमण क्षमता / उत्सर्जन से बचाव
6	सौर स्ट्रीटलाइट्स	प्रधान से प्राप्त जानकारी के आधार पर हाई-मास्ट सोलर स्ट्रीट लाइट - प्रत्येक सरकारी / पीआरआई भवन, तालाब/झील, हरित स्थान/पार्क/खेल का मैदान/उद्यान/ आरोग्य वन के लिए 1 (या आवश्यकता के अनुसार अधिक)।	1 हाई-मास्ट की लागत = ₹ 50,000 1 सौर एलईडी स्ट्रीट लाइट की लागत = ₹ 10,000 ¹⁰⁷	

आजीविका और हरित उद्यमशीलता को बढ़ाना

1	सौर ऊर्जा चालित कोल्ड स्टोरेज का निर्माण एवं किराये पर देना	कोल्ड स्टोरेज की स्थापना	क्षमता: 1 इकाई = 5 - 10 मीट्रिक टन सब्जियों और फलों/और/या दूध और दूध उत्पादों के उत्पादन पर आधारित लागत ¹⁰⁸ : ₹ 8-15 लाख प्रति यूनिट	
---	---	--------------------------	---	--

107 बाजार दर के अनुसार लागत

108 बाजार मानदंडों के अनुसार लागत

अनुलग्नक V: प्रासंगिक एसडीजी और लक्ष्य

एसडीजी 2: जीरो हंगर



लक्ष्य 2.3: भूमि, अन्य उत्पादक संसाधनों और इनपुट, ज्ञान, वित्तीय सेवाओं, मूल्यवर्धन और गैर-कृषि रोजगार के लिए बाजार और अवसर तक सुरक्षित और समान अभिगम सहित, छोटे पैमाने के खाद्य उत्पादकों, विशेष रूप से महिलाओं, स्वदेशी लोगों, पारिवारिक किसानों, चरवाहों और मछुआरों की कृषि उत्पादकता और आय को दोगुना करना।

लक्ष्य 2.4: वर्ष 2030 तक, सतत खाद्य उत्पादन प्रणाली सुनिश्चित करना तथा लचीली कृषि पद्धतियों को लागू करना जो उत्पादकता और उत्पादन को बढ़ाती हैं, जो पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में मदद करती हैं, जो जलवायु परिवर्तन, चरम मौसम, सूखा, बाढ़ और अन्य आपदाओं के अनुकूलन की क्षमता को सुदृढ़ करती हैं एवं जो भूमि और मिट्टी की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर सुधार करती हैं।

लक्ष्य 2.a; अनुच्छेद 10.3.e.: सतत सिंचाई कार्यक्रमों का विकास

एसडीजी 3: अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली



लक्ष्य 3.3: एड्स, तपेदिक, मलेरिया और उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोगों की महामारी को समाप्त करना तथा हेपेटाइटिस, जल-जनित रोगों और अन्य संचारी रोगों से मुकाबला करना।

लक्ष्य 3.9: खतरनाक रसायनों और वायु, जल और मिट्टी के प्रदूषण और संदूषण से होने वाली मौतों और बीमारियों की संख्या में काफी कमी लाना।

एसडीजी 6: स्वच्छ जल और स्वच्छता



लक्ष्य 6.1: पीने के पानी तक सार्वभौमिक और न्यायसंगत पहुंच प्राप्त करना।

लक्ष्य 6.3: वर्ष 2030 तक, प्रदूषण को कम करके, डंपिंग को समाप्त करके और खतरनाक रसायनों और सामग्रियों की रिहाई को कम करके, अनुपचारित अपशिष्ट जल के अनुपात को आधा करके और वैश्विक स्तर पर रीसाइक्लिंग और सुरक्षित पुनः इस्तेमाल को बढ़ाकर पानी की गुणवत्ता में सुधार करना।

लक्ष्य 6.4: सभी क्षेत्रों में जल-इस्तेमाल दक्षता में पर्याप्त वृद्धि करना और स्थायी निकासी सुनिश्चित करना

लक्ष्य 6.5: सभी स्तरों पर एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन लागू करना

लक्ष्य 6.8: स्थानीय समुदायों की भागीदारी को समर्थन और सुदृढ़ करना

लक्ष्य 6.a : अपशिष्ट जल उपचार, पुनर्चक्रण और पुनः इस्तेमाल प्रौद्योगिकियों सहित जल और स्वच्छता संबंधी गतिविधियों और कार्यक्रमों में विकासशील देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और क्षमता निर्माण सहायता का विस्तार करना।

एसडीजी 7: किफ़ायती एवं स्वच्छ ऊर्जा



लक्ष्य 7.1: किफ़ायती, विश्वसनीय और आधुनिक ऊर्जा सेवाओं तक सार्वभौमिक अभिगम सुनिश्चित करना।

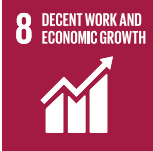
लक्ष्य 7.2: ऊर्जा मिश्रण में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाना

लक्ष्य 7.3: ऊर्जा दक्षता में सुधार की वैश्विक दर को दोगुना करना

लक्ष्य 7.a : नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और उन्नत और स्वच्छ जीवाश्म-ईंधन प्रौद्योगिकी सहित स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान और प्रौद्योगिकी तक अभिगम की सुविधा के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाना, और ऊर्जा अवसंरचना और स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी में निवेश को बढ़ावा देना।

लक्ष्य 7.b: विकासशील देशों में उनके समर्थन कार्यक्रमों के अनुसार सभी के लिए आधुनिक और सतत ऊर्जा सेवाओं की आपूर्ति के लिए अवसंरचना का विस्तार और प्रौद्योगिकी का उन्नयन।

एसडीजी 8: अच्छा कार्य और आर्थिक विकास



लक्ष्य 8.3: विकास-उन्मुख नीतियों को बढ़ावा देना जो उत्पादक गतिविधियों, सही रोजगार सृजन, उद्यमिता, रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देती हैं, और वित्तीय सेवाओं तक अभिगम सहित सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यमों की औपचारिकता और विकास को प्रोत्साहित करती हैं।

एसडीजी 9: उद्योग, नवाचार और अवसंरचना



लक्ष्य 9.1: गुणवत्तापूर्ण, विश्वसनीय, टिकाऊ और लचीला बुनियादी ढाँचा विकसित करना

एसडीजी 11: संधारणीय शहर और समुदाय



लक्ष्य 11.2: सभी के लिए सुरक्षित, किफ़ायती, सुलभ और सतत परिवहन प्रणाली

लक्ष्य 11.4: विश्व की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की रक्षा और सुरक्षा के प्रयासों को सुदृढ़ करना

लक्ष्य 11.7: वर्ष 2030 तक, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों, वृद्ध व्यक्तियों और विकलांग व्यक्तियों के लिए सुरक्षित, समावेशी और सुलभ, हरे और सार्वजनिक स्थानों तक सार्वभौमिक अभिगम प्रदान करना।

एसडीजी 12: सतत खपत और उत्पादन पैटर्न सुनिश्चित करना



लक्ष्य 12.2: प्राकृतिक संसाधनों का सतत प्रबंधन और कुशल इस्तेमाल प्राप्त करना

लक्ष्य 12.4: वर्ष 2020 तक, सहमत अंतरराष्ट्रीय ढाँचे के अनुसार रसायनों और उनके पूरे जीवन चक्र में सभी अपशिष्टों का पर्यावरणीय रूप से सुदृढ़ प्रबंधन प्राप्त करना, और मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर उनके प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए हवा, पानी और मिट्टी में उनकी रिहाई को काफी कम करना।

लक्ष्य 12.5: वर्ष 2030 तक रोकथाम, कमी, पुनर्चक्रण और पुनः इस्तेमाल के माध्यम से अपशिष्ट उत्पादन को काफी हद तक कम करना।

लक्ष्य 12.5: वर्ष 2030 तक रोकथाम, कमी, पुनर्चक्रण और पुनः इस्तेमाल के माध्यम से अपशिष्ट उत्पादन को काफी हद तक कम करना।

लक्ष्य 12.8: वर्ष 2030 तक, सुनिश्चित करें कि हर जगह लोगों के पास सतत विकास और प्रकृति के साथ सद्भाव में जीवन शैली के लिए प्रासंगिक जानकारी और जागरूकता हो।

एसडीजी 13: जलवायु संबंधी कार्यवाही



लक्ष्य 13.1: सभी देशों में जलवायु संबंधी खतरों और प्राकृतिक आपदाओं के प्रति लचीलापन और अनुकूली क्षमता को सुदृढ़ करना।

लक्ष्य 13.2: जलवायु परिवर्तन उपायों को राष्ट्रीय नीतियों, रणनीतियों और योजना में एकीकृत करना।

लक्ष्य 13.3: जलवायु परिवर्तन शमन, अनुकूलन, प्रभाव में कमी और प्रारंभिक चेतावनी पर शिक्षा, जागरूकता बढ़ाने और मानव और संस्थागत क्षमता में सुधार करना।

एसडीजी 15: भूमि पर जीवन



लक्ष्य 15.1: अंतरराष्ट्रीय समझौतों के अंतर्गत दायित्वों के अनुरूप स्थलीय और अंतर्देशीय मीठे पानी के पारिस्थितिकी तंत्र और उनकी सेवाओं, विशेष रूप से जंगलों, आर्द्रभूमि, पहाड़ों और शुष्क भूमि के संरक्षण, बहाली और सतत इस्तेमाल को सुनिश्चित करना।

लक्ष्य 15.2: वर्ष 2020 तक सभी प्रकार के वनों के स्थायी प्रबंधन के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना, वनों की कटाई को रोकना, नष्ट हुए वनों को पुनर्स्थापित करना और विश्व स्तर पर वनीकरण और पुनर्वनीकरण में पर्याप्त वृद्धि करना।

लक्ष्य 15.3: वर्ष 2030 तक, मरुस्थलीकरण से निपटना, मरुस्थलीकरण, सूखे और बाढ़ से प्रभावित भूमि सहित खराब भूमि और मिट्टी को बहाल करना, और भूमि क्षरण-तटस्थ दुनिया को प्राप्त करने का प्रयास करना। लक्ष्य 15.5: प्राकृतिक आवासों के क्षरण को कम करने, जैव विविधता के नुकसान को रोकने के लिए तत्काल और महत्वपूर्ण कार्यवाही करना।

लक्ष्य 15.9: वर्ष 2020 तक, पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता मूल्यों को राष्ट्रीय और स्थानीय योजना, विकास प्रक्रियाओं, गरीबी उन्मूलन रणनीतियों में एकीकृत करना।

अनुलग्नक VI: वृक्षारोपण गतिविधियों के लिए उपयुक्त प्रजातियाँ

पौधों का नाम	प्रजाति (फैमिली)	स्थानीय नाम	उपयोग/औषधीय गुण
इमारती लकड़ी के पेड़			
अकेसिया निलोटिका	फैबेसी	बबूल	गाड़ियों के फ्रेम और पहियों, उपकरणों और औजारों जैसे उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता है।
फ़िक्स रिलिजियोसा	मोरेसी	पीपल	इसमें औषधीय गुण और इसका धार्मिक महत्व है।
आज़ादिराक्टा इंडिका ए. जस	मेलियासी	नीम	नीम के पेड़ के सभी भाग - पत्ते, फूल, बीज, फल, जड़ और छाल का उपयोग पारंपरिक रूप से उपचार के लिए किया जाता रहा है। इसकी लकड़ी फर्नीचर के लिए आदर्श है, क्योंकि यह मजबूत और दीमक प्रतिरोधी दोनों है।
डालबर्गिया सिस्सो	फैबेसी	शीशम	इसके कई उपयोग हैं, हवाई और समुद्री जहाज में, कोयले के रूप में भोजन को गर्म करने और पकाने के लिए, संगीत वाद्ययंत्र बनाने आदि
मधुका लॉगिफोलिया	सैपोटेसी	महुआ	यह विभिन्न उपयोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण इमारती लकड़ी प्रदान करता है।
शोरिया रोबस्टा	डिप्रोकार्पेसी	साल	इसका उपयोग रेलवे स्लीपर, जहाज और पुलों के निर्माण के लिए किया जाता है।
सिनामोमम तमाला	लौरैसी	भारतीय तेज पत्ता	यह विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है और खाना पकाने में इसका उपयोग किया जाता है।
फल और जंगली खाद्य पौधे			
मैंगीफेरा इंडिका	एनाकार्डिएसी	आम (मैंगो)	इसके सभी भागों का उपयोग पारंपरिक उपचार में किया जाता है
आर्टोकार्पस हेटरोफिलस	मोरेसी	कटहल , (जैकफ्रूट)	इसकी लकड़ी का उपयोग फर्नीचर बनाने के लिए किया जाता है। पौधे के कई हिस्से, जिनमें छाल, जड़ें, पत्तियां और फल शामिल हैं, पारंपरिक और लोक चिकित्सा में अपने औषधीय गुणों के लिए जाने जाते हैं।
सिडियम गुजावा	मायर्टेसी	अमरूद (गुआवा)	यह विभिन्न गैस सम्बन्धी रोगों के लिए एक सामान्य और लोकप्रिय पारंपरिक उपचार है।

पौधों का नाम	प्रजाति (फैमिली)	स्थानीय नाम	उपयोग/औषधीय गुण
एगारिकस कैम्पेस्ट्रीस एल	एगारिकेसी	धरती का फूल	एक प्रकार का मशरूम।
अंकोलसाल्विफोलियम (एलएफ) वांग	अलंगियासी	ढेरा (एको)	इसके पके फल खाए जाते हैं।
अमोर्फोफैलस पेओनीफोलियसडेनस्ट	अरेसी	हाथीपाँव, जिमी कंद	इसे सब्जी के रूप में खाया जाता है।
क्रोटोलारियाजंशिया एल.	फैबेसी	सनई	हल्की उबली हुई कलियाँ सब्जी के रूप में खाई जाती हैं।
मणिलकारा हेक्सेंड्रा (रोक्सब) डब	सैपोएटेसी	खिरनी	इससे प्राप्त फलों से अचार और सॉस बनाया जाता है।
यूजेनिया जाम्बोलाना	मायर्टेसी	जामुन	इसकी जड़, पत्तियाँ, फल और छाल में असंख्य औषधीय गुण होते हैं।
एगल मार्मेलोस	रूटेसी	बेल	कच्चे फल, जड़, पत्ती और शाखा का उपयोग औषधि बनाने के लिए किया जाता है।
मोरस रूबरा	मोरेसी	शहतूत	शहतूत को कच्चा खाया जा सकता है और इसका उपयोग जैम, प्रिजर्व, पाई बनाने के लिए भी किया जाता है। इनमें औषधीय गुण भी होते हैं।

औषधीय गुणों वाले पेड़

विथानियासोमिफेरा	सोलानेसी	अश्वगंधा	यह विभिन्न प्रकार के रोगों में उपयोगी है।
बकोपा मोनिएरी	प्लांटैगिनेसी	ब्राह्मी	इसका उपयोग विभिन्न सांस रोगों को ठीक करने के लिए किया जाता है।
एंद्रोग्राफीस पैनिकुलता	एकैथेसी	कालमेघ	यह प्रतिरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है और इसका उपयोग सामान्य सर्दी, साइनसाइटिस और एलर्जी के लक्षणों को ठीक करने के लिए किया जाता है।
राउवोल्फिया सर्पेन्टिना	एपोसिनेसी	सर्पगंधा	इसका उपयोग कई अलग-अलग बीमारियों के उपचार के लिए किया जाता है।

पौधों का नाम	प्रजाति (फैमिली)	स्थानीय नाम	उपयोग/औषधीय गुण
औषधीय गुणों वाले लुप्तप्राय पेड़			
एकोरस कैलमस एल.	अरेसी	बाख, बाल, घोर्बच	ब्रोंकाइटिस, खांसी और सर्दी के इलाज के लिए एक उपयोगी जातीय औषधीय पौधा।
ऐस्पैरैगस ऐडसेंटेसरोक्सबी	लिलिएसी	शतावरी	हार्मोन असंतुलन से संबंधित स्थितियों के उपचार में मदद करता है।
सेलास्ट्रस पैनिकुलैटस वाइल्ड ।	सेलास्ट्रेसी	उमजैन , मुजहानी , मलकांगनी, ककुंदन	विभिन्न प्रकार की बीमारियों के उपचार में उपयोगी है।
अन्य पेड़			
पोपुलस सिलियाटा	सैलिकैसी	सेमल, कपोक	इसकी पत्तियों का उपयोग पशुओं के चारे और हर्बल चाय के लिए किया जाता है।
यूकेलिप्टस ग्लोब्युलस	मायर्टेसी	तैलपत्र	खांसी और सामान्य सर्दी के उपचार के लिए दवाओं में उपयोग किया जाता है और आवश्यक तेल बनाने के लिए भी उपयोग किया जाता है।

कलाइमेट स्मार्ट ग्राम पंचायत कार्ययोजना

उदयपुरा ग्राम पंचायत

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
उत्तर प्रदेश सरकार